A Daily News Magazine

भोपाल

शुक्रवार, 01 मई, 2026

सुबह सवेरे

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 23, अंक 238, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

subahsaverenews@gmail.com

facebook.com/subahsaverenews

www.subahsavere.news

twitter.com/subahsaverenews

प्रसंगवश

केजरीवाल उसी राजनीति की कीमत चुका रहे, जो उन्होंने गढ़ी थी

वीर सांघवी

राजनीति में बहुत कम सवालों के जवाब सिर्फ 'हां' या 'ना' में होते हैं। अगर आप मुझसे पूछें, 'क्या आपको लगता है कि अरविंद केजरीवाल के साथ जो हुआ, वह होना ही था?' तो मैं 'हां' कहना चाहूंगा, लेकिन साथ ही यह भी जोड़ूंगा कि मुझे AAP की मौजूदा हालत देखकर दुख है, इसलिए मैं इसका मजाक नहीं उड़ा रहा हूं।

या अगर आप पूछें, 'क्या आपको लगता है कि AAP में जो हो रहा है, वह राष्ट्रीय त्रासदी है?' तो मैं भी 'हां' कहना चाहूंगा। लेकिन मैं थोड़ा हिचकूंगा, क्योंकि मुझे लगता है कि हाल की घटनाएं शायद AAP के डीएनए को देखते हुए टलने वाली नहीं थीं।

तो मेरी भावनाएं (और शायद कई और लोगों की भी) जटिल हैं। यह समझना मुश्किल नहीं है कि मुझे AAP के इस संकट से दुख क्यों है। भारत को एक मजबूत विपक्ष की जरूरत है, और जब भी कोई विपक्षी पार्टी गिरने के कगार पर होती है, असली नुकसान भारतीय लोकतंत्र को होता है।

हम ऐसे समय में रह रहे हैं, जहां राजनीति पैसे की हो गई है, फर्जी मामलों पर मुकदमेबाजी की हो गई है, श्रष्ठ की छापेमारी और योजनाबद्ध तरीके से पार्टी तोड़ने की राजनीति हो रही है। जब भी ये तरीके सफल होते हैं–जैसा कि यहां साफ तौर पर हुआ है–हम लोकतंत्र से और दूर होते जाते हैं। इसलिए पिछले हफ्ते की घटनाओं पर दुख करने की बहुत वजह है।

किसी हद तक, जो कुछ हुआ है, उसमें कोई आश्चर्य नहीं होना चाहिए। AAP की उत्पत्ति और उसके रिकॉर्ड को देखते हुए, यह सब सामान्य ही है। AAP की शुरुआत 'इंडिया अगेंस्ट करप्शन' आंदोलन के रूप में हुई थी, जो अन्ना हजारे के नेतृत्व में एक आंदोलन था, जिसमें केजरीवाल और कई अन्य उनके सहयोगी थे। यह भ्रष्टाचार के खिलाफ अभियान चलाने का सही समय था। CAG ने प्रेस कॉन्फ्रेंस करके बताया था कि उसकी संस्था को भ्रष्टाचार के सबूत मिले हैं। अब हमें पता है कि इनमें से कुछ बातें बकवास थीं। जिस तरह CAG का प्रेस ब्रीफिंग करना असामान्य था, वैसे ही कथित भ्रष्टाचार की गणना के तरीके भी असाधारण थे।

'प्रिजम्पटिव लॉस' जैसी अजीब अवधारणाएं सामने लाई गईं, और मीडिया ने, अपनी हमेशा की शर्मिंदगी के साथ, इन गणनाओं पर सवाल नहीं उठाया और यह भी नहीं पूछा कि CAG क्यों सार्वजनिक होकर सेलिब्रिटी बन गया। (क्या आप वर्तमान CAG या विनोद राय के किसी उत्तराधिकारी का नाम बता सकते हैं?)

अगर बीजेपी ने इन आरोपों का फायदा उठाने की कोशिश की होती, तो लोगों को शक होता। लेकिन क्योंकि भ्रष्टाचार विरोधी अभियान हजारे और केजरीवाल जैसे गैर-राजनीतिक लोगों के नेतृत्व में था, इसलिए इसे एक अलग तरह की विश्वसनीयता मिल गई। आंदोलन के सभी नेताओं ने यह भी कहा था कि वे राजनीति में नहीं आना चाहते।

'इंडिया अगेंस्ट करप्शन' ने दिल्ली के बाहर ज्यादातर शहरों में बड़ी भीड़ नहीं जुटाई थी। यह सिर्फ दिल्ली का एक आंदोलन था, जिसका महत्व नोएडा के चैनलों ने इतना बढ़ा-चढ़ाकर दिखाया कि उसने जन धारणा को प्रभावित किया। उस समय यह आरोप भी लगाया गया था कि भीड़ RSS और कई सैफ्रॉन नेताओं द्वारा लाई गई थी (जिनमें साध्वी ऋतंभरा भी शामिल थीं, जो अयोध्या आंदोलन और बाद में बाबरी मस्जिद ढहाए जाने के दौरान मशहूर हुई थीं) जिन्होंने हजारे और उनके आंदोलन का समर्थन किया।

लेकिन असल में यह हजारे का आंदोलन कभी था ही नहीं। यह हमेशा केजरीवाल का शो था, और उन्होंने अपने साथियों को एक-एक करके किनारे कर दिया। इसमें अन्ना हजारे भी शामिल थे, लेकिन जल्द ही सभी प्रमुख लोग बाहर हो गए: किरण बेदी, योगेंद्र यादव, प्रशांत भूषण, कुमार विश्वास, शाजिया इल्मी आदि। इनमें से कुछ लोग बाद में बीजेपी का समर्थन करने लगे।

एक, भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन की हाइप ने मनमोहन सिंह सरकार को कमजोर कर दिया। दो, इसने नरेंद्र मोदी के लिए रास्ता खोल दिया। और तीन, हमें समझ में आया कि इसका उद्देश्य हमेशा से केजरीवाल के नेतृत्व वाली एक राजनीतिक पार्टी बनाना था।

इस पृष्ठभूमि को देखते हुए, क्या हमें AAP से बहुत उम्मीद करनी चाहिए थी। क्या शीला दीक्षित और कई अन्य नेताओं के बारे में उसने जो झूठ बोले, उन्हें देखते हुए हमें कभी उम्मीद करनी चाहिए थी कि AAP सिर्फ केजरीवाल की अपनी तरक्की के अलावा किसी और चीज के लिए खड़ी होगी।

लेकिन जैसा हुआ, AAP ने सत्ता में उतना अच्छा काम किया जितनी हम उम्मीद नहीं कर सकते थे। उसने दिल्ली के गरीब इलाकों में अच्छा काम किया, और शिक्षा और सार्वजनिक स्वास्थ्य में उसका रिकॉर्ड अच्छा था। लेकिन यह स्वाभाविक था कि यह ज्यादा समय तक नहीं टिकेगा। जब कोई पार्टी सिर्फ एक आदमी की महत्वाकांक्षा पर आधारित हो, तो कुछ समय के लिए सफलता मिल सकती है (जैसे AAP ने पंजाब में सरकार बनाई), लेकिन उसके अंदर का खोखलापन उसे राष्ट्रीय स्तर पर मजबूत बनने नहीं देगा।

और जो लोग केजरीवाल के साथ जुड़ गए थे और उनके पुराने साथियों द्वारा लगाए गए आरोपों के खिलाफ उनका बचाव कर रहे थे, उनमें इतनी समझ नहीं थी कि वे समझ सकें कि एक दिन वह उन्हें भी वैसे ही छोड़ देगा, जैसे उसने अपने शुरुआती साथियों को छोड़ा था।

यह बात बताती है कि केजरीवाल के साथ शुरू करने वाले लगभग किसी भी व्यक्ति के पास अब उनके बारे में कुछ अच्छा कहने को नहीं है। और भले ही दिल्ली में क्की शासन व्यवस्था की गुणवत्ता पर अलग-अलग राय हो (हालांकि पंजाब में नहीं, जहां AAP सरकार एक असफलता रही है), लेकिन अब कोई भी AAP को उस तरह के मूल्यों का प्रतीक नहीं मानता जैसा केजरीवाल ने इंडिया अगेंस्ट करप्शन के दिनों में दिखाया था।

और फिर भी, मुझे केजरीवाल के लिए कुछ सहानुभूति है। न तो वे और न ही उनके AAP सहयोगी तथाकथित शराब घोटाले के मामले में जेल जाने के लायक थे, जिसे अदालत ने भी बिना आधार का माना है। मुझे यह भी लगता है कि जिस तरह पूरी सत्ताधारी व्यवस्था ने उन्हें परेशान करने की कोशिश की, वह चौंकाने वाली और शर्मनाक है।

लेकिन अंत में हमें अपने आप से बड़ा सवाल पूछना होगा। हां, मोदी सरकार जो केजरीवाल के साथ कर रही है वह गलत है। लेकिन क्या कभी मोदी सरकार बनती अगर केजरीवाल और उनके इंडिया अगेंस्ट करप्शन आंदोलन ने PA को खत्म नहीं किया होता और नरेंद्र मोदी के लिए रास्ता नहीं खोला होता। कर्म का फल एक दिन हमें पकड़ लेता है।

(दि प्रिंट हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

अब आतंकी हमले को बर्दाश्त नहीं करेगा भारत

● राजनाथ बोले-ऑपरेशन सिंदूर अपनी मर्जी से रोका, न्यूक्लियर हमले से नहीं डरे

रक्षामंत्री ने कहा- भारत आईटी का हब जबकि पाकिस्तान इंटरनेशनल टेररिज्म का

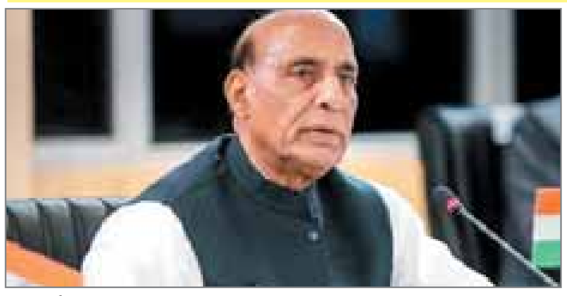

नई दिल्ली (एजेंसी)। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने गुरुवार को कहा कि भारत ने ऑपरेशन सिंदूर को अपनी मर्जी और अपनी शर्तों पर रोका था। उन्होंने यह भी कहा कि अगर जरूरत पड़ी तो देश पाकिस्तान के खिलाफ लंबी लड़ाई के लिए पूरी तरह तैयार है। राजनाथ सिंह ने कहा कि पाकिस्तान की तरफ से परमाणु हमले की धमकी दी गई थी, लेकिन भारत इससे नहीं डरा। उन्होंने कहा कि भारतीय सेना की सर्ज कैपेसिटी (अचानक ताकत बढ़ाने की क्षमता) पहले से ज्यादा मजबूत है। राजनाथ ने कहा- भारत आज इन्फॉर्मेशन टेक्नोलॉजी के लिए जाना जाता है जबकि पाकिस्तान को आईटी यानी इंटरनेशनल टेररिज्म का केंद्र माना जाता है।

राजनाथ बोले- आतंकवाद की जड़ उसकी विचारधारा

सिंह ने कहा कि ऑपरेशन सिंदूर एक टर्निंग पॉइंट था, जिसने दुनिया को दिखाया कि भारत अब सिर्फ बयान देने वाला देश नहीं है, बल्कि सीधे कार्रवाई करता है। रक्षा मंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री के नेतृत्व में सरकार की नीति साफ है। देश में किसी भी आतंकी हमले को बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। जरूरत पड़ने पर सख्त और सीधी कार्रवाई की जाएगी। आतंकवाद की जड़ उसकी विचारधारा और राजनीतिक समर्थन में होती है। इसे खत्म किए बिना आतंकवाद पूरी तरह खत्म नहीं किया जा सकता। रक्षा मंत्री ने बताया कि पिछले साल पहलगाम में हुए आतंकी हमले के जवाब में भारत ने ऑपरेशन सिंदूर चलाया था। ऑपरेशन 7 मई 2025 को शुरू हुआ था। भारतीय सेना ने पाकिस्तान और पीओके में आतंकी ठिकानों को निशाना बनाया था। पाकिस्तान में 9 बड़े लॉन्चपैड नष्ट किए गए थे और 100 से ज्यादा आतंकियों को मार गिराया गया।

तूफान के चलते नर्मदा के बरगी डैम में हादसा

क्रूज डूबा, 6 शव मिले

10 से ज्यादा लापता, 15 को बचाया

जबलपुर (नप्र)। मध्यप्रदेश के जबलपुर में नर्मदा नदी पर बने बरगी डैम में गुरुवार शाम पर्यटकों से भरा क्रूज डूब गया। पुलिस के मुताबिक, 6 शव बरामद किए गए हैं। 18 को सुरक्षित बचा लिया गया। 10 से ज्यादा अब भी लापता हैं।

बरगी सिटी एसपी अंजुल मिश्रा ने बताया कि एमपी टूरिज्म के क्रूज में 29 लोग सवार थे। अचानक आई आंधी के कारण ये हादसा हुआ।हादसे की सूचना मिलते ही एसडीआरएफ की टीम रेस्क्यू ऑपरेशन के लिए पहुंची। अंधेरा होने की वजह से रेस्क्यू ऑपरेशन में परेशानी आ रही है। हालांकि बड़ी टॉर्च का इस्तेमाल करके लोगों की तलाश की जा रही है।

क्रूज में 29 लोग सवार थे।

क्रूज में 29 लोग सवार थे। बताया जा रहा है कि 15 लोग किसी तरह तैरकर बाहर निकले।

बताया जा रहा है कि क्रूज में सवार ज्यादातर लोगों ने लाइफ जैकेट नहीं पहनी थी। जानकारी के मुताबिक ऑर्डनेंस फैक्ट्री खमरिया का एक पूरा परिवार क्रूज में सवार था।

सीएम ने कहा- सरकार हर प्रभावित परिवारों के साथ

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि जबलपुर में तेज आंधी-तूफान के कारण हुए बरगी डैम क्रूज हादसे के बाद प्रशासन और रेस्क्यू टीम लगातार अभियान चला रही है। 15 लोगों को सुरक्षित निकाल लिया गया है, जबकि लापता लोगों की तलाश जारी है। सीएम ने लोक निर्माण मंत्री राकेश सिंह, पर्यटन मंत्री धर्मेंद्र सिंह लोधी समेत वरिष्ठ अधिकारियों को मौके पर पहुंचने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने कहा कि सरकार प्रभावित परिवारों के साथ खड़ी है और हर संभव मदद दी जा रही है।

शरद की सुबह

कुहरे से ढँकी सड़क पर बच्चे काम पर जा रहे हैं
सुबह-सुबह

बच्चे काम पर जा रहे हैं
हमारे समय की सबसे भयानक पंक्ति है यह

भयानक है इसे विवरण की तरह लिखा जाना
लिखा जाना चाहिए इसे सवाल की तरह

काम पर क्यों जा रहे हैं बच्चे?
क्या अंतरिक्ष में गिर गई हैं सारी गेंदें

क्या दीमकों ने खा लिया है
सारी रंग-बिरंगी किताबों को

क्या काले पहाड़ के नीचे दब गए हैं सारे खिलौने
क्या किसी भूकंप में ढह गई हैं

सारे मदरसों की इमारतें
क्या सारे मैदान, सारे बग़ीचे और घरों के आँगन

ख़त्म हो गए हैं एकाएक
तो फिर बचा ही क्या है इस दुनिया में?

कितना भयानक होता अगर ऐसा होता
भयानक है लेकिन इससे भी ज़्यादा यह
कि हैं सारी चीज़ें हस्बमामूल
पर दुनिया की हज़ारों सड़कों से गुज़रते हुए
बच्चे, बहुत छोटे छोटे बच्चे
काम पर जा रहे हैं।

- राजेश जोशी

रेप विक्टिम के अबॉर्शन पर टाइम लिमिट हटाएं

● सुप्रीम कोर्ट ने केंद्र से कहा-अपने कानून में बदलाव करें

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने 15 साल की रेप विक्टिम को 30 हफ्ते की प्रेग्नेंसी में अबॉर्शन के फैसले को चुनौती देने वाली याचिका पर सुनवाई से इनकार कर दिया। चीफ जस्टिस सूर्यकांत और जस्टिस जॉयमाल्य बागची की बेंच ने केंद्र से कहा कि ऐसे मामलों में अबॉर्शन के लिए टाइम लिमिट से जुड़े कानून में बदलाव करना चाहिए। सीजेआई ने कहा, 'कानून ऐसा होना चाहिए, जो समय के साथ बदलता रहे और मौजूदा हालात के अनुसार चले। नाबालिग को जबरन मां बनने के लिए मजबूर नहीं किया जा सकता। ऐसे मामलों में फैसला पीड़ित का ही होना चाहिए।' सुप्रीम कोर्ट ने 24 अप्रैल को करीब सात महीने प्रेग्नेंट 15 साल की लड़की को अबॉर्शन की इजाजत दी थी। इसके खिलाफ एम्स ने याचिका लगाई थी।

बारात में डीजे की तेज आवाज से मर गईं 140 मुर्गियां

● यूपी के सुल्तानपुर में चौंकाने वाली घटना, एफआईआर दर्ज

लखनऊ (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश के सुलतानपुर जिले से चौंकाने वाली घटना सामने आई है, यहां बारात में बज रहे तेज डीजे की वजह से पास स्थित एक पोल्ट्री फार्म में 140 मुर्गियों की मौत हो गई। एक पोल्ट्री फॉर्म मालिक ने शादी समारोह में डीजे के तेज शोर से अपनी 140 मुर्गियों की मौत होने का दावा करते हुए इस संबंध में मुकदम दर्ज कराया है। पुलिस ने डीजे संचालक के खिलाफ केस दर्ज करने के बाद अब पूरे मामले की जांच शुरू कर दी है। पुलिस सूत्रों ने दर्ज रिपोर्ट के हवाले से बुधवार को बताया कि बल्दीराय थाना क्षेत्र के दरियापुर गांव निवासी पोल्ट्री फार्म संचालक साबिर ने आरोप लगाया है कि 25 अप्रैल की रात बब्बन विश्वकर्मा की बेटी की बारात जब उसके फार्म के पास से गुजरी, तो उसमें बज रहे डीजे की अत्यधिक तेज आवाज के कारण फार्म में पाली जा रही 140 मुर्गियों की मौत हो गई। साबिर का आरोप है कि डीजे का शोर इतना अधिक था कि मुर्गियां दहशत में आ गईं, जिससे उनकी जान चली गई। आरोप है कि डीजे की तेज आवाज को कम करने के लिए कहा गया पर किसी ने सुनी। झगड़ा करने को अमादा हो गए। बारात में कुछ लोग नशे में थे। सूत्रों के अनुसार, पुलिस ने साबिर की तहरीर पर डीजे संचालक कवि यादव के खिलाफ मंगलवार रात मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

ध्वनि मानकों से अधिक शोर कर रहा था डीजे, जांच शुरू-बल्दीराय थाना प्रभारी महेंद्र प्रताप सिंह ने बताया कि यह जांच की जा रही है कि क्या डीजे निर्धारित ध्वनि मानकों से अधिक शोर कर रहा था। विशेषज्ञों का कहना है कि अत्यधिक तेज ध्वनि तरंगों से पक्षियों और जानवरों में घबराहट या हृदयाघात की स्थिति उत्पन्न हो सकती है, जो इस मामले में मुर्गियों की मौत का संभावित कारण हो सकता है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने गेहूँ उपार्जन केन्द्र का किया आकस्मिक निरीक्षण

खरगोन जिले के कतरगांव गेहूँ उपार्जन केंद्र पर अचानक पहुंचे सीएम

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने गुरूवार को खरगोन जिले में मंडलेश्वर तहसील के कतरगांव गेहूँ उपार्जन केंद्र का औचक निरीक्षण किया। उन्होंने उपार्जन की व्यवस्थाओं का जायजा लिया।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कलेक्टर और मंडी सचिव को निर्देशित किया कि गेहूँ उपार्जन से संबधित सभी निर्देशों का कड़ाई से पालन करें। अन्नदाताओं को किसी भी प्रकार की समस्या नहीं होनी चाहिए।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि वे निरंतर आकस्मिक दौरा कर व्यवस्थाओं का जायजा लेंगे। मुख्यमंत्री ने कृषक श्री सुरेश पाटीदार की 55 क्विंटल गेहूँ की खरीदी के बाद ई-उपार्जन पोर्टल पर श्री पाटीदार को प्राप्ति ऑनलाइन जनरेट करवाई और कषक को भुगतान राशि 1 लाख 44 हजार 374 रूपये का प्राप्ति पत्र सौंपा। गेहूं खरीदी के आज से नए मापदंड जारी हुए है वह लागू हो जाएं

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बुधवार महेश्वर में रात्रि विश्राम के बाद आज खरगोन जिले में कतरगांव के उपार्जन केंद्र के निरीक्षण के दौरान कलेक्टर और मंडी सचिव को निर्देशित किया कि उपार्जन/खरीदी केंद्रों पर पूरे 6 तौल कांटे लगाए जाएं। सभी 6 तौल कांटों पर निरंतर तुलाई कार्य चलता रहे।

किसानों से संवाद कर उनके साथ चाय पी

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने केन्द्र पर किसान व पशुपालक श्री भागीरथ मालवीय तथा अन्य किसानों से संवाद भी किया। किसानों तथा पशुपालकों से चर्चा कर उनके साथ चाय पी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने यहाँ स्लॉट बुकिंग और उपार्जन की अन्य व्यवस्थायें और किसानों को ओटीपी के माध्यम से किये जा रहे भुगतान की जानकारी प्राप्त की। किसानों से फीडबैक भी लिया। उन्होंने कहा कि प्रत्येक अन्नदाता को सम्मान, सुविधा एवं उपज का उचित मूल्य दिलाना राज्य सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने उनसे खेती-किसानी सम्बंधी चर्चा कर पशुपालन व डेयरी विकास के साथ ही परिजन के बारे में भी जानकारी ली। इस दौरान विधायक श्री राजकुमार मेव सहित अन्य जनप्रतिनिधि एवं अधिकारी उपस्थित थे।

सीएम का दिखा जुदा अंदाज, ट्रॉली पर चढ़कर करने लगे किसानों से बात

सीएम मोहन यादव घोषणा के बाद लगातार गेहूं उपार्जन केंद्रों का निरीक्षण कर रहे हैं। खरगोन के बाद वह शाजापुर के एक उपार्जन केंद्र पर पहुंच गए। यहां उनका अलग अंदाज देखने को मिला है। वह ट्रैक्टर ट्रॉली पर चढ़कर किसानों से संवाद करने लगे। साथ ही गेहूं का वजन भी तुलवाकर देखा है। सीएम मोहन यादव शाजापुर जिले के मकोड़ी स्थित श्यामा वेयर हाउस पहुंचे। उन्होंने यहां बाकायदा ट्रॉली पर चढ़कर किसानों से चर्चा की। इस दौरान उन्होंने गेहूं का वजन भी तुलवाकर देखा। उनके इस अंदाज की तस्वीर सोशल मीडिया पर वायरल हो रही है।

भोपाल का तापमान
अधिकतम 20 °c
न्यूनतम 18°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ शुक्रवार, 01 मई 2026

जो अग्नि हमें गर्मी देती है, हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।
चाणक्य नीति

होर्मुज संकट के बीच भारत को राहत के संकेत !

● जयशंकर-अराघची की 'लगातार संपर्क' वाली बातचीत से बढ़ी उम्मीदें

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत और ईरान के बीच कूटनीतिक संपर्क ऐसे समय में तेज हुआ है जब मिडिल ईस्ट में तनाव और होर्मुज स्टेट को लेकर वैश्विक चिंता बढ़ रही है। बुधवार शाम को ईरान के विदेश मंत्री सैयद अब्बास अराघची और भारत के विदेश मंत्री एस जयशंकर के बीच फोन पर बातचीत हुई, जिसमें मौजूदा हालात के विभिन्न पहलुओं पर विस्तार से चर्चा की गई। दोनों नेताओं ने आगे भी लगातार संपर्क में रहने पर सहमति जताई। विदेश मंत्री एस जयशंकर ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर जानकारी साझा करते हुए लिखा, ईरान के विदेश मंत्री सैयद अब्बास अराघची का फोन आया। मौजूदा हालात के विभिन्न पहलुओं पर विस्तार से बातचीत हुई। हम एक-दूसरे के लगातार संपर्क में रहने पर सहमत हुए। अराघची ने हाल ही में पाकिस्तान, ओमान और रूस का भी दौरा किया।

दुनिया का सबसे अहम समुद्री रास्ता है होर्मुज

होर्मुज स्टेट दुनिया के सबसे अहम तेल मार्गों में से एक है, जहां से वैश्विक कच्चे तेल का बड़ा हिस्सा गुजरता है। भारत अपनी ऊर्जा जरूरतों के लिए खाड़ी देशों पर काफी हद तक निर्भर है, ऐसे में इस मार्ग पर किसी भी तरह का संकट सीधे तौर पर भारत की अर्थव्यवस्था और तेल कीमतों को प्रभावित कर सकता है। विशेषज्ञों का मानना है कि ईरान के साथ भारत का सीधा संवाद इस संकट के बीच राहत के संकेत दे सकता है। कूटनीतिक स्तर पर लगातार संपर्क बनाए रखने से न केवल सप्लाई चेन सुरक्षित रह सकती है, बल्कि अचानक तनाव की स्थिति में बेहतर सुरक्षा भी संभव हो सकेगी।

संक्षिप्त समाचार

मजदूर दिवस पर भाकपा का जुलूस आज

भोपाल। सारी दुनिया के मेहनतकशों के त्यौहार 'मजदूर दिवस' के अवसर पर भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी और सम्बद्ध जन संगठनों द्वारा 1 मई को जुलूस निकालकर अपनी एकजुटता का प्रदर्शन किया जाएगा। यह जुलूस सुबह 10.30 बजे स्थानीय जनक पुरी (जुमेराती,जवाहर चौक) से शुरू होकर आज़ाद मार्केट,मंगलवारा,इतवारा, बुधवारा चौराहे से होकर वापस उसी मार्ग से जनकपुरी पहुंचेगा जुलूस के दौरान बैंड बजे,नृत्य, मेहनतकशों के नारों के साथ अपनी एकजुटता और उल्लास का प्रदर्शन किया जाएगा।जुलूस के बाद जनक पुरी में जुलूस में शामिल मेहनतकशों का भोज आयोजित किया गया है। भाकपा मध्य प्रदेश राज्य सचिव कॉमरेड शैलेन्द्र शैली ने सारी दुनिया के मेहनतकशों को बधाई दी है।

तात्या टोपे के हाथों की लिखी दुर्लभ चिट्ठी मिली

1857 की क्रांति में ऐसे बनाई थी रणनीति, नीचे असली हस्ताक्षर

इंदौर (नप्र)। मध्य प्रदेश के सरकारी अभिलेखागार की धूल फांकती फाइलों से एक ऐसा चिट्ठी निकली है, जिसने इतिहासकारों को हैरान कर दिया है। झान भारत मिशन के तहत चल रहे डिजिटलीकरण के दौरान तात्या टोपे की अपने हाथों से लिखी एक दुर्लभ चिट्ठी मिली है। इस पर उनके असली हस्ताक्षर मौजूद हैं, जो उस दौर की कूटनीति और प्लानिंग की कहानी बयां कर रहे हैं।

क्या लिखा है चिट्ठी में?

चैत्र बदी 7, संवत् 1914 (सन् 1857) की तारीख वाली यह चिट्ठी मराठमोली लिपि में लिखी गई है। इसे डिकोड करने के लिए भाषाई विशेषज्ञों की मदद ली गई। पत्र में तात्या टोपे ने सूबेदारों, सरदारों और सिपाहियों को संबोधित करते हुए एकजुट होने का आह्वान किया है।

यूपी के श्रमिकों को बड़ी राहत देने की है तैयारी

● योगी सरकार में बनाई जा रही जबरदस्त योजना

लखनऊ (एजेंसी)। प्रदेश सरकार श्रमिकों के लिए बड़ी राहत देने की तैयारी में है। अब तक अस्थायी कैंपों में मिलने वाली स्वास्थ्य सुविधाओं के बजाय श्रमिकों को स्थायी और कैशलेस इलाज से जोड़ने की योजना बनाई जा रही है। इसके साथ ही उनके रहने के लिए हॉस्टल सुविधा शुरू करने पर भी काम तेज हो गया है। पिछले वित्तीय वर्ष में कारखानों में 2.77 लाख पुरुष और 23,941 महिला श्रमिक पंजीकृत थे। ई-श्रम पोर्टल पर प्रदेश के 8.42 करोड़ असंगठित श्रमिकों का डाटा दर्ज है। इनमें से 7.06 करोड़ से अधिक श्रमिकों को राशन कार्ड उपलब्ध कराया जा चुका है। करीब 35 लाख श्रमिक पहले खाद्य सुरक्षा योजना से वंचित थे, जिन्हें अब जोड़ा गया है। बड़ी संख्या में श्रमिकों को अभी भी सामाजिक सुरक्षा की जरूरत है। प्रदेश में बहुत से श्रमिक ईएसआई और आयुष्मान भारत जैसी योजनाओं से बाहर हैं। जिन्हें समय - समय पर अस्थायी कैंप के माध्यम से इलाज की सुविधा मिलती है, इसे ध्यान में रखते हुए श्रम विभाग नई स्वास्थ्य योजनाएं तैयार कर रहा है। प्रस्ताव है कि ऐसे श्रमिकों को मुख्यमंत्री जन आरोग्य योजना के तहत जोड़ा जाए, जिससे उन्हें अस्पताल में भर्ती, सर्जरी, जांच और दवाओं की कैशलेस सुविधा मिल सके।

इसके साथ ही श्रमिकों को काम के लिए शहरों में आकर रहने में काफी परेशानी होती है। इसे देखते हुए सरकार हास्टल सुविधा शुरू करने की तैयारी कर रही है, ताकि उन्हें सुरक्षित और सस्ती आवासीय व्यवस्था मिल सके। श्रमिकों के साथ उनके बच्चों के लिए पहले से चल रही छात्रवृत्ति योजनाओं को और बेहतर बनाया जाएगा। वर्तमान में जिन श्रमिकों की मासिक आय 24 हजार रुपये से कम है, उनके लिए श्रम कल्याण परिषद आठ योजनाएं चला रही है।

विभागीय अधिकारी एवं निर्माण एजेंसी आपसी समन्वय से समय-सीमा में पूर्ण करें कार्य : उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल

स्वास्थ्य अधोसंरचना विकास कार्यों की समीक्षा की

भोपाल। उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने मंत्रालय में लोक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा विभाग के अंतर्गत प्रदेश में संचालित विभिन्न अधोसंरचना विकास कार्यों की विस्तृत समीक्षा की। उन्होंने विभागीय अधिकारियों एवं निर्माण एजेंसियों को निर्देश दिए कि कार्यों में बेहतर समन्वय स्थापित कर समय सीमा में कार्य पूर्ण किए जायें। उन्होंने कहा कि निर्माण एजेंसियों को आवश्यक सहयोग उपलब्ध कराया जाए। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि प्रदेश में स्वास्थ्य सेवाओं को सुदृढ़ बनाने के लिए अधोसंरचना विकास कार्य अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। उन्होंने निर्देश दिए कि निर्माण कार्यों में गुणवत्ता का विशेष ध्यान रखा जाए। उन्होंने सभी परियोजनाओं की नियमित एवं सतत मॉनिटरिंग सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। बैठक में विभिन्न परियोजनाओं की वर्तमान स्थिति, प्रगति, चुनौतियों एवं उनके समाधान पर विस्तार से चर्चा की गई।

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने मेडिकल कॉलेज इंदौर में चल रहे सुदृढ़ीकरण एवं उन्नयन कार्यों की समीक्षा करते हुए अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। इसके साथ ही उन्होंने जिला चिकित्सालय पन्ना, सतना एवं सीधी में संचालित कार्यों की प्रगति का भी विस्तृत जायजा लिया और संबंधित अधिकारियों को कार्यों में तेजी लाने के निर्देश दिए। उन्होंने मेडिकल कॉलेज बुधनी, मंडला एवं छतरपुर में आवश्यक फर्नीचर की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए टेंडर प्रक्रिया को समयबद्ध रूप से पूर्ण करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि सभी आवश्यक संसाधनों की समय पर उपलब्धता से स्वास्थ्य संस्थानों में बेहतर सुविधाएं सुनिश्चित की जा सकेंगी एवं उनका संचालन समय सीमा में प्रारम्भ हो सकेगा।

किसानों-नौजवानों को साधकर वेस्ट यूपी में एंट्री करेगी कांग्रेस

● जाटों की धरती से वोटों की फसल काटेगी कांग्रेस! आज से आगाज

मेरठ (एजेंसी)। भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी) और समाजवादी पार्टी (सपा) की तरह अब कांग्रेस भी वेस्ट यूपी से चुनावी बिगुल फूंकने जा रही है। इसकी शुरुआत पार्टी कल एक मई यानी शुक्रवार से किसान नौजवान बचाओ यात्रा के जरिए वेस्ट यूपी के सहारनपुर से करने जा रही है। अपने नारे चलो चलें, बदलाए लाएं, किसान नौजवान का सम्मान बचाएं के साथ कांग्रेस इस 11 दिन तक चलने वाली यात्रा को 13 मई को दिल्ली में दस्तक देने के साथ समाप्त करेगी। यात्रा के जरिए कांग्रेस की तैयारी किसानों-नौजवानों के दर्द में शामिल होकर और उन्हें साधकर वेस्ट यूपी की उपजाऊ जमीन से वोटों की सियासी फसल काटने की है। इसके लिए पार्टी ने पूरी ताकत झोंक दी है।

पंजे की सियासी पकड़ मजबूती करने का सपना

अब कांग्रेस अपने पंजे की सियासी पकड़ वेस्ट यूपी से मजबूत करने का आगाज करने जा रही है। इसी के तहत, पार्टी एक मई को सहारनपुर से 13 दिन की किसान-नौजवान बचाओ यात्रा शुरू कर रही है। यात्रा के जरिए कांग्रेस संदेश देने की कोशिश करेगी कि बीजेपी के शासनकाल में देश का किसान और नौजवान त्रस्त है। किसान आर्थिक संकट, बढ़ती लागत और फसलों के उचित मूल्य न मिलने से जूझ रहा है। वहीं, युवा बेरोजगारी का दंश झेल रहा है। कांग्रेस बताएगी कि किसान देश की रीढ़ हैं, तो युवा भविष्य हैं और वह इन दोनों के हितों को संरक्षित करने के लिए संकल्पित है। युवक कांग्रेस का पश्चिमी जोन और उत्तर प्रदेश किसान कांग्रेस इस यात्रा की अगुवाई करेंगे।

राज्य सरकार धर्म-संस्कृति की धारा को प्रवहमान बनाए रखने के लिए सतत् सक्रिय : मुख्यमंत्री

पं. कमल किशोर नागर द्वारा संचालित गौसेवा और नशा मुक्ति अभियान का व्यापक प्रभाव है

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि मनुष्य जीवन में जिस तरह शरीर को भोजन आवश्यक है, उसी प्रकार आत्मा की शुद्धि के लिए भक्ति और सत्संग बहुत जरूरी है। राज्य सरकार प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के मार्गदर्शन में धर्म-संस्कृति की धारा को निरंतर प्रवाहमान बनाए रखने के लिए सतत् सक्रिय है। हमारे किसान अपने कठोर परिश्रम से देशवासियों को अन्न और सभी आवश्यक भोजन सामग्री उपलब्ध करा रहे हैं। राज्य सरकार हर कदम पर किसानों के साथ है। किसानों को उनके परिश्रम का उचित सम्मान देने के लिए राज्य सरकार ने गेहूं का उपार्जन शुरू किया है। प्रत्येक गेहूं उपार्जन केंद्र पर किसानों के लिए सभी सुविधाएं उपलब्ध करवाई जा रही हैं। प्रदेश के किसानों ने गेहूं की फसल लगाई और धरती माता की कृपा से इस वर्ष गेहूं का उत्पादन दोगुना हो गया है। समर्थन मूल्य पर गेहूं खरीदने के साथ-साथ किसानों को 40 रुपए प्रति क्विंटल बोनस का भी लाभ दिया जा रहा है। अपनी प्रतिबद्धता के बलबूते राज्य सरकार इस वर्ष 2 हजार 625 रुपए प्रति क्विंटल गेहूं खरीद रही है।

किसानों से उनकी उपज का एक-एक दाना खरीदा जाएगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव गुरुवार को शुजालपुर स्थित हाटकेश्वर धाम सेमली घाट में संत श्री पंडित कमल किशोर नागर जी द्वारा प्रस्तुत श्रीमद्भगवत् कथा में सम्मिलित होकर अपने विचार व्यक्त कर रहे थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने इससे पहले शाजापुर जिले के शुजालपुर में गेहूं उपार्जन केंद्रों का औचक निरीक्षण भी किया।

संतानों को संस्कारित बनाना जरूरी- मुख्यमंत्री ने कहा कि संत समाज ने सदैव देवताओं के समान हमारे समाज का मार्गदर्शन किया है। महाराज श्री कमल किशोर नागर ने अध्यात्म और धर्म के माध्यम से पूरी पीढ़ी को जीवन जीना सिखाया है। गुरुदेव गौशाला के लक्ष्य के साथ सिर्फ रचनात्मक कार्यों में ही आस्था रखते हैं। उन्होंने सनातन संस्कृति की धारा प्रवाहित करते हुए समाज के बीच से अशिक्षा और नशे जैसी बुराइयों को खत्म करने का संकल्प लिया है। उनके गौसेवा और समाज सुधार कार्यों का व्यापक प्रभाव है। हमारी संतानें वंश और गौत्र की अमरता की निशानी हैं।

● चुनाव आयोग की सख्त रणनीति का दिखा व्यापक असर

बंगाल में 50 साल में तीसरी बार 'शांतिपूर्ण' मतदान

कोलकाता (एजेंसी)। बंगाल ने 2026 के विधानसभा चुनाव में एक ऐतिहासिक मिसाल पेश की है। लगभग पांच दशकों में यह तीसरी बार है जब राज्य ने पूरी तरह शांतिपूर्ण और निष्पक्ष चुनाव देखा। इससे पहले वर्ष 1971 और 2011 के विधानसभा चुनाव में ऐसी स्थिति देखने को मिली थी। इस बार चुनाव के दौरान न केवल मतदान के दिन, बल्कि पूरे प्रचार अभियान में भी किसी प्रकार की हिंसा या जानमाल के नुकसान की घटना सामने नहीं आई। चुनाव आयोग की सख्त निगरानी और रणनीतिक फैसलों को इस सफलता का सबसे बड़ा कारण माना जा रहा है। दो चरणों में हुए मतदान में वोटिंग प्रतिशत 92.93 फीसद रहा, जो यह दर्शाता है कि मतदाता बिना किसी भय के मतदान केंद्रों तक पहुंचे।

चुनाव आयोग के अधिकारियों की अहम भूमिका

इस बदलाव के पीछे चुनाव आयोग के अधिकारियों की अहम भूमिका रही। राज्य के मुख्य निर्वाचन अधिकारी मनोज अग्रवाल, विशेष पर्यवेक्षक सुब्रत गुप्ता और विशेष पुलिस पर्यवेक्षक एनके मिश्रा की रणनीति और प्रशासनिक नियंत्रण को निर्णायक माना जा रहा है। इन अधिकारियों ने चुनाव की घोषणा से पहले ही पुलिस और प्रशासन में बड़े स्तर पर बदलाव किए और पूरी व्यवस्था को अपने नियंत्रण में लिया। विशेषज्ञों का मानना है कि इस बार राजनीतिक दलों के खिलाफ सीधे कार्रवाई करने के बजाय प्रशासनिक ढांचे को मजबूत किया।

प्रेमी को देख शादी के स्टेज से दौड़ी दुल्हन

छिंदवाड़ा में दूल्हे के सामने बॉयफ्रेंड के गले में डाली वरमाला, वर-वधु पक्ष में मारपीट

छिंदवाड़ा (नप्र)। छिंदवाड़ा में वरमाला की रस्म के बीच प्रेमी पहुंचा तो दुल्हन ने स्टेज से दौड़ लगा दी। दूल्हे को छोड़कर प्रेमी के गले में माला डाल दी। मामला उमरेठ में 27-28 अप्रैल की दरमियानी रात का है। मंगलवार को वर पक्ष ने इसकी शिकायत थाने में दर्ज कराई। गुरुवार को दुल्हन के स्टेज से भागने का वीडियो भी सामने आ गया। भलावी परिवार का दूल्हा सात फेरे लेने परासिया से मुजावर गांव पहुंचा था। यहां बारात का स्वागत हुआ, आतिशबाजी की गई। फिर मेहमान भोजन के लिए स्टॉल्स पर पहुंचे। इसी बीच दूल्हा स्टेज पर पहुंचा। वरमाला की रस्म की तैयारी होने लगी। कुछ देर में दुल्हन भी स्टेज पर आई। वरमाला हाथ में लेकर इधर-उधर देखा, फिर स्टेज से दौड़ लगा दी। वह पांडाल में मौजूद अपने प्रेमी के पास पहुंची और उससे लिपट गई। उसके गले में माला डाल दी।

● **परिजन ने प्रेमी को पीटा, दोनों पक्षों में मारपीट-** ये देखकर मौके पर मौजूद हर शख्स सकते में आ गया। दुल्हन के परिजन ने प्रेमी को पकड़ लिया। उसकी पिटाई कर दी। उसे पांडाल से बाहर भगा दिया। इसके बाद बाराती और घरातियों में विवाद हो गया। दोनों पक्षों के बीच हाथापाई हो गई। दूल्हे ने शादी करने से इनकार कर दिया। बारात बिना शादी के ही वापस लौट गई।

● **दो साल से चल रहा था प्रेम प्रसंग-** बताया गया है कि दुल्हन का प्रेम प्रसंग दो साल से चल रहा था। इसकी जानकारी परिवार के लोगों को थी। परिवार के दबाव में युवती शादी के लिए तैयार हो गई थी, लेकिन शादी के दिन प्रेमी को देखते ही उसने इरादा बदल लिया। फिलहाल, दुल्हन अपने परिजन के साथ घर पर ही है।

मप्र में 2 मई से अतिथि शिक्षक भर्ती प्रक्रिया शुरू

नए पंजीयन के साथ पुराने आवेदकों को प्रोफाइल अपडेट कराना अनिवार्य, मेरिट के आधार पर होगा चयन

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश में शैक्षणिक सत्र 2026-27 के लिए अतिथि शिक्षकों की भर्ती प्रक्रिया 2 मई से शुरू होने जा रही है। लोक शिक्षण संचालनालय द्वारा जारी निर्देशों के अनुसार इस बार नए आवेदकों को पंजीयन करना होगा, जबकि पहले से पंजीकृत उम्मीदवारों के लिए प्रोफाइल अपडेट और दस्तावेज सत्यापन अनिवार्य रहेगा। पूरी प्रक्रिया ऑनलाइन पोर्टल 3.0 के माध्यम से संचालित की जाएगी। स्कूल शिक्षा विभाग ने स्पष्ट किया है कि बिना सत्यापन के किसी भी आवेदक का स्कोर कार्ड जनरेट नहीं होगा, जिससे वह भर्ती प्रक्रिया में शामिल नहीं हो सकेगा। इसलिए सभी इच्छुक कैंडिडेट्स को तय समयसीमा में जरूरी प्रक्रिया पूरी करनी होगी। विभाग ने पदों की कुल संख्या स्पष्ट नहीं की है, लेकिन यह प्रक्रिया प्रदेश के स्कूलों में विषयवार रिक्त करीब 10 हजार पदों को भरने के लिए संचालित की जा रही है। इसमें प्राथमिक, माध्यमिक और उच्च माध्यमिक स्तर के शिक्षकों की आवश्यकता के अनुसार चयन किया जाएगा।

तेज रफ्तार कार ने बाइक सवार को टक्कर मारी, मौत

आरोपी चालक कार सहित फरार, पुलिस ने शुरू की जांच

भोपाल (नप्र)। भोपाल के खजूरी सड़क थाना इलाके में तेज रफ्तार कार ने अधेड़ को जोरदार टक्कर मार दी। हादसे में व्यक्ति की मौके पर ही मौत हो गई। घटना के बाद आरोपी कार चालक फरार हो गया। पुलिस ने मामले की जांच शुरू कर दी है। संतोष बंशकार पिता दमोदीलाल बंशकार (50) दोराहा जोड़ राम नगर कॉलोनी का रहने वाले थे और खेती करते थे। सीहोर जिले के बिलकिसगंज झागरिया में बुधवार दोपहर बहू को छोड़ने गए थे।

चालक तक पहुंचने का प्रयास कर रही पुलिस– वहां से बुधवार रात को लौट रहे थे। तूमड़ा जोड़ पर बाइक को सामने से एक तेज रफ्तार कार ने टक्कर मार दी। इससे उनकी मौके पर ही मौत हो गई। वारदात के बाद कार में सवार चालक सहित अन्य चार लोग कार सहित भाग निकले।पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है। जांच कर पुलिस आरोपी कार चालक तक पहुंचने का प्रयास कर रही है।

एकसाथ जलीं 16 चिताएं, एक चिता पर चार महिलाएं

धार में 100 की रफ्तार में पिकअप का टायर फटा था; डीआईजी बोले- ओवर स्पीड बनी वजह

धार (नप्र)। मध्य प्रदेश के धार में बुधवार रात हुए पिकअप हादसे में नयापुरा के 9, सेमलीपुरा के 5 और रामपुरा के 2 लोगों की मौत हो गई। सभी का अंतिम संस्कार गुरुवार सुबह किया गया। 4 महिलाओं के शवों को एक ही चिता पर रखा गया।

अपनों को खोने वाले परिजन का बुरा हाल है। कोई पत्नी की तस्वीर हाथ में लेकर बैठा है तो कोई उनके कपड़े एकटक देख रहा है। रिश्तेदारों की आंखें भी नम हैं। पूरे गांव में मातम छाया है।

बता दें कि बुधवार रात करीब साढ़े 8 बजे 46 मजदूरों से भरा पिकअप वाहन टायर फटने से डिवाइडर पर चढ़कर पलट गया था। वाहन ने 3-4 बार पलटी खाई। फिर सड़क के रॉन्ग साइड जाकर स्कॉर्पियो से टकराया था। हादसे में 16 लोगों की मौत हो गई, 30 घायल हैं। मृतकों में 6 बच्चे शामिल हैं। एक्सीडेंट इंदौर-अहमदाबाद राष्ट्रीय राजमार्ग के चिकलिया फाटा पर जियो पेट्रोल पंप के पास हुआ। प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि पिकअप की रफ्तार करीब 100 किमी प्रतिघंटा रही होगी।

टर्न पर न तो साइन बोर्ड, न ही स्टॉप सिग्नल– इंदौर ग्रामीण डीआईजी मनोज कुमार सिंह ने गुरुवार सुबह घटनास्थल का मुआयना किया। उन्होंने कहा कि प्रारंभिक तौर पर हादसे की वजह ओवर स्पीड ही है। साथ ही रोड इंजीनियरिंग और नेशनल हाईवे ऑफ इंडिया की गलती सामने आई है। यहां टर्न पर न तो साइन बोर्ड लगे हैं और न ही स्टॉप सिग्नल। हम इन सभी बिंदुओं को लेकर एनएचएआई को पत्र लिखेंगे।

6 जुलाई को हाईकोर्ट के सामने प्रदर्शन करेंगे ठेका श्रमिक

भोपाल में आउटसोर्स कर्मचारियों का प्रदर्शन

- **न्यूनतम वेतन बढ़ाने की मांग, नीलम पार्क के पास रैली निकाली, नारेबाजी**

भोपाल (नप्र)। राजधानी भोपाल में ठेका श्रमिक, अस्थायी और आउटसोर्स कर्मचारी आंदोलन कर रहे हैं। कर्मचारियों ने नीलम पार्क क्षेत्र में रैली निकाली और पार्क में धरने पर बैठ गए। वे नारेबाजी के साथ न्यूनतम वेतन बढ़ाने की मांग कर रहे हैं। इन कर्मचारियों ने सांकेतिक सामूहिक आत्मदाह की चेतावनी दी है। प्रदर्शन के दौरान अस्थायी, आउटसोर्स कर्मचारी मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष वासुदेव शर्मा ने कहा कि अगर हमारी मांगे पूरा पूरी नहीं होती है तो आने वाले 6 जुलाई को जबलपुर हाईकोर्ट के सामने जंगी प्रदर्शन करेंगे और हाईकोर्ट से मांग करेंगे कि उन्होंने जो कानून लाया था न्यूनतम वेतन का, वह आउटसोर्स और राजस्व विभाग कर्मचारी पर भी लागू हो।

राज्य सरकार ने न्यूनतम मजदूरी 12,425 से 16,769 रुपए प्रतिमाह घोषित की है। कर्मचारी इससे खुश नहीं हैं। उनका कहना है कि कम से कम 26 हजार रुपए न्यूनतम वेतन मिलना चाहिए। उनका आरोप है कि केंद्र सरकार के तय मानकों के विपरीत राज्य में कई विभागों में 3 से 5 हजार रुपए प्रतिमाह पर काम कराया जा रहा है, जिससे असंतोष बढ़ता जा रहा है।

सरकार हमें नियमित करे– नर्मदापुरम से आए अमित कुमार का कहना है कि लंबे समय से काम कर रहे हैं। सरकार हमें नियमित करे। उन्होंने कहा कि अगले विधानसभा सत्र में हमारी मांगें विधायक उठाएं और हमें न्याय दिलाएं। अमित का कहना है कि हम राजस्व विभाग में हैं, इसलिए हमसे तहसीलदार, सरपंच, सचिव, पटवारी भी काम करवाते हैं। उनका सीधा कहना है कि हम राजस्व विभाग में हैं हमको काम करना पड़ेगा और उसका पैसा हमें नहीं दिया जाता है।

खसरा के पंजीयन में 8 रुपए मिलते– अमित ने कहा कि एक खसरा का पंजीयन कराने पर हमें सिर्फ 8 रुपए मिलते हैं। हम पूरे साल में केवाईसी, पंजीयन सहित राजस्व विभाग के अंतर्गत आने वाले काम करते हैं। हमने बीएलओ का भी काम किया है। फार्मर आईडी बनवाने में भी काम किया है, लेकिन हमें उसका कोई भी मानदेय नहीं दिया गया और अगर हम काम नहीं करते हैं तो हमें धमकी दी जाती है कि काम नहीं करना है तो निकल जाओ छोड़ दो काम।

कई विभागों में बेहद कम वेतन का आरोप

कर्मचारियों का कहना है कि विभिन्न विभागों में कार्यरत श्रमिकों को न्यूनतम वेतन से भी कम भुगतान किया जा रहा है। इसके अलावा औद्योगिक क्षेत्रों, पावर प्लांट और सीमेंट उद्योगों में भी ठेका श्रमिकों को पूरी न्यूनतम मजदूरी नहीं मिलने का आरोप लगाया गया है।

- स्कूलों, छात्रावासों और आयुष विभाग के अंशकालीन कर्मचारियों को 4-5 हजार रुपए
- ग्राम पंचायतों के चौकीदार, पंप ऑपरेटर और सफाईकर्मियों को 3-4 हजार रुपए
- स्वास्थ्य विभाग के आउटसोर्स कर्मचारियों को 7-8 हजार रुपए
- राजस्व विभाग के लोक यूथ सर्वेयरों को करीब 1 हजार रुपए
- मध्यान्ह भोजन कार्यकर्ताओं को लगभग 4 हजार रुपए
- मनरेगा मेट श्रमिकों को 2 हजार रुपए से भी कम भुगतान

टीटी नगर पुलिस ने युवकों को पीटा...पांव में आलपिन चुभोई

हालत बिगड़ने पर अस्पताल पहुंचाया; पीड़ित ने पुलिस कमिश्नर से शिकायत कर कार्रवाई की मांग की

भोपाल (नप्र)। राजधानी भोपाल के टीटी नगर थाना पुलिस पर दो युवकों को रातभर बेरहमी से पीटने, पैरों में आलपिन चुभाने और जबरन एक चोरी की वारदात को स्वीकार करने का दबाव बनाने के आरोप लगे हैं। इस कथित पिटाई में एक युवक का हाथ फ्रैक्चर हो गया।

पीड़ित पक्ष ने पुलिस कमिश्नर से लिखित शिकायत कर कार्रवाई की मांग की है, वहीं घटना से जुड़ा एक वीडियो भी वायरल हो रहा है। जिसमें एक पीड़ित युवक ने पीटने वाले पुलिसकर्मियों पर कार्रवाई की मांग की है।

जानकारी के मुताबिक नालंदा बुद्ध विहार, अंबेडकर नगर निवासी आयुष गोलाईत (21) 25 अप्रैल को अपने दोस्तों के साथ कोलार में एक मित्र की हल्दी रस्म में शामिल होने गया था। देर रात करीब ढाई बजे वह अपने दोस्त अतुल चोटाले के साथ वापस लौट रहा था। कटसी सेकेंड स्टॉप के पास दोनों एक नल पर हाथ-मुंह धो रहे थे, तभी डायल 112 पुलिस वहां पहुंची और दोनों को हिरासत में लेकर टीटी नगर थाने ले गई। परिजनों के अनुसार पुलिस दोनों युवकों को अंजली कॉम्प्लेक्स स्थित एक घर में ले गई, जहां कुछ समय पहले चोरी हुई थी। लेकिन फरियादी ने दोनों को पहचानने से इनकार कर दिया। इसके बावजूद पुलिस उन्हें वापस थाने ले आई, जहां कथित तौर पर रातभर लाठी-डंडों से पीटा गया। आरोप है कि सब-इंस्पेक्टर राघवेंद्र सिकरवार समेत अन्य पुलिसकर्मियों ने मारपीट की और अतुल के पैरों में आलपिन चुभाई।

ऋषिपुरम में शराब दुकान का विरोध

26 दिन से धरना दे रहे; कहा- 5 दिन में दुकान नहीं हटी तो उग्र प्रदर्शन करेंगे

भोपाल (नप्र)। भोपाल के अवधपुरी स्थित ऋषिपुरम में शराब दुकान की शिफ्टिंग का मामला तूल पकड़ रहा है। रहवासी 80 फीट स्थित पेट्रोल पंप पर ठेके का विरोध पिछले 26 दिन से कर रहे हैं। अब उन्होंने उग्र प्रदर्शन की चेतावनी दी है। कहा कि 5 दिन में यदि शराब दुकान नहीं हटी तो हजारों लोग सड़क पर उतरकर विरोध जताएंगे।

रहवासियों का कहना था कि दुकान के कारण इलाके का माहौल बिगड़ रहा है और आए दिन आपराधिक घटनाएं बढ़ रही हैं। रहवासी रमन तिवारी ने बताया कि मोहल्ले के लोग लंबे समय से इस दुकान को हटाने की मांग कर रहे हैं। उनका कहना है कि शराब दुकान के आसपास असामाजिक तत्वों का जमावड़ा लगा रहता है, जिससे क्षेत्र में असुरक्षा का माहौल बन गया है।

रहवासियों ने आरोप लगाया कि यहां से गुजरने वाली महिलाओं के साथ छेड़छाड़ की घटनाएं सामने आती रहती हैं। इसके अलावा झगड़े और अन्य अपराध भी बढ़ गए हैं। जिससे आम लोगों का रहना मुश्किल हो गया है।

पहले भी विरोध जता चुके– रहवासियों ने बताया कि पिछले एक वर्ष से यह शराब की दुकान यहां चल रही है। जिसका तब भी विरोध किया था, लेकिन आबकारी विभाग अब दुकान हटाने की बजाय फिर से यहीं पर संचालित करने दे रहा है।

लगातार 26 दिन से प्रदर्शन कर रहे हैं। बावजूद कोई जिम्मेदार अधिकारी सुनवाई के लिए नहीं पहुंचा। इसलिए अब उग्र प्रदर्शन करेंगे।

कानून व्यवस्था बिगड़ी तो प्रशासन जिम्मेदार होगा

शराब दुकान को लेकर गुरुवार को रहवासियों ने मीडिया के सामने अपनी बात रखी। कहा कि 5 दिन में ठेके को अन्य जगह पर शिफ्ट करने की मांग की गई है। यदि ऐसा नहीं हुआ तो क्षेत्र के करीब 10 हजार लोग सड़क पर उतरकर उग्र प्रदर्शन करेंगे।

शादी में डांस के दौरान दो पक्षों में विवाद

एक समाज ने दूसरे युवक के गले में जूते की माला डालकर निकाला जूलुस

जबलपुर (नप्र)। शहपुरा थाना अंतर्गत ग्राम भमकी में मंगलवार को आयोजित विवाह समारोह में डांस के दौरान दो समुदाय के बीच हिंसक विवाद हो गया था।

बुधवार को यादव समुदाय के लोगों ने रैकवार परिवार के एक सदस्य को पकड़कर उसे जूते की माला पहनाते हुए थाने ले गए। पुलिस ने दोनों पक्षों के खिलाफ प्रकरण दर्ज कर आरोपियों को अभिरक्षा में लिया है।

डांस के दौरान हुआ था विवाद– वहीं, जबलपुर के एडिशनल एसपी सूर्यकांत शर्मा ने कहा कि मंगलवार को शहपुरा थाना ग्राम भमकी में आयोजित विवाह समारोह में डांस के दौरान यादव और रैकवार समुदाय के बीच विवाद हो गया था। इस दौरान दोनों पक्षों के बीच मारपीट भी हुई थी। बुधवार की दोपहर को यादव परिवार के कुछ लोगों ने शिवा रैकवार उम्र 27 साल को पकड़ लिया। इसके बाद उसे जूतों की माला पहनाकर उसका जुलूस निकालते हुए पुलिस थाने तक ले गए। पूरे घटनाक्रम का वीडियो बनाकर लोगों के द्वारा सोशल मीडिया में वायरल किया गया है। पुलिस ने दोनों पक्षों की शिकायत पर आधा दर्जन व्यक्तियों के खिलाफ विभिन्न धाराओं के तहत प्रकरण दर्ज कर आरोपियों को अभिरक्षा में लिया है।

शिवा रैकवार की रिपोर्ट पर संदीप और उसके साथियों पर एफआईआर दर्ज हुई है। वहीं, संदीप की रिपोर्ट पर शिवा और उसके दो अन्य साथियों के खिलाफ प्रकरण दर्ज किया गया है। दो समुदाय के लोगों को हिदायत दी गयी है कि विवाद को तूल नही दें। पुलिस की समझाइश के बाद दोनों पक्ष के बीच विवाद शांत हो गया है।

वायरल पीडियों में आरोपी युवक पीड़िता को जूतों की माला पहनाकर सड़क पर पैदल ले जाते हुए दिख रहे थे। इस दौरान कुछ महिलाओं के द्वारा ऐसा किये जाने का विरोध किया जा रहा था।

महिला ने फांसी लगाकर सुसाइड किया

- **पिता बोले- दामाद प्रताड़ित करता था, पैसा छीन लेता था**

भोपाल (नप्र)। भोपाल के शाहजहांनाबाद इलाके में रहने वाली महिला ने फांसी लगाकर सुसाइड कर लिया। घटना बुधवार रात की है। बेटी की मौत के बाद पिता ने दामाद पर गंभीर आरोप लगाए हैं। मामले में पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है।

पुलिस के मुताबिक आशा सांवले पति लालू सांवले (24) बाजपेयी नगर की रहने वाली थी। वह बंगलों में काम करती थी। उसकी शादी को 6 साल हो चुके हैं और दो बच्चियों की मां थी। मृतका के पिता अर्जुन कैथिल ने बताया कि दामाद शराब पीने का आदी था। दहेज की मांग की लेकर बेटी को प्रताड़ित करता था। बेटी जो कमाती थी, उस रकम को छीनने के बाद शराब में उड़ा दिया करता था।

दो दिन पहले मायके से मनाकर घर ले गया था पति– नाराज बेटी दो दिन पहले घर आ गई थी। हालांकि बाद में पति उसे मनाकर साथ ले गया। घर ले जाने के दूसरे दिन ही बेटी की मौत की सूचना मिली। दामाद ने ही उन्हें बेटी की फांसी लगाकर सुसाइड की सूचना दी है। हालांकि उन्हें मौत संदिग्ध हालात में होना लग रही है।

पिता बोले हत्या का शक है, बारीकी से जांच हो– बेटी की मौत की जांच बारीकी से की जानी चाहिए, जिससे सच सामने आ सके। घटना के समय बच्चियां घर के बाहर खेल रही थीं। वहीं पुलिस का कहना है कि शुरूआती जांच में मामला सुसाइड का लग रहा है। पीएम रिपोर्ट और परिजनों के डिटेल बयानों के बाद आगे की कार्रवाई तय की जाएगी।

सीएम किसान हेल्पलाइन शुरू

मुख्यमंत्री एग्रीकल्चर एक्सपर्ट्स की वर्कशॉप में शामिल हुए, सत्रों को संबोधित करेंगे एक्सपर्ट

भोपाल (नप्र)। प्रदेश में कृषि क्षेत्र को मजबूत बनाने और किसानों को बेहतर सुविधाएं देने के उद्देश्य से गुरुवार को रविन्द्र भवन स्थित हंसध्वनि सभागार में कृषि कर्मयोगी उन्मुखीकरण प्रशिक्षण एवं कार्यशाला का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम के दौरान मुख्यमंत्री ने मुख्यमंत्री किसान कल्याण डैशबोर्ड, सीएम किसान हेल्पलाइन और पैक्स सदस्यता वृद्धि अभियान का शुभारंभ किया। इस कार्यशाला में प्रदेशभर से जिला, ब्लॉक, क्लस्टर और ग्राम पंचायत स्तर के 1027 से अधिक कर्मचारी शामिल हुए। कृषि, सहकारिता, पशुपालन, मत्स्य पालन, उद्यानिकी, कृषि अभियांत्रिकी, बीज निगम और कृषि विज्ञान केंद्रों के वैज्ञानिकों ने भी भागीदारी की।

कार्यक्रम में सीएम डॉ. मोहन यादव के साथ किसान कल्याण एवं कृषि विकास मंत्री ऐदल सिंह कंसाना, सहकारिता मंत्री विश्वास सारंग, उद्यानिकी एवं खाद्य प्रसंस्करण मंत्री नारायण सिंह कुशवाह, पशुपालन एवं डेयरी राज्य मंत्री लखन पटेल और मछुआ कल्याण मंत्री नारायण सिंह पवार सहित कई विभागों के अधिकारी मौजूद रहे।

सीएम ने कॉल सेंटर पर खुद किया कॉल– कार्यक्रम के दौरान मुख्यमंत्री ने किसान कॉल सेंटर पर स्वयं कॉल कर इसकी कार्यप्रणाली को परखा। उन्होंने एक सामान्य किसान की तरह सवाल पूछा, जिस पर कॉल सेंटर कर्मचारी ने जवाब दिया और अधिकारियों द्वारा संपर्क किए जाने की बात कही।

16 विभागों को एक मंच पर लाने की पहल– मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि किसान कल्याण से जुड़े 16 विभागों को एक प्लेटफॉर्म पर लाना बड़ी पहल है। उन्होंने कहा कि सरकार का उद्देश्य खेती की लागत कम करना और उत्पाद का मूल्य बढ़ाना है। उन्होंने पशुपालन, डेयरी और अन्य गतिविधियों में हो रहे सुधारों का उल्लेख करते हुए कहा कि इससे किसानों की आय में वृद्धि हो रही है।

सीएम ने कहा कि अब खेती सिर्फ दो सीजन तक सीमित नहीं रही, बल्कि तकनीक और संसाधनों के जरिए गर्मी के मौसम में भी फसल ली जा रही है। उन्होंने इजरायल जैसे देशों का उदाहरण देते हुए बताया कि सीमित संसाधनों में भी बेहतर खेती संभव है।

संपादकीय

बंगाल-बड़े बदलाव का संकेत!

किसी भी चुनाव में अंतिम दौर के मतदान की समाप्ति के बाद पेश किए जाने वाले एग्जिट पोल सच ही साबित हों, यह जरूरी नहीं है, लेकिन वो एक संकेत जरूर देते हैं। चुनाव के नतीजे 4 मई को आएंगे। हाल में सम्पन्न पांच राज्यों के चुनाव में मतदान की समाप्ति के बाद सभी की निगाहें मुख्य रूप से पश्चिम बंगाल के चुनाव पर लगी है, कि क्या इतिहास बदलता है नहीं। चौंकाने वाली बात यह है कि अपने एग्जिट पोल में से 7 में से बड़े 5 एजेंसियां वहां भाजपा की सरकार बनने का अनुमान जता रही हैं। बेशक भाजपा ने यह चुनाव बहुत गहरी और बहुआयामी रणनीति के साथ लड़ा है। ज्यादातर समय मुख्यमंत्री ममता बैनर्जी और उनकी पार्टी तृणमूल कांग्रेस भाजपा के पिच पर ही बैटिंग करती दिखीं, फिर चाहे वह एसआईआर का मुद्दा हो या फिर घुसपैठियों की बात या हिंदुओं के सामने जनसंख्या संतुलन बिगड़ने का खतरा। ममता बैनर्जी ने इस चुनाव को भावनात्मक मुद्दों की तरफ मोड़ने की जी तोड़ कोशिश की। इसे बांग्ला अस्मिता का सवाल बताया, लेकिन चुनाव के दूसरे चरण में जिस तरह मारपीट और हिंसा हुई तथा जिस तरह टीएमसी के कार्यकर्ताओं ने लगातार शिकायतें कीं, उससे यह संदेश जरूर गया कि टीएमसी उतनी मजबूत स्थिति में नहीं है, जितनी की वह दिखाई देती रही है। इसका बड़ा कारण 15 साल की एंटी इनकम्बेंसी भी है। दूसरी तरफ भाजपा और आरएसएस ने इस बार बंगाल विजय को अपना मुख्य लक्ष्य बनाया हुआ था। इसके अलावा विकास, रोजगार और भ्रष्टाचार के मुद्दे थे ही। ममता इन्हीं आरोपों का जवाब देने में ज्यादातर लगी रहीं। अभी भी वो एग्जिट पोल के अनुमानों को भाजपा प्रायोजित ही बता रही हैं। लेकिन अगर यह अनुमान सच हुए तो समूचे देश की राजनीति पर इसका असर होगा। हालांकि अभी भी कई राजनीतिक प्रेक्षक इन अनुमानों से सहमत नहीं हैं और मान रहे हैं कि बंगाल से दीदी को उखाड़ फेंकना लगभग नामुमकिन है, सत्ता में वो ही आएंगी, भले ही उनकी सीटें घट जाएं। यह चुनाव जीतने के लिए भाजपा ने हर तरीका अपनाया। लोगों में यह भरोसा पैदा करने की कोशिश की कि अगर वो निर्भीक होकर वोट देंगे तो राज्य में सत्ता परिवर्तन संभव है। इसीलिए करीब ढाई लाख केन्द्रीय सशस्त्र बलों की तैनाती की गई। यही कारण है कि इस बार पश्चिम बंगाल ने मतदान का ऐतिहासिक रिकॉर्ड तोड़ दिया। कारण जो भी रहे हों, लोग वोट देने के लिए घर से निकले, यह भारतीय लोकतंत्र के लिए शुभ लक्षण है और उसकी विश्वसनीयता का परिचायक है। इस सत्ता के संघर्ष से परे जो महत्वपूर्ण रिकॉर्ड बंगाल ने बनाया, वो है आजादी के बाद का रिकॉर्ड मतदान। राज्य में दोनों चरणों को मिलाकर 92.63 प्रतिशत वोट पड़े, जो सौ फीसदी से कुछ ही कम है। इस भारी मतदान के पीछे कई कारण बताए जा रहे हैं, जैसे कि वोटरों में यह अफवाह फैलना कि वोटर लिस्ट से नाम कटने पर उन्हें मिलने वाली सभी सुविधाएं छिन जाएंगी अथवा वो भविष्य में फिर कभी वोट नहीं दे पाएंगे। वगैरह। इस चुनाव में महिलाओं ने भी जमकर वोट डाला। इनमें भी ग्रामीण और गरीब महिलाओं का रुझान ममता दी की तरफ ज्यादा दिखा, जबकि मध्य वर्ग और सुशिक्षित महिलाएं भाजपा को वोट करती दिखीं। एक और अहम बात पश्चिम बंगाल में भद्र लोक द्वारा बड़े पैमाने पर वोटिंग है। यह वर्ग खुलकर सामने कम ही आता है। जानकारों का मानना है कि अगर बंगाल में पिछले चुनाव की तुलना में अगर 10 फीसदी वोट ज्यादा पड़ा है तो यह निश्चित ही किसी बड़े बदलाव का संकेत है। यह भी संभव है कि ममता दीदी और बड़े बहुमत से लौटें।

नजरिया

रघु ठाकुर

लेखक समाजवादी विचारक हैं।

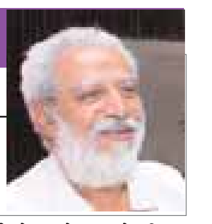

नोएडा श्रमिक आंदोलन- नई उम्मीद

मजदूरों के इस आंदोलन की तार्किकता और औचित्य स्वयं सिद्ध है। इन कारखानों में मजदूरों को तीन खंडों में बाँटा गया-कुशल, अर्धकुशल और अकुशल। इसी आधार पर उनकी मासिक मजदूरी तय की गई। उप्र सरकार ने न्यूनतम मजदूरी 11313 रुपया, और राजस्थान ने मात्र 7010 रुपया मासिक निर्धारित की है जबकि दिल्ली में न्यूनतम मजदूरी 19046 रुपया और हरियाणा सरकार ने हाल ही में 9 अप्रैल 2026 को अकुशल मजदूरों का वेतन 11274 से बढ़ाकर 15220 रुपया किया है। याने नोयडा के मजदूर को 400 रुपये प्रतिदिन का मिल रहा हैं और वही काम करने वाले मजदूर को 585 रुपया रोज तथा दिल्ली के मजदूर को लगभग 630 रुपये रोज दिया जा रहा है।

अप्रैल माह के प्रथम सप्ताह में नोएडा में मजदूरों की एक बड़ी हलचल हुई। बढ़ती महंगाई से परेशान, वेतन वृद्धि की मांग और काम के घंटों व श्रमिक कानूनों को समुचित रूप से लागू न करने से पीड़ित मजदूर अचानक कारखानों के बाहर निकल आये। कुछ देर प्रशासनिक और कार्यालयों के अधिकारियों ने उन्हें आश्वासनों की लालीपाप देकर समझाने का प्रयास किया परंतु वह लालीपाप देर तक नही दे सके। अचानक मजदूर आक्रोशित हो गये और उन्होंने हिंसक रूप अख्तियार कर लिया। ये मजदूर किसी एक कारखाने के नहीं थे बल्कि नोएडा में फैली हुई कंपनियों या सभी कंपनियों के मजदूर थे। वह सड़कों पर निकल पड़े, कुछ वाहन उनके द्वारा जलाये गये ऐसा बताया जाता है और हाईवे को जाम कर दिया। स्वाभाविक रूप से योगी राज की पुलिस बड़े पैमाने पर वहां पहुंची और बल प्रयोग कर मजदूरों के जाम का हटाया। लगभग 350 मजदूर गिरफ्तार किये गये। 100 से अधिक के खिलाफ प्रतिबंधित धाराओं में कार्यवाही की गई। इसके बाद क्या होगा, अभी कहना कठिन है?

मजदूरों के इस आंदोलन की तार्किकता और औचित्य स्वयं सिद्ध है। इन कारखानों में मजदूरों को तीन खंडों में बाँटा गया-कुशल, अर्धकुशल और अकुशल। इसी आधार पर उनकी मासिक मजदूरी तय की गई। उप्र सरकार ने न्यूनतम मजदूरी 11313 रुपया, और राजस्थान ने मात्र 7010 रुपया मासिक निर्धारित की है जबकि दिल्ली में न्यूनतम मजदूरी 19046 रुपया और हरियाणा सरकार ने हाल ही में 9 अप्रैल 2026 को अकुशल मजदूरों का वेतन 11274 से बढ़ाकर 15220 रुपया किया है। याने नोयडा के मजदूर को 400 रुपये प्रतिदिन का मिल रहा हैं और वही काम करने वाले मजदूर को 585 रुपया रोज तथा दिल्ली के मजदूर को लगभग 630 रुपये रोज दिया जा रहा है। स्वाभाविक था कि इस विषमता के खिलाफ असंतोष होगा और पिछले दिनों जब अमेरिका-ईरान युद्ध के नाम पर गैस सिलेंडर, डीजल-पेट्रोल और यातायात की दरों में वृद्धि हुई तो मजदूरों के लिये उसे सहना असहनीय हो गया। अगर यह मान लिया जाये कि एक मजदूर के परिवार में मात्र 5 ही सदस्य हैं तो इसका मतलब है कि एक व्यक्ति के लिये प्रतिदिन मुश्किल से 70-80 रुपये मिल रहे हैं। इतने कम पैसे में किसी परिवार या व्यक्ति का गुजारा कठिन तो छोड़ो असंभव है। 11000 रुपये की आय में से लगभग 3 से 4 हजार रुपया तो किराया तथा बिजली-पानी में चले जाते हैं। औसतन 1000-1500 रुपया आने-जाने या वाहन खर्च में चले जाते हैं। अब शेष बचे 5-6 हजार रुपया में से श्रमिक का परिवार कैसे पेट भरे, कैसे बच्चों को पढ़ाये, कैसे इलाज करवाये, यह कल्पना करना भी कठिन है। मजदूरों की मांग थी कि उन्हें 20000 रुपया प्रतिमाह दिया जाये तथा उनके काम के घंटे तय किये जायें। हालात यह है कि, मजदूरों को आने-जाने में कम से कम 1 घंटा लग जाता है और आठ घंटे की जगह 12-12 घंटे काम करना पड़ता है। इस कार्य का कोई ओवर टाइम नहीं मिलता। पहले यह नियम था कि अगर श्रमिक से 8 घंटे से अधिक काम लिया जाता था तो उन्हें अतिरिक्त काम करने का वेतन से दोगुनी राशि मिलती थी। परंतु पिछले दिनों अनेकों श्रमिकों के कानूनों को चार नये श्रमिक-कानूनों में सूचीबद्ध किया गया है उसमें मजदूरों के हितों के प्रावधान लगभग हटा दिये गये। एक प्रकार से मजदूरों को उद्योगपति के बंधुआ मजदूरों में बदल दिया गया। कारखानों के पंजीयन के लिये जो पहले 10 मजदूरों की संख्या पर्याप्त होती थी अब उसको बढ़ाकर 20-40 और इससे भी अधिक कर दी गई और इसके परिणामस्वरूप बहुत सारे छोटे-छोटे उद्योग पंजीयन के नियम से बाहर हो गये और उन पर श्रम कानून लागू नहीं होते।

जो बैचेनी नोयडा के मजदूरों के सामने आई है वह केवल नोयडा की नहीं बल्कि देश के कई इलाकों की है। फरवरी माह में बिहार के बरौनी के तेल शोधक कारखाने में काम करने वाले मजदूरों ने भी काम करने के आठ घंटे की समय सीमा तय करने के लिये आंदोलन किया था जो कई दिन चला था। हालांकि वह देश की राजधानी से दूरस्थ इलाका था इसलिये मुख्य मीडिया ने उसे वह स्थान नहीं दिया जो दिया जाना चाहिये। 1 मई को मजदूर दिवस मनाया जाता है, उसकी शुरुआत ही शिकागो में मजदूर आंदोलन के कारण हुई थी वहां के मजदूरों ने जिनसे मालिक मनमर्जी काम कराते थे, मजदूरों ने 8 घंटे काम करने की समय सीमा तय करने की मांग की थी। शिकागो में गोलियां चली थीं और बड़ी संख्या में मजदूर शहीद हुये थे। उन्हीं की शहादत की याद में 1 मई को सारी दुनिया में श्मजदूर दिवस्य मनाया जाता है। परंतु बरौनी, नोएडा, ग्रेटर नोएडा और आसपास के कई इलाकों की लाचारियों और कठिनाईयों ने मजदूरों को 20 दिन पूर्व ही आंदोलन करने को मजबूर कर दिया। उप्र के मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ का बयान दुखद चिंताजनक और गुमराह करने वाला है। उन्होंने बयान देकर कहा है कि कुछ बाहर के लोग यहां आये थे, उन्होंने मजदूरों को भड़काया है। जबकि नोयडा और ग्रेटर नोयडा में जो काम करने वाले मजदूर हैं अधिकांश आसपास के इलाके के हैं और किसानों तथा मजदूरों के बेटे हैं। कुछ मीडिया रिपोर्टस के अनुसार इन आंदोलनकारी मजदूरों में मात्र 50 मजदूर बाहर के थे। श्री योगी आदित्यनाथ को या तो उनके अधिकारी या पुलिस तथ्यपरक जानकारी नहीं दे रहे थे या फिर योगी आदित्यनाथ पूंजीपति हित साधने में उलझ चुके हैं। मजदूर, नोएडा के हों, आसपास के हों या बाहर के हों, यह कोई मुद्दा नहीं है बल्कि मुद्दा तो यह है कि एक मजदूर को कितनी मजदूरी मिलना चाहिए। 11000 रुपया या 13000 रुपया। क्या एक मजदूर परिवार के लिये यह पर्याप्त है? नोएडा के उद्योगपति औसतन माह में कितना रुपया कमाते हैं। नोएडा और ग्रेटर नोएडा दोनों उद्योग के नये केंद्र हैं, जहां हजारों की संख्या में उद्योगों की शाखायें हैं। अगर इनके आय की रिटर्न का अध्ययन किया जाए तो शायद ही कोई ऐसा अभागा उद्योगपति होगा जो दिन के करोड़ या दो करोड़ रुपया से कम कमाता हो। यह आर्थिक विषमता इस सीमा तक पहुंच चुकी है कि जो मजदूरों के लिये असहज पीड़ादायक है। मुख्यमंत्री जी भगवान राम को मानने वाले हैं ऐसा उनका कहना है और भगवान राम ने किस व्यवस्था की कल्पना की है, इसकी कल्पना योगी जी को करना चाहिये। तुलसी ने रामायण में लिखा है तुलसी ममता राम सौ, समता सब संसार्य याने राम की ममता ऐसी थी कि जो केवल अयोध्या को नहीं बल्कि सारे संसार को समान मानती थी परंतु योगी आदित्यनाथ जी की ममता विभाजित है, जो उद्योगपतियों के लिये तिजोड़ी भरने की छूट देती है और मजदूरों के लिये हम भूखे हैं यह कहने की भी अनुमति नहीं देती। तुलसी ने यह भी लिखा है कि मुखिया मुख सो चाहिऐ खान-पान कहुँ एक, पालइ पोषइ सकल अंग तुलसी सहित बिबेक्य याने मुखिया मुँह के समान होना चाहिये। मुख खाता है चबाता है परंतु उसे सभी अंगों में समान रूप से आवश्यकता के अनुसार वितरित कर देता है। नोएडा से उठी आवाज पुनः उठेगी। हरियाणा जहां भाजपा की सरकार है, वहां के मुख्यमंत्री श्री नायाब सिंह सैनी ने सच्चाई को समझकर अप्रैल के पहले सप्ताह में ही मजदूरों को न्यूनतम 15000 रुपया प्रतिमाह देने की घोषणा कर दी। कहने को दिल्ली और नोएडा अलग हैं परंतु एक अर्थ में नोएडा दिल्ली जैसा ही है। अगर योगी जी जमीनी सच्चाई को नहीं समझेंगे तो गलती करेंगे। मोदी और योगी के भाषणों से गरीब का पेट नहीं भरता बल्कि पेट की आग नकली उपदेशों से और तेज होती है।

मेरी राय में आने वाले 1 मई मजदूर दिवस पर भारत सरकार को यह घोषणा करनी चाहिये कि -

1. समूचे देश में श्रमिकों के लिये याने शहरी कारखाने के श्रमिकों के लिये न्यूनतम 25000 प्रतिमाह दिया जायेगा।
2. कार्य का समय अधिकतम 8 घंटे होगा और इससे अधिक काम लेने पर अतिरिक्त समय का पारिश्रमिक से दो गुना दिया जायेगा।
3. जिन श्रमिकों को गिरफ्तार किया गया है उन्हें तत्काल रिहा किया जाये।
4. उपरोक्त 25000 रुपया प्रतिमाह का वेतनमान कंपनियों और आउटसोर्स एजेंसी दोनों पर लागू हो तथा आउटसोर्स के मजदूरों का पैसा उनके बैंक खाते में डाला जाये।
5. मजदूरों को सुरक्षा दी जाये। महिला मजदूरों के लिये कार्यस्थल पर अपनी समस्याओं और उसके निदान के लिये उपयुक्त व्यवस्था हो।
6. कारखाने में होने वाली दुर्घटनाओं को रोकने के लिये समुचित प्रबंध किये जायें।
7. कंपनियों या एजेंसियों के पंजीयन की संख्या पूर्ववत न्यूनतम 10 तय की जाये ताकि अधिकांश मजदूर श्रम कानूनों के दायरे में रहें।

असंतोष की आग फैल रही है। ग्रेटर नोएडा के एक निजी विश्वविद्यालय के कर्मचारियों ने भी वेतन वृद्धि की मांग को लेकर प्रदर्शन किया तथा धरना दिया है। गिग कर्मी भी हलचल में हैं और वे भी अपनी समस्या को लेकर बेचौनी महसूस कर रहे हैं।

उप्र में तो 2012 में वेतन का अंतिम संशोधन हुआ था पिछले 14 वर्षों से कुछ महंगाई भत्ता भले बढ़ा हो पर मूल वेतन नहीं बढ़ा है। उप्र सरकार को मूल वेतन को भी संगठित क्षेत्र के श्रमिकों के समतुल्य वेतनमान करना चाहिये। बरौनी से नोएडा के श्रमिकों के आंदोलन ने भारतीय लोकतंत्र के लिये एक नई उम्मीद पैदा की है कि देश का मजदूर अभी भी संघर्ष करने को तैयार है। अहिंसक सत्याग्रह और सिविल नाफरमानी ही देश के लोकतंत्र को बचायेगी।

मजदूर दिवस पर विशेष

डॉ. मनीष जैसल

लेखक मीडिया शिक्षक हैं।

सभ्यता की नींव पर खड़ा सबसे अकेला आदमी-मजदूर

दुनिया की हर बड़ी इमारत, हर चमकता शहर, हर चलती फैक्ट्री, हर दौड़ती रेल, हर बंदरगाह, हर पुल और हर जगमगाता बाज़ार अपने भीतर किसी न किसी मजदूर की मेहनत का इतिहास छिपाए हुए है। सभ्यता की पूरी इमारत दरअसल उन्हीं हाथों पर खड़ी है, जिनकी हथेलियों में अक्सर रेखाओं से ज़्यादा दरारें होती हैं। विडंबना यह है कि जो वर्ग सबसे अधिक श्रम करता है, वही सबसे अधिक असुरक्षित, सबसे कम सुना गया और सबसे जल्दी भुला दिया जाने वाला वर्ग भी है।एक मई को दुनिया मजदूर दिवस मनाती है। भाषण होते हैं, श्रम के सम्मान की बातें होती हैं, सरकारें योजनाओं की सूची गिनाती हैं, और सोशल मीडिया पर संवेदनाओं का एक औपचारिक उत्सव दिखाई देता है। लेकिन अगली सुबह वही मजदूर फिर उसी चौराहे पर खड़ा मिलता है, इस इंतज़ार में कि आज कोई ठेकेदार आएगा या नहीं, आज की दिहाड़ी बनेगी या नहीं, और शाम को घर लौटते समय बच्चों के लिए दूध और अन्य जरूरी सामान ले जा पाएगा या नहीं।

मज़दूर की कहानी केवल भारत की नहीं, पूरी दुनिया की कहानी है। अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन की 2025 की रिपोर्ट 'वर्ल्ड एम्प्लॉयमेंट एंड सोशल आउटलुक' बताती है कि वैश्विक श्रम बाज़ार में सुधार की गति अब भी धीमी है। दुनिया भर में लगभग 2 अरब से अधिक लोग अनौपचारिक रोजगार में हैं। एशिया और प्रशांत क्षेत्र में लगभग 66 प्रतिशत रोजगार अनौपचारिक हैं, यानी करीब 1.3 अरब लोग बिना सामाजिक सुरक्षा, पेंशन, स्वास्थ्य बीमा और स्थायी श्रम अधिकारों के काम कर रहे हैं। यह दुनिया के कुल अनौपचारिक श्रमिकों का लगभग दो-तिहाई हिस्सा है।

यह आँकड़ा केवल आर्थिक असमानता नहीं बताता, बल्कि यह संकेत देता है कि आधुनिक विकास मॉडल अब भी श्रम की गरिमा को केंद्र में नहीं रख पाया है। विकसित देशों में भी यह भ्रम टूट चुका है कि आधुनिक अर्थव्यवस्था ने श्रमिक की पीड़ा समाप्त कर दी है। अमेरिका में न्यूनतम वेतन, यूनियनों और श्रम-अधिकारों की अपेक्षाकृत मजबूत व्यवस्था होने के बावजूद गिग इकॉनमी ने एक नया संकट पैदा किया है। अमेरिका के श्रम विभाग के आँकड़े बताते हैं कि लाखों लोग अब पारंपरिक स्थायी रोजगार से बाहर निकलकर प्लेटफ़ॉर्म आधारित अस्थायी कामों में लगे हैं। उन्हें फ्रीडम और फ्लेक्सिबिलिटी का नाम दिया जाता है, लेकिन वास्तविकता यह है कि यह असुरक्षा का नया नाम है। वेतन घटता है, स्वास्थ्य बीमा निजी जिम्मेदारी बन जाता है और यूनियन की ताकत कमजोर होती जाती है।यूरोप में भी प्रवासी मजदूरों की स्थिति बहुत अलग नहीं है। खेतों, निर्माण स्थलों और सेवा क्षेत्र में काम करने वाले हजारों लोग ऐसे हैं, जिनकी पहचान केवल सस्ते श्रम तक सीमित कर दी गई है। इटली, स्पेन और जर्मनी जैसे देशों में कृषि क्षेत्र का बड़ा हिस्सा प्रवासी श्रमिकों पर निर्भर है। वे वही लोग हैं जो भोजन उत्पादन की रीढ़ हैं, लेकिन सार्वजनिक विमर्श में सबसे कम दिखाई देते हैं।खाड़ी देशों—विशेषकर संयुक्त अरब अमीरात, क़तर और सऊदी अरब में दक्षिण एशिया से गए प्रवासी मजदूरों की स्थिति लंबे समय से चिंता का विषय रही है। दुबई, दोहा और रियाद की चमकदार इमारतों के पीछे भारत, नेपाल, बांग्लादेश और पाकिस्तान के मजदूरों का पसीना है। वे ऊँची इमारतें बनाते हैं, लेकिन उनके अपने जीवन की छत अक्सर अस्थायी होती है। कई मानवाधिकार रिपोर्टें बताती रही हैं कि वेतन रोकना, पासपोर्ट नियंत्रण और कठिन कार्य-स्थितियाँ अब भी गंभीर समस्या हैं। विश्वकप के दौरान क़तर में निर्माण मजदूरों की स्थिति पर उठे सवालों ने पूरी दुनिया को यह याद दिलाया कि विकास की चमक के पीछे अक्सर श्रम की अंधेरी कहानी छिपी होती है। चीन ने दुनिया की फैक्ट्री बनकर करोड़ों लोगों को रोजगार दिया, लेकिन वहाँ भी गाँवों से शहरों में आए प्रवासी मजदूरों की जिंदगी आसान नहीं है। वे उत्पादन के पहिये को तेज़ी से घुमाते हैं, पर अक्सर नागरिक सुविधाओं, शिक्षा और सामाजिक सुरक्षा से दूर रहते हैं। अफ्रीका और लैटिन अमेरिका के अनेक देशों में मजदूर का अर्थ ही अनौपचारिक श्रम है—सड़क किनारे सामान बेचने वाला, खेत में काम करने वाला, घरेलू श्रमिक या छोटे निर्माण स्थलों पर काम करने वाला व्यक्ति।भारत में यह स्थिति और अधिक गहरी है। यहाँ मजदूर केवल एक वर्ग नहीं, अर्थव्यवस्था का सबसे बड़ा आधार है। खेतों से लेकर कारखानों तक, सड़कों से लेकर स्मार्ट शहरों तक, हर विकास-योजना की पहली ईंट मजदूर ही रखता है। फिर भी उसका जीवन सबसे अधिक अस्थिर है। इंडिया इंपाल्याड रिपोर्ट 2024 और विभिन्न श्रम अध्ययनों के अनुसार भारत के कुल रोजगार का लगभग 80 से 90 प्रतिशत हिस्सा असंगठित या अनौपचारिक क्षेत्र में है। इसका अर्थ यह है कि करोड़ों लोग बिना लिखित अनुबंध, बिना भविष्य निधि, बिना पेंशन, बिना बीमा और बिना किसी स्थायी कानूनी सुरक्षा के रोज़ काम पर निकलते हैं।भारत में निर्माण क्षेत्र लगभग 7 करोड़ से अधिक लोगों को प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से रोजगार देता है। लेकिन यही क्षेत्र सबसे अधिक असुरक्षित भी है। दिहाड़ी मजदूर सुबह यह नहीं जानता कि शाम को मजदूरी मिलेगी या नहीं। बारिश हो जाए, ठेकेदार बदल जाए, या मशीनें आ जाएँ—उसकी आय तुरंत रुक जाती है।खेती में काम करने वाली महिला श्रमिक की स्थिति और भी जटिल है। भारत में कृषि श्रम का बड़ा हिस्सा महिलाओं के कंधों पर है, लेकिन उनकी मजदूरी पुरुषों से कम होती है। कई बार उनके श्रम को परिवार की मदद कहकर अदृश्य बना दिया जाता है। घरेलू कामगार शहरों के घरों को व्यवस्थित रखते हैं, लेकिन उनके अपने जीवन में कोई व्यवस्था नहीं होती। वे सुबह से रात तक दूसरों के घरों में श्रम करती हैं, पर अपने लिए सामाजिक सुरक्षा की कोई ठोस व्यवस्था नहीं पातीं।

रिक्शा चालक, सफाई कर्मी, ईंट-भट्ठों के मजदूर, छोटे कारखानों के कर्मचारी, होटल और ढाबों में काम करने वाले श्रमिक ये सब भारत की अर्थव्यवस्था के अदृश्य स्तंभ हैं। वे रोज़ यह साबित करते हैं कि देश उनके कंधों पर चल रहा है, लेकिन व्यवस्था उन्हें पहचानने से बचती रहती है। कोविड-19 महामारी ने इस सच्चाई को सबसे निर्मम रूप में सामने रखा। जब शहर बंद हुए, सबसे पहले मजदूर ही सड़कों पर दिखाई दिए। 2020 में लाखों प्रवासी श्रमिक पैदल अपने गाँवों की ओर लौटते हुए दिखे। कोई सिर पर सामान लिए चल रहा था, कोई छोटे बच्चे को कंधे पर उठाए हुए था, कोई भूख और थकान के बीच सड़क किनारे बैठा था। वह दृश्य केवल मानवीय त्रासदी नहीं था; वह हमारे विकास मॉडल की सबसे कठोर परीक्षा थी। जिन हाथों ने शहरों को बनाया, उन्हीं हाथों के लिए शहर में जगह नहीं बची।सरकारी आँकड़ों के अनुसार भारत में करोड़ों प्रवासी श्रमिक हैं, लेकिन लंबे समय तक उनके लिए कोई समग्र राष्ट्रीय डेटाबेस तक नहीं था। कोविड ने यह दिखा दिया कि विकास के बड़े दावों के बीच सबसे ज़रूरी लोग ही सबसे अदृश्य बने रहे।आज गिग इकॉनमी ने इस संकट को नए रूप में खड़ा कर दिया है। डिलीवरी बॉय, कैब चालक, ऑनलाइन सेवा देने वाले लाखों युवा तकनीकी रूप से पार्टनर कहे जाते हैं, लेकिन व्यवहार में वे बिना अधिकार वाले कर्मचारी हैं। भारत में प्लेटफ़ॉर्म श्रमिकों की संख्या तेजी से बढ़ रही है। नीति आयोग की 2022 की रिपोर्ट के अनुसार 2029-30 तक देश में गिग वर्कर्स की संख्या 2 करोड़ 35 लाख तक पहुँच सकती है। यह संख्या बताती है कि भविष्य का श्रम असंगठित और तकनीकी रूप से नियंत्रित होने जा रहा है।महिला मजदूरों की स्थिति और अधिक कठिन है। अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन बार-बार बताता है कि अनपेड केयर वर्क यानी घर और परिवार के लिए बिना वेतन का श्रम—महिलाओं के आर्थिक अवसरों को सीमित करता है। भारत में लाखों महिलाएँ खेत में काम करती हैं, घर संभालती हैं, छोटे उद्योगों में टुकड़ा-दर मजदूरी करती हैं, पर उनकी आय कम और पहचान धुंधली रहती है। बाल मजदूरी इस पूरे परिदृश्य की सबसे कड़वी सच्चाई है। यूनिसेफ और आईएलओ के संयुक्त आकलन बताते हैं कि दुनिया में करोड़ों बच्चे अब भी श्रम में लगे हुए हैं। भारत में भी कानून के बावजूद ढाबों, छोटी फैक्ट्रियों, दुकानों और ईंट-भट्ठों में काम करते बच्चे दिखाई देते हैं। जब परिवार के सामने यह सवाल हो कि बच्चा स्कूल जाए या घर के लिए रोटी कमाए, तब संविधान की भाषा कई बार भूख से हार जाती है।मजदूर को दया नहीं, अधिकार चाहिए। सामाजिक सुरक्षा हर श्रमिक तक पहुँचे—चाहे वह खेत में हो, फैक्ट्री में हो या मोबाइल ऐप के जरिए काम कर रहा हो। स्वास्थ्य बीमा, दुर्घटना सुरक्षा, पेंशन और न्यूनतम आय की गारंटी केवल नीतिगत शब्द नहीं, जीवन की आवश्यकता हैं। भारत में ई-श्रम पोर्टल जैसे प्रयास एक शुरुआत हैं। करोड़ों असंगठित श्रमिकों का पंजीकरण इस दिशा में महत्वपूर्ण कदम है, लेकिन पंजीकरण तभी सार्थक होगा जब उसके साथ वास्तविक लाभ जुड़े हों। प्रवासी मजदूर जहाँ जाए, उसके अधिकार उसके साथ जाएँ। श्रम कानूनों का उद्देश्य केवल निवेश बढ़ाना नहीं, श्रमिक की गरिमा बचाना भी होना चाहिए। यूनियनों को भी बदलते समय के साथ गिग और प्लेटफ़ॉर्म क्षेत्र तक पहुँचना होगा।पहली मई का असली अर्थ यही है कि हम यह पूछें—क्या विकास उस आदमी तक पहुँचा है, जिसने उसे अपने हाथों से बनाया? क्या वह मजदूर, जिसने शहर खड़े किए, अपने बच्चों के लिए एक सुरक्षित घर बना पाया? क्या वह महिला श्रमिक, जिसने खेतों में अन्न उगाया, अपने जीवन में सम्मान की फसल काट पाई?

यदि उत्तर 'नहीं' है, तो हमें केवल मजदूर दिवस नहीं, अपनी विकास-चेतना पर भी पुनर्विचार करना होगा। क्योंकि किसी भी सभ्यता की असली पहचान उसकी ऊँची इमारतों से नहीं, उन मजदूरों के जीवन से होती है जो उन्हें खड़ा करते हैं। और जब तक मजदूर सुरक्षित, सम्मानित और सुना हुआ नागरिक नहीं बनता, तब तक विकास अधूरा रहेगा चाहे शहर कितने भी चमकदार क्यों न दिखें।

चीन ने दुनिया की फैक्ट्री बनकर करोड़ों लोगों को रोजगार दिया, लेकिन वहाँ भी गाँवों से शहरों में आए प्रवासी मजदूरों की जिंदगी आसान नहीं है। वे उत्पादन के पहिये को तेज़ी से घुमाते हैं, पर अक्सर नागरिक सुविधाओं, शिक्षा और सामाजिक सुरक्षा से दूर रहते हैं। अफ्रीका और लैटिन अमेरिका के अनेक देशों में मजदूर का अर्थ ही अनौपचारिक श्रम है—सड़क किनारे सामान बेचने वाला, खेत में काम करने वाला, घरेलू श्रमिक या छोटे निर्माण स्थलों पर काम करने वाला व्यक्ति। भारत में यह स्थिति और अधिक गहरी है। यहाँ मजदूर केवल एक वर्ग नहीं, अर्थव्यवस्था का सबसे बड़ा आधार है। खेतों से लेकर कारखानों तक, सड़कों से लेकर स्मार्ट शहरों तक, हर विकास-योजना की पहली ईंट मजदूर ही रखता है। फिर भी उसका जीवन सबसे अधिक अस्थिर है। इंडिया इंपाल्याड रिपोर्ट 2024 और विभिन्न श्रम अध्ययनों के अनुसार भारत के कुल रोजगार का लगभग 80 से 90 प्रतिशत हिस्सा असंगठित या अनौपचारिक क्षेत्र में है।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

पसीने से प्रगति तक

मजदूर दिवस पर विशेष

डॉ. रामेश्वर मिश्र

हर वर्ष 1 मई को विश्वभर में मनाया जाने वाला अंतराष्ट्रीय मजदूर दिवस केवल एक तिथि नहीं, बल्कि श्रम, संघर्ष, अधिकार और सम्मान का प्रतीक है। यह दिन उन करोड़ों श्रमिकों को समर्पित है जिनके श्रम से संसार चलता है, जिनके हाथों से उद्योग खड़े होते हैं, खेतों में अन्न लहलहाता है, सड़कें बनती हैं, भवन खड़े होते हैं और विकास की नई इबारत लिखी जाती है। सच कहा जाए तो किसी भी राष्ट्र की प्रगति के पीछे यदि कोई सबसे बड़ा आधार है, तो वह मजदूर वर्ग का श्रम है। यही कारण है कि मजदूर दिवस हमें यह स्मरण कराता है कि विकास के चमकते शिखर तक पहुँचने की राह मजदूरों के परिश्रम से होकर गुजरती है। मजदूर दिवस का इतिहास श्रमिक संघर्षों से जुड़ा है, उन्नीसवीं शताब्दी में औद्योगिक क्रांति के बाद कारखानों में श्रमिकों से अत्यधिक काम लिया जाता था। उनसे प्रतिदिन 12 से 16 घंटे तक कार्य कराया जाता था, लेकिन वेतन कम मिलता था और कार्यस्थलों पर सुरक्षा के साधन भी नहीं थे। ऐसी विषम परिस्थितियों के विरुद्ध मजदूरों ने आवाज उठाई। वर्ष 1886 में अमेरिका के शिकागो शहर में आठ घंटे कार्य दिवस की मांग को लेकर विशाल आंदोलन हुआ। इस आंदोलन में अनेक मजदूरों ने बलिदान दिया। उन्हीं शहीद श्रमिकों की स्मृति में 1 मई को मजदूर दिवस मनाने की परंपरा प्रारंभ हुई। भारत में भी मजदूर दिवस पहली बार 1923 में मद्रास में मनाया गया था।

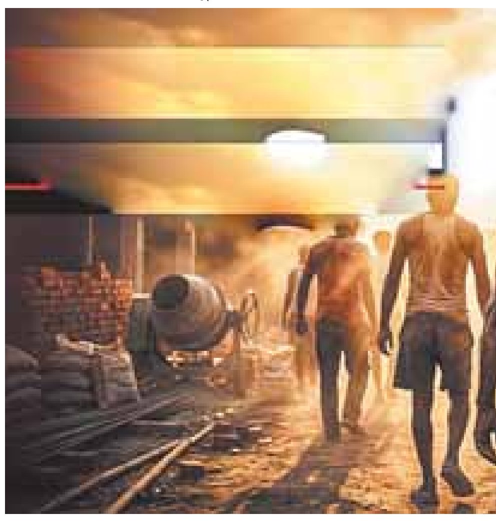

भारत जैसे विशाल देश में मजदूर वर्ग की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। यहाँ करोड़ों श्रमिक कृषि, निर्माण, परिवहन, खनन, उद्योग, वस्त्र निर्माण, घरेलू सेवा, सफाई, होटल, रेस्तरां, ईंट-भट्टों और असंगठित क्षेत्रों में कार्यरत हैं। शहरों की ऊँची इमारतों से लेकर गाँवों की सिंचाई व्यवस्था तक, रेलवे पटरियों से लेकर कारखानों की मशीनों तक, हर जगह श्रमिकों की मेहनत दिखाई देती है। जब हम किसी महानगर की चमक देखते हैं, तो उसके पीछे मजदूरों की अनगिनत मेहनत छिपी होती है। किसान खेतों में पसीना बहाकर अन्न पैदा करता है, निर्माण श्रमिक तपती धूप में भवन तैयार करता है, सफाईकर्मी शहरों को स्वच्छ रखते हैं, चालक और परिवहन कर्मचारी देश की गति बनाए रखते हैं, फैक्ट्री कर्मचारी उत्पादन चक्र को चलाते हैं। यदि मजदूर वर्ग एक दिन भी कार्य बंद कर दे, तो समाज की सामान्य व्यवस्था प्रभावित हो सकती है। इसलिए मजदूर केवल श्रमिक नहीं, बल्कि राष्ट्र निर्माण के मौन शिल्पकार हैं।

मजदूर दिवस केवल सम्मान का अवसर नहीं, बल्कि आत्ममंथन का भी दिन है। आज भी देश में बड़ी संख्या में मजदूर ऐसे हैं जिन्हें उचित मजदूरी, सामाजिक सुरक्षा, स्वास्थ्य सुविधा और सुरक्षित कार्य वातावरण प्राप्त नहीं है। असंगठित क्षेत्र के श्रमिक विशेष रूप से अनेक चुनौतियों से जूझते हैं। उन्हें नियमित रोजगार नहीं मिलता, कार्य समय निश्चित नहीं होता, दुर्घटना बीमा की सुविधा सीमित होती है और कई बार श्रम कानूनों का लाभ भी नहीं मिल पाता। महिला श्रमिकों को वेतन असमानता, कार्यस्थल सुरक्षा और दोहरी जिम्मेदारियों जैसी अतिरिक्त समस्याओं का सामना करना पड़ता है। सरकार द्वारा श्रमिकों के हित में अनेक योजनाएं और कानून बनाए गए हैं। न्यूनतम मजदूरी अधिनियम, कर्मचारी भविष्य निधि, कर्मचारी राज्य बीमा, मातृत्व लाभ, भवन एवं अन्य निर्माण कर्मकार कल्याण योजनाएँ, ई-श्रम पोर्टल जैसी पहले श्रमिकों को संगठित करने और लाभ पहुंचाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम हैं। नई श्रम संहिताओं के माध्यम से भी श्रम कानूनों को सरल और प्रभावी बनाने का प्रयास किया गया है। किंतु इन योजनाओं का वास्तविक लाभ तभी संभव है जब उनका क्रियान्वयन ईमानदारी से हो और मजदूरों तक जानकारी पहुँचे। मजदूर दिवस पर समाज की भी बड़ी जिम्मेदारी बनती है। हमें श्रमिकों के प्रति सम्मान का व्यवहार अपनाना चाहिए। अक्सर हम उन लोगों को अनदेखा कर देते हैं जो हमारे घर, कार्यालय, सड़क, बाजार और शहर को व्यवस्थित रखने में योगदान देते हैं। मजदूरों के श्रम का सम्मान केवल भाषणों से नहीं, बल्कि व्यवहार से होना चाहिए। समय पर उचित पारिश्रमिक देना, मानवीय संवेदनाओं के साथ पेश आना, कार्यस्थल पर सुरक्षा का ध्यान रखना और उनके अधिकारों का सम्मान करना सामाजिक संस्कृति का हिस्सा बनना चाहिए।

आज के तकनीकी युग में श्रम का स्वरूप बदल रहा है। मशीन और स्वचालन बढ़ रहे हैं, लेकिन मानव श्रम की आवश्यकता समाप्त नहीं हुई है। बल्कि अब कुशल श्रमिकों की मांग और बढ़ी है। इलेक्ट्रिशियन, प्लंबर, मशीन ऑपरेटर, ड्राइवर, तकनीकी सहायक, निर्माण विशेषज्ञ, डेटा ऑपरेटर जैसे क्षेत्रों में प्रशिक्षित श्रमिकों की जरूरत निरंतर बढ़ रही है। इसलिए कौशल विकास भी मजदूर कल्याण का महत्वपूर्ण पक्ष है। यदि श्रमिकों को आधुनिक प्रशिक्षण मिले, तो उनकी आय और जीवन स्तर दोनों सुधर सकते हैं। मजदूर दिवस हमें यह भी बताता है कि श्रम केवल आर्थिक गतिविधि नहीं, बल्कि मानवीय गरिमा का आधार है। जो व्यक्ति अपने श्रम से जीवन यापन करता है, वह समाज का सम्मानित नागरिक है।

श्रम करने वाला हाथ कभी छोटा नहीं होता। हमारे सांस्कृतिक मूल्यों में भी कर्म को सर्वोच्च स्थान दिया गया है। भारतीय परंपरा में श्रम को पूजा माना गया है। यही भावना समाज में समानता और सम्मान की नींव रखती है।भारत यदि विकसित राष्ट्र बनने का सपना देख रहा है, तो उस सपने की सबसे मजबूत नींव मजदूर वर्ग ही है। स्मार्ट सिटी, औद्योगिक गलियारे, नई सड़कें, आधुनिक रेलवे, डिजिटल भारत, आत्मनिर्भर भारत-इन सभी योजनाओं की सफलता श्रमिकों की मेहनत पर निर्भर है। इसलिए श्रमिकों का जीवन स्तर सुधारना, उनके बच्चों की शिक्षा सुनिश्चित करना, स्वास्थ्य सेवाएँ उपलब्ध कराना और सम्मानजनक रोजगार देना राष्ट्रीय प्राथमिकता होनी चाहिए। मजदूर दिवस पर हमें संकल्प लेना चाहिए कि श्रम का सम्मान करेंगे, श्रमिकों के अधिकारों की रक्षा करेंगे और विकास की धारा में उन्हें बराबरी का स्थान देंगे। जब मजदूर सुरक्षित, शिक्षित और समृद्ध होगा, तभी राष्ट्र भी सशक्त और समृद्ध बनेगा। पसीने की हर बूंद जब सम्मान पाएगी, तभी प्रगति का सूरज सच अर्थों में उदित होगा। वास्तव में मजदूर दिवस केवल मजदूरों का पर्व नहीं, बल्कि मानव श्रम, सामाजिक न्याय और राष्ट्रीय विकास का उत्सव है। यह दिन हमें याद दिलाता है कि चमकते शहरों, ऊँची इमारतों और बढ़ती अर्थव्यवस्था के पीछे अनगिनत मेहनतकश हाथ हैं। इसलिए आइए, इस मजदूर दिवस पर हम उन हाथों को सलाम करें, जिनके पसीने से प्रगति की राह बनती है।

बुद्ध पूर्णिमा पर विशेष

आर.बी. त्रिपाठी

लेखक स्तंभकार हैं।

असीम शांति का अनुभव कराता बौद्ध गया

एक गैर जरूरी जंग की दहशत और पल- पल बदलते मौसम के मिज़ाज के बीच हमारी बौद्ध गया की यात्रा सुखद अनुभव की तरह रही। जिस स्थान पर बुद्ध को बोधिसत्व की प्राप्ति हुई और वे राज कुमार सिद्धार्थ गौतम से भगवान बुद्ध के रूप में प्रतिष्ठित हुए हम उसी जगह श्रद्धालुओं की भीड़ का हिस्सा थे। वर्ल्ड हेरिटेज के नाम से सुशोभित यह स्थान मोक्षधाम गयाजी से लगभग 12 किलोमीटर दूर स्थित है जो बिहार प्रांत के अंतर्गत आता है। बौद्ध गया अत्यंत शांति और मन को सुकून पहुंचाने वाला स्थान लगा। ध्यान, अध्ययन, अध्यात्म और ज्ञान तथा उपासना का यह प्रमुख केन्द्र है। यहाँ ना केवल बौद्ध धर्म के धर्मावलंबी, अनुयाई, उपासक बड़ी संख्या में दर्शन को आये हुए थे बल्कि अन्य धर्म को मानने वाले लोग और दूर- दूर से आये पर्यटक भी मौजूद थे। यहां की एक अन्य विशेषता है महाबोधि मंदिर के समीप ही प्रभु जगन्नाथ स्वामी मंदिर में उसी रूप में विराजित हैं जैसे जगन्नाथ पुरी ओडिशा में।

यहां से ठीक सामने भगवान बुद्ध की तकरीबन 64 फुट ऊंची प्रतिमा ऊंचे चबूतरे जैसे स्थान पर विराजित हैं। संभवत: इतनी विशाल और ऊंची प्रतिमा स्थापित करने का अनुशरण दूसरी जगहों पर भी इसके बाद हुआ होगा।यह पवित्र स्थान देश विदेश के अनेक धर्मालुओं के लिये श्रद्धा, आस्था और उपासना का केन्द्र है। तभी यहां उस वक्त भी लोगों का तांता लगा हुआ था। स्व-अनुशासित व्यवस्था तथा साफ-सफाई के काम में भी श्रद्धाभाव से धर्मावलंबी लगे हुए थे।

हमारे जैसे रामानुज संप्रदाय से जुड़े लेकिन समान रूप से प्रभु श्रीकृष्ण के प्रति अगाध श्रद्धाभाव और आस्थावान परिवार के लिये यह सुखद आश्चर्य के साथ अत्यंत आत्मिक सुख पहुंचाने वाला विषय था बौद्ध गया में जगन्नाथ प्रभु का मंदिर जहां जगन्नाथ, बलभद्र और सुभद्रा जी के साथ विराजित हैं। संयोग से यह मंदिर बोधिसत्व और बोधिवृक्ष के समीप ही स्थित है जहां जानकारी के अभाव के चलते कई लोग नहीं पहुंच पाते। मंदिर के एक भाग में प्रभु श्रीराम,सीता जी और लक्ष्मण के साथ विराजे हैं। यहां भगवान के विभिन्न अवतारों राम अवतार, श्रीकृष्ण, नरसिंह अवतार, परशुराम, कल्कि अवतार समेत अन्य अवतार तथा राम दरबार आदि भी दर्शनीय है।

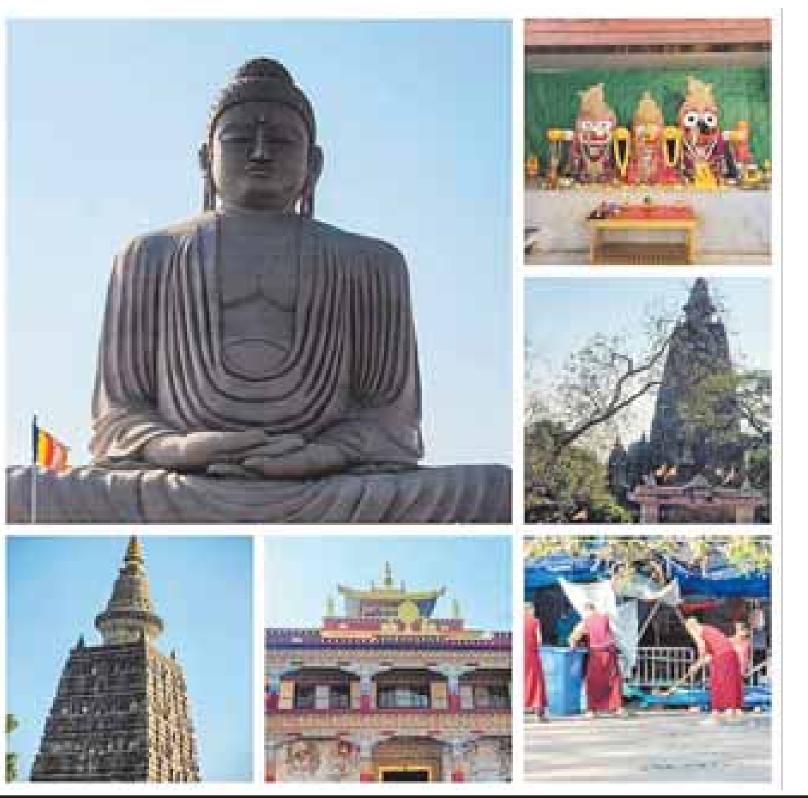

सो, ज्ञान भूमि बौद्ध गया एक मशहूर विश्व धरोहर स्थल है। यहां सबसे प्रमुख महाबोधि मंदिर है जो पवित्र बोधिवृक्ष के नज़दीक ही है। मान्यता है कि इसी वृक्ष के नीचे सिद्धार्थ गौतम को ज्ञान प्राप्त हुआ था। यहां विभिन्न देशों जापान, थाईलैंड, भूटान आदि के सुंदर मठ अवस्थित है। यहां कर्मा टेम्पल, बुद्धिस्ट टेम्पल, थाई मंदिर, महाबोधि विहार और बौद्ध भिक्षु तिब्बती मंदिर आदि विशेष रूप से दर्शनीय हैं।शांत वातावरण में बुदधं शरणं गच्छामि, धम्मं शरणं गच्छामि, संघम शरणं गच्छामि की अनुगूंज सुनाई देती है।

सो, आप किसी भी धर्म, मजहब, संप्रदाय को मानने वाले हों हमारे देश में अनेक ऐसे स्थान हैं जहां जाकर आपको आत्मिक शांति, सुकून का अनुभव होता है। हमारी पूजा-पाठ की विधियां अलग-अलग हैं लेकिन कुल मिलाकर परम सत्य यही है कि सभी उस अलौकिक शक्ति को किसी ना किसी रूप में पूजते- भजते हैं। इसीलिए सर्वधर्म समभाव, सर्वे भवंतु सुखिन:, विश्व बंधुत्व, विश्व का कल्याण हो आदि हमारी मूल धारणा में समाहित है।यह सभी धर्मों के प्रति समानता की सीख देता है। यही हमारी सनातन परंपरा तथा विविधता में एकता का प्रतीक है।

गयाजी स्थित एयरपोर्ट के ऊपरी हिस्से की डिजाइन को किसी बौद्ध मठ, मंदिर की तरह आकार दिया गया है। यहां से नई दिल्ली समेत बैंकॉक (थाईलैंड), श्रीलंका, नेपाल, भूटान, कंबोडिया आदि के लिये फ्लाइट्स उपलब्ध हैं। एयर थाई की फ्लाइट भी यहाँ आती है। एयरपोर्ट पर कर्नाटक से आये बौद्ध धर्मावलंबी सेन्ट्रेस और एक अन्य बुजुर्ग नलिन का कहना था कि वे हर साल दर्शन को यहां आते हैं। यहां मौन साधना तथा जाप कर उन्हें बहुत अच्छा अनुभव होता है। यहां मौजूद अनुयाई ज्यादातर समय मौन रहकर आराधना में निमग्न रहते हैं। ये लोग ज्यादा बतियाने से भी परहेज करते लगते हैं।

बौद्ध गया में बिहार आर्ट एंड क्राफ्ट सेंटर की स्थापना भी की जा रही है। पारम्परिक शिल्प कौशल पर केन्द्रित इस सेंटर में बिहार की 18 से अधिक जीआई टेग वाली शिल्प कलाओं की लाइव प्रदर्शन किया जायेगा। बिहार का पर्यटन निगम इस योजना में पत्थर की कारीगरी, मधुबनी कला, भागलपुर रेशम समेत अन्य उत्पाद तैयार करायेगा। सो, जीवन में एक बार मोक्षधाम गयाजी जाना तो पितृ के निमित्त अनिवार्य है ही लेकिन इस यात्रा में बौद्ध गया को भी शामिल कीजियेगा।

बुद्ध पूर्णिमा विशेष

रवीन्द्र व्यास

(पत्रकार और कला समीक्षक)

आभासी दुनिया और वास्तविक दुनिया!

युद्ध से जलते, लालच भरे संसार के बीच 'ध्यान' हमें बुद्ध को ध्यान में लेने की ज़रूरत है। अहिंसा और करुणा के साथ ही बुद्ध ने ध्यान कराया है। संसार में जहां लालच, वासना और और भौतिक सुख-सुविधाओं के पीछे मनुष्य लगातार हांफता हुआ भागा जा रहा है, तब जीवन में एक ठहराव की ज़रूरत है। यह ठहराव ध्यान से हासिल किया जा सकता और एक ऊंचाई हासिल की जा सकती है जिससे परम आनंद हासिल किया जा सकता है।

आज युद्ध से संसार का माथा झुलसा हुआ है। कई देश युद्धग्रस्त हैं। एक तरफ़ रूस और यूक्रेन पिछले तीन सालों से युद्ध लड़ रहे हैं और घातक हथियारों का इस्तेमाल कर रहे हैं। इसके पहले इजरायल और फिलिस्तीन और हमास के बीच नियमित अंतरालों में युद्ध हो रहे हैं। अब अमेरिका ईरान के खिलाफ युद्ध लड़ रहा है और युद्ध कई घातक पड़ावों को पार करता हुआ सबसे खतरनाक मोड़ पर आ पहुंचा है। उधर, इजरायल और लेबनान के बीच युद्ध चल रहा है। जाहिर है दुनिया के कई इलाकों में युद्ध ने हज़ारों-लाखों लोगों की जानें ली हैं और इसके कई गुना ज्यादा लोगों को विस्थापित होना पड़ा है। जाहिर है, इन वैश्विक परिदृश्य में अहिंसा और शांति की ज़रूरत लगातार बढ़ती जा रही है।

ऐसे में हमें बुद्ध के संदेश और उपदेश हमेशा स्मरण हो आते हैं और यह बात बार-बार दोहराई जाती रही है कि इस दुनिया को अहिंसा, शांति और करुणा ही बचा सकती है। अब जबकि एक मई को बुद्ध पूर्णिमा है तो हमें बुद्ध को ध्यान में लेने की ज़रूरत है। अहिंसा और करुणा के साथ ही बुद्ध ने ध्यान कराया है। संसार में जहां लालच, वासना और और भौतिक सुख-सुविधाओं के पीछे मनुष्य लगातार हांफता हुआ भागा जा रहा है, तब जीवन में एक ठहराव की ज़रूरत है। यह ठहराव ध्यान से हासिल किया जा सकता और एक ऊंचाई हासिल की जा सकती है जिससे परम आनंद हासिल किया जा सकता है।

अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त चित्रकार योगेंद्र सेठी एक ऐसे चित्रकार हैं जो दर्शन और अध्यात्म के स्पर्श से अपने चित्रों को आलोकित करते रहे हैं। उन्होंने ऐसे कई चित्र बनाए हैं जिसमें ध्यान, करुणा, शांति और आध्यात्मिक उत्थान को बहुत ही सुंदर रंग योजना के जरिए चित्रात्मक रूप दिया गया है। इस परिप्रेक्ष्य में उनका एक चित्र है 'ध्यान।' पहली नज़र में इस चित्र के केंद्र में एक खिला हुआ गुलाबी रंग में कमल चित्रित किया गया है और इसकी एक पंखुरी पीले रंग में रची गई है। इस कमल के ऊपर पीली तरंगों के बीच एक ध्यानस्थ मनुष्याकृति है। कमल के नीचे नीले रंगों में सागर को प्रतीकात्मक रूप से चित्रित किया गया है। कुल मिलाकर यह चित्र ध्यान को ही अभिव्यक्त करता है।

इस चित्र के बारे में बात करते हुए चित्रकार योगेंद्र सेठी बताते हैं कि यह चित्र बताता है कि एक उज्ज्वल-धवल क्षीरसागर है जो तमाम दोषों से मुक्त एक पवित्र सागर है। क्षितिज में एक बर्फ चमकदार शिला है। इस शिला पर हज़ार पंखुड़ियों वाला एक सुंदर कमल खिला हुआ है जिसमें एक पंखुरी सोने की है। इसी पर एक सिंहासन है और इसी सिंहासन के ऊपर हमारी ही आत्मा पीले रंगों से चित्रित की गई है। और इसी आत्मा से स्वर्णिम तरंगें निकलकर पूरे ब्रह्मांड में फैल गई हैं। इस पूरे दृश्य को केंद्र में रखकर ध्यान करने से परम आनंद की अनुभूति होती है। यह ध्यान की एक प्रक्रिया ही है जिसके जरिए एक शांति और अलौकिक अनुभव की प्रतीति होती है। यह ध्यान ही इस जलते हुए, लालच भरे, वासना से भरे संसार के बीच हमें आत्मिक अनुभव प्रदान करता है।

बुद्ध पूर्णिमा पर विशेष

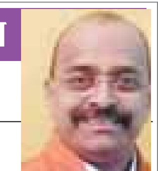

गिरीश जोशी

लेखक स्तंभकार हैं।

शांति यानी बुद्ध और कृष्ण यानी युद्ध, क्या ये सही विमर्श है?

आम धारणा है कि कृष्ण ने युद्ध और शांति की बात बुद्ध ने की है। दोनों के जन्म के समय घटी घटनाओं को देखें तो ये ध्यान में आता है कि बुद्ध यानि बालक सिद्धार्थ गौतम वैराग्य के मार्ग पर ना चले जाए इसके लिए उनके पिता ने उनका लालन-पालन राजसी ठाट-बाट के साथ पूरी सुख - सुविधाओं और वैभव में किया। वहीं कृष्ण को जन्म के पहले से ही जानलेवा खतरों का सामना करना पड़ा। कृष्ण के जन्म से पूर्व ही उनकी हत्या करने का षड्यंत्र कंस मामा ने रचना शुरू कर दिया था। जन्म लेते ही उनकी जान बचाने के लिए पिता को उफ़नती यमुना नदी में उन्हें अपनी जन्मदात्री माँ से दूर ले जाना पड़ा। जन्मभूमि से दूर नंद और यशोदा के यहां उनका लालन - पालन हुआ। फिर पूतना, चाणूर मुष्टिक जैसे न जाने कितने असुर उनकी जान लेने के लिए हमले करने लगे, यहाँ तक की अपनी जन्मभूमि छोड़कर भी उन्हें द्वारका जाना पड़ा।

युवराज सिद्धार्थ गौतम ने सबसे पहले एक मृत शरीर को देखा फिर लाचार वृद्ध , रोगी को देखा तब उनके मन में दुखों के कारण को जानने की जिज्ञासा जागी, इसने उनके मन में वैराग्य का भाव उत्पन्न कर दिया और वे सारा वैभव, सुख - सुविधा, राजपाट को छोडकर सत्य की खोज में निकल पड़े। अपनी साधना में लीन रहते हुए उन्होंने बुद्ध पूर्णिमा के दिन ही सृष्टि के सत्य को जानकर बुद्धत्व को प्राप्त किया।

ये गौरतलब है कि जो सुख और सुविधाओं में पला-बढा वह दुख के कारणों को जानने सत्य की खोज करने के लिए निकला और जो दुख, अन्याय - अत्याचार से होकर गुजरा वो जीवन में आनंद के साथ सत्य को पाने की राह बताता रहा।

वास्तव में अपनी दुनिया विरोधाभासों का ही कुल जमा योग है, जो विरोधाभासों को पूर्ण रूप से स्वीकार करता है वही दुनिया को समग्रता से समझ भी सकता है। सृष्टि दो विरोधाभासों का संतुलन है। जैसे सृष्टि में दिन-रात, ठंड- गर्मी, प्रकाश - अंधेरा होता है वैसे ही दुख और सुख भी इसी सृष्टि के दो अलग-अलग छोर हैं, दोनों को अलग नहीं किया जा सकता। यदि अलग करके देखेंगे तो पूरी सृष्टि और इसका रहस्य समझ में नहीं आ सकता। चूंकि समग्रता से सृष्टि को जानना हमारी बुद्धि के लिए संभव नहीं होता इसलिए किसी एक छोर को पकड़ कर आगे बढ़ना पड़ता है। बुद्ध, दुख ङ्क वेदना के छोर को तो कृष्ण सुख- आनंद के छोर को पकड़ कर आगे बढ़े।

भगवान बुद्ध के अनुसार हमारे दुख का कारण जाने अनजाने में हर घटना, विचार, बात यहाँ तक की अपने भीतर उठ रही संवेदना के प्रति प्रतिक्रिया व्यक्त करना है। जो हमारे अनुकूल होता है हम उस पर मन के भीतर या बाहर सकारात्मक प्रतिक्रिया देते हैं और जो हमें अपने हिसाब से प्रतिकूल लगता है उसे पर हम नकारात्मक प्रतिक्रिया देते हैं । ये दोनों ऊर्जा के रूप में हमारे भीतर जमा हो जाते हैं। बुद्ध ने दीघनिकाय के ब्रह्मजाल सूत्र में कहा - 'वेदानां समुदायं च अथंगमं च असदं च आदिनवं च निस्सारणं च यथाभूतं विदित्वा अनुपादविमुत्तो, भिक्खवे, तथागतो।।' यानि जब भी हम पांच इंद्रियों या छठी इंद्रिय (मन) के माध्यम से किसी वस्तु का अनुभव करते हैं, तो एक संवेदना उत्पन्न होती है और उस संवेदना के आधार पर, तृष्णा (लालसा और घृणा) उत्पन्न होती है। यदि संवेदना सुखद है, तो हम उसे लंबे समय तक बनाए रखने की लालसा रखते हैं, यदि वो अप्रिय है, तो हम उससे छुटकारा पाने की चाह रखते हैं। यही बंधन का या कहे दुख का कारण बनता है। आगे बुद्ध कहते हैं- 'जब हम सुखद या दुखद संवेदनाओं के उत्पन्न होने और समाप्त होने, उनका आनंद लेने, उनके उत्पन्न और लुप्त होने को पूरी तरह से समझ लेते हैं, तो वे पूर्णतः मुक्त हो जाते हैं।'

इसी बात को भगवान श्री कृष्ण ने गीता के अध्याय 2 श्लोक 14 में कहा - 'मात्रास्पर्शास्तु कौन्तेय शीतोष्णसुखदुःखदाः। आगमापायिनोऽनित्यास्तांस्तितिक्षस्व भारत।।' यानि हे कुन्तीपुत्र! सर्दी और गरमी, सुख और दुःख के विचार इन्द्रियों से सम्बन्धित विषयों के सम्पर्क से उत्पन्न होते हैं। ऐसे विचार आदि और अन्त से सीमित हैं, ये अनित्य हैं। हे भारत; इन्हें धैर्य के साथ सहन करो, जब कोई मनुष्य दुःखों के प्रति एक सहज अवस्था, अस्थायी सुख के प्रति एक अनासक्त अवस्था, भय एवं क्रोध तथा कष्ट उत्पन्न करने वाले उत्तेजकों के प्रति निस्पृहता को अपनाता है तो उसका मन सन्तुलन की स्थिर अवस्था प्राप्त कर लेता है। इसी बात को आगे बढ़ाते हुए अध्याय 2 श्लोक 25 में भगवान कहते है- 'अव्यक्तोऽयमचिन्त्योऽयमविकार्योऽयमुच्यते। तस्मादेवं विदित्वैनं नानुशोचितुमर्हसि।।' अन्तर्ज्ञान आत्मा तथा अहं के विचारों और संवेदनों के बीच का पुल है। यदि कोई व्यक्ति पर्याप्त लम्बी अवधि तक विचारों और संवेदनों से एकरूप हुए बिना रह सके तो वह अन्तर्ज्ञान के विकास द्वारा आत्मा की प्रकृति को जान लेगा। इस प्रकार जब व्यक्ति पूरी तरह शान्त होता है, तो उसे अपने मूल अस्तित्व का बोध होता है।

भगवान बुद्ध कहते हैं - 'अयं खो पण कायो अनिक्को संखतो पटिकसमुप्पन्नो। अनिचं खो पण संखतं पत्तिकसमुप्पन्नं कायं पत्तिक्का उप्पन्ना सुखा वेदना कुतो निच्चसमुप्पन्नो।' यानि यह शरीर क्षणभंगुर, बद्ध और आश्रित है। तो फिर इसमें उठने वाली कोई एक सुखद या दुखद अनुभूति स्थायी कैसे हो सकती है, जबकि यह एक ऐसे शरीर पर निर्भर होकर उत्पन्न हुई है जो खुद क्षणभंगुर और आश्रित है? इन्द्रियों का उनके विशेष विषयों के प्रति राग एवं द्वेष, प्रकृति द्वारा नियत है। इस द्वन्द्व के प्रभाव से सावधान रहना चाहिए, वास्तव में, ये दोनो (मनोवैज्ञानिक गुण) व्यक्ति के शत्रु हैं!

सुख व दुख से ऊपर उठना ही हर मानव का मूल लक्ष्य होता है । ऐसे व्यक्ति को गीता में 'स्थितप्रज्ञ' और भगवान गौतम बुद्ध ने 'अरिहंत' कहा है । गीता के दूसरे अध्याय के श्लोक 54 में अर्जुन भगवान श्री कृष्ण से पुछते है 'स्थितप्रज्ञस्य का भाषा समाधिस्थस्य केशव। स्थितधीः किं प्रभाषेत किमासीत व्रजेत किम्॥' अर्थात् हे केशव! स्थितप्रज्ञ यानि समाधि में स्थित स्थिर बुद्धि पुरुष के क्या लक्षण हैं? वह (स्थितप्रज्ञ) क्या बोलता है? कैसे बैठता है? और कैसे चलता (व्यवहार करता) है?

भगवान श्लोक 55-56 में उत्तर देते है

'प्रजहाति यदा कामान् सर्वान्
पार्थ मनोगतान्। आत्मन्येवात्मना तुष्टः स्थितप्रज्ञस्तदोच्यते॥
दुःखेष्वनुद्विग्नमनाः सुखेषु विगतस्पृहः। वीतरागभयक्रोधः
स्थितधीर्मुनिरुच्यते॥

हे पार्थ! जिस समय व्यक्ति अपने मन में उठने वाली सारी कामनाओं (अच्छी -बुरी) को पूरी तरह त्याग देता है और आत्म भाव में संतुष्ट रहता है, वह स्थितप्रज्ञ हो जाता है।

बौद्ध ग्रंथ संयुत्त निकाय 22.76 में अरिहंत के लक्षण बताए गए हैं-छिन्नपपंचो यानि जो मानसिक द्वंद्व/कल्पनाओं से मुक्त है, 'परिळाहो न विज्जति' यानि जिसे कोई मानसिक संताप नहीं है । 'मूलासयस्स समुग्घातो' अर्थात् जो दुखों की मूल जड़ का विनाश कर चूका है । 'अवितराग' जो राग (आसक्ति), द्वेष (घृणा) और मोह से ऊपर उठ चुका है । कहा जाता है कि हिंदू धर्म का सार वेदों में हैं, वेदों का सार उपनिषदों में है, उपनिषदों का सार गीता में है और गीता का सार 'स्थितप्रज्ञता' की व्याख्या में है। और स्थितप्रज्ञ के सारे गुण भगवान बुद्ध ने अरहंत में बताये हैं। वस्तुतः जो स्थितप्रज्ञ है वही अरिहंत है और अरिहंत ही स्थितप्रज्ञ है।

इस बात से यह ध्यान में आता है कि बुद्ध ने सम्यक मार्ग से दस परिमिताओं का पालन करते हुए विपश्यना की साधना से अरिहंत बनने का लक्ष्य सबके सामने रखा। भगवान श्री कृष्ण ने भक्ति योग, कर्म योग, ज्ञान योग और ध्यान योग के माध्यम से स्थितिप्रज्ञ अवस्था को प्राप्त करने का लक्ष्य रखा। अरिहंत सभी दुखों से मुक्त होकर आनंद को प्राप्त करता है, स्थितप्रज्ञ आनंद को प्राप्त कर दुखों से मुक्त होता है। इसलिए हमारे यहाँ शास्त्रों में कहा गया है - 'एकम् सत् विप्रा बहुधा वदन्ति'। इसलिए कृष्ण और बुद्ध के कहने की पद्धति और परिस्थिति में अंतर है लेकिन संदेश एक ही है ।

बुद्ध पूर्णिमा पर विशेष

डॉ.मुरलीधर चाँदनीवाला

लेखक साहित्यकार हैं।

बुद्ध ने कहा था-आंतरिक शान्ति ही विजेता का पुरस्कार है

महात्मा बुद्ध भारतीय ज्ञान-चेतना के ऐसे ज्वलंत दीप हैं, जिसे कोई चाह कर भी अनदेखा नहीं कर सकता। वे अकेले हैं, जिन्होंने प्रश्न अपने आपसे किये और उत्तर मिल जाने तक धैर्य रखा। बुद्ध ने तपस्या की प्राचीन शैली अपनायी, लेकिन जीवन के सत्य को समझने के लिये उन्होंने जो पगडंडी बनाई, वहाँ आडम्बर नहीं था। वहाँ उन रीति-रिवाजों को जबर्दस्ती बनाये रखने की विवशता भी नहीं थी, जो मनुष्य और मनुष्य के बीच भेद के स्मारक बन कर खड़े हुए थे।

हमारे जीवन में इतने दुःख क्यों भरे पड़े हैं? इनका अंत क्या है? इस प्रश्न का उत्तर खोजने के यत्न में एक के बाद एक कई दार्शनिक विचार उठते गये और हार कर अपना रास्ता बदलते हुए उन कट्टर सिद्धांतों में तब्दील होते चले गये, जिन्हें हम दुर्भाग्यवश ही धर्म कहते हैं, अन्यथा धर्म तो एक ही है, और वह सत्य को छोड़कर कुछ भी नहीं।

दुःख हमारे जीवन का अनिवार्य हिस्सा है। मनुष्य जीवन भर सुख के पीछे भागता रहता है और उसके माथे पर दुःख के पहाड़ टूटते ही रहते हैं। महाकवि जयशंकर प्रसाद ने इसी दुःख से आहत होकर लिखा था-'इस नील विषाद गगन में, सुख चपला सा दुःख घन में'।दुःख की खोज में कहीं जाना नहीं पड़ता, वह बिना बुलाये हाजिर होता है। कपिलवस्तु के राजघराने में राजकुमार सिद्धार्थ को किस बात की कमी थी? पिता शुद्धोदन ने ऐसे प्रबंध कर रखे थे कि राजकुमार को रंचमात्र भी दुःख का अनुभव ही न हो। लेकिन क्या यह सम्भव है? एक दिन सिद्धार्थ का सामना किसी रुग्ण व्यक्ति से होता है, और दूसरे दिन किसी जर्जर हो चुके बूढ़े आदमी से सामना हो गया। राजा की सब रोकथाम असफल हो गई, और एक दिन सिद्धार्थ ने यह भी देखा कि कोई मर गया है और उसकी अर्थी ले जाई जा रही है। ये तीनों घटनाएँ हमारे जीवन में बहुत सामान्य हैं, लेकिन सिद्धार्थ के लिये यह बुद्धत्व का पहला और सबसे जरूरी पाठ साबित हुआ। सिद्धार्थ दुःख के पीछे पड़ गये। वे संसार के पहले व्यक्ति हैं, जिन्होंने 'सब्बे दुःखः' कहकर दुःख को पहला आर्यसत्य बताया। दिखने में यह छोटी और सहज बात है, लेकिन यह कहने के लिये बुद्ध को कठोरतम तपस्या से गुजरना पड़ा था।

दशावतारों में एक राम ही हैं, जिनका जीवन दुःख से भरा हुआ है। मनुष्य के जीवन में जितने प्रकार के दुःख हैं, वे सब राम के चरित में घुले हुए हैं। राम चाहते, तो दुःख से पिंड छुड़ा सकते थे, लेकिन वे मनुष्य होकर दुःख के चरित्र को पूरी तरह जान लेना चाहते थे। राम ने कोई धर्म नहीं चलाया, लेकिन अपना जीवन सबके सामने खोल कर रख दिया। जिसको जो चाहिए, ले ले। दुःख के चरित्र को समझने का काम बुद्धावतार में अलग ढंग से हुआ। बुद्ध ने राज-वैभव, भोग-विलास और अपना सुखी दाम्पत्य छोड़कर संसार का परित्याग किया। उन्होंने कठिन तपस्या कर दुख पर विचार किया, दुःख के कारण पर विचार किया और दुःख की नकारात्मक प्रतिमा को भंग करने के सरल रास्ते सुझाये। वे मानवजाति के लिये नया हृदय, नया मस्तिष्क और नयी दृष्टि विकसित करने में जुट गये। उनका सम्पूर्ण जीवन एक प्रयोगशाला थी, जहाँ वे वैज्ञानिक की तरह अथक परिश्रम कर रहे थे। बुद्ध यह सिद्ध करने में सफल हुए कि दुःख है, तो उसका कारण भी है। उस कारण को जीता जा सकता है।

बुद्ध मनुष्यता से प्रेम करने वाले अनोखे भिक्षु थे। उन्होंने रूढ़ियाँ तोड़ीं। एक सच्चे शिक्षक का जीवन व्यतीत किया, और शिक्षक के तौर पर संस्मरण शैली को अपनाया। कठोर तपस्या और उपवास के अंतहीन गलियारों में से निकल कर उन्होंने जो ज्ञान अर्जित किया था, वह मानवता का दर्शन था, वह संवेदनशील हृदय की करुण पुकार थी।

बुद्ध चक्रवर्ती सम्राट के लक्षणों वाले असाधारण क्षत्रिय थे। उनके पास शाक्यवंशी राजकुल में जन्म लेने मात्र से मिलने वाले सांसारिक सुखों का अक्षय भंडार था, फिर भी उन्होंने तरुणावस्था में गृहत्याग किया, परिव्राजक संन्यासी बने और ध्यान की उस अवस्था में जा पहुँचे, जिसका अभ्यास ऋषि-मुनि वैदिककाल से ही करते चले आये थे। बुद्ध ने कभी किसी का विरोध नहीं किया। किसी के ऊपर छींटाकशी नहीं की। बुद्ध अपने विचारों को लेकर असहज भी नहीं हुए। अपने धर्म और संघ के विरुद्ध उठने वाली आवाज को उन्होंने शान्तिपूर्वक सुना, और उसे मृदुल मुस्कान से भरी हुई अपनी मौन साधना में उतार लिया।

बुद्ध प्रगति की सम्भावना पर नये सिरे से विचार करते हैं। वे तर्कों का जाल बुनने के लिये नहीं बैठते, समस्या का समाधान खोजते हैं और उसे समाज में डाल देते हैं। बुद्ध उस कड़वाहट को धो डालना चाहते हैं, जिससे मानवता लज्जित होती है, जिससे हमारी सभ्यता की चादर मैली होती है। वे समाज को एकसूत्र में बाँध कर रखने के लिये कर्म को ही बन्धु कहते थे। वे कहते थे कि आचार-विचार और संवेदनाओं से हमारे व्यक्तित्व की बुनावट होती है। हमारा संसार वैसा ही है, जैसा हमने इसे रचा है। आंतरिक शान्ति ही विजेता का सच्चा पुरस्कार है।

बुद्ध हमें इस संसार से भागने के लिये नहीं कहते, न ही आत्मा को कष्ट में डालने का परामर्श देते हैं। वे पहले वैज्ञानिक हैं जिन्होंने एक ऐसे मध्यम मार्ग का पता लगाया जो शान्ति, उच्च प्रज्ञा और निर्वाण की ओर ले जाता है। यही वह अष्टांग पथ है, जिसमें सम्यक् दृष्टि, सम्यक् संकल्प, सम्यक् वाक, सम्यक् कर्मान्त, सम्यक् आजीव, सम्यक् व्यायाम और सम्यक समाधि का समावेश है। यही बुद्ध के जीवन का सार है, यही बुद्ध का विज्ञान है, और यही वह नीतिशास्त्र है जिसे बुद्ध ने अपने जीवन में चरितार्थ किया।

इस धरती पर चारों और दुःख का साम्राज्य है, और हम ऐश्वर्य-भोग के सपने देखते-देखते बूढ़े हो रहे हैं। सब तरफ हिंसा है, अनाचार है। मानवाधिकार का हल्ला बहुत है, लेकिन मनुष्यता पल-पल तार-तार हो रही है। संवेदनाशून्य समाज में दया, करुणा और प्रेम के लिये जगह नहीं बची। विज्ञान ने चाहे जितनी उन्नति कर ली हो, लेकिन सच्चाई यह है कि अनंत तृष्णाओं के जाल में बुरी तरह फँसा हुआ आदमी मुक्ति के लिये छटपटा रहा है। वह बचाव का रास्ता तो ढूँढ रहा है, लेकिन अहंकार को नहीं छोड़ पा रहा है। जिस दिन आदमी हार मान कर अपने उजाले में लौटना चाहेगा, तो अंततः वह बुद्ध की ही शरण में होगा।

क्षेत्र संचालक के प्रयास से विख्यात अभिनेता नाना पाटेकर के सहयोग से वन्य प्राणियों के लिए जल संरक्षण कार्य

सोहागपुर। कुछ करने की ललक ही महत्वपूर्ण भूमिका निभा कर बड़े से बड़े कार्यों को क्रियान्वित किया जा सकता है। ऐसा ही सतपुडा टाइगर रिजर्व क्षेत्र संचालक राखी नंदा ने कर दिखाया है। सूत्रों ने बताया क्षेत्र संचालक राखी नंदा ने वन्य प्राणियों के लिए जल संरक्षण कार्य के लिए विख्यात अभिनेता नाना पाटेकर के नाम फाउन्डेशन पुणे महाराष्ट्र से सतपुड़ा टाइगर रिजर्व मढई में तालाब गहरी करण के लिए सम्पर्क किया। जिसमें विख्यात अभिनेता नाना पाटेकर की संस्था नाम फाउन्डेशन के द्वारा एक जेसीबी मशीन एवं चालक सहित को सतपुड़ा टाइगर रिजर्व मढई के लिए करीबन एक वर्ष छै महीने के लिए प्रदान किया है। आज दोपहर इसी संदर्भ में सहयोगी संस्था नाम फाउन्डेशन पुणे महाराष्ट्र एवं नाम सतपुडा टाइगर रिजर्व के संयुक्त प्रयास सेवन्यजीवों के लिए जल संरक्षण कार्य में तालाब गहरी करण कार्य का शुभारंभ सेहरा पर्यटन क्षेत्र में किया गया। इस अवसर पर एसडीओ सतपुड़ा टाइगर रिजर्व आशीष खोबरागड़े,पार्क रेन्जर आफीसर राहुल उपाध्याय, श्री बांगड़ जी, श्री विलाश डोंगरे, डिप्टी रेंजर मुकेश वरकड़े,वन रक्षक नरेंद्र परतें,रमाकांत श्रोती, दीपक राजपूत, दुष्यंत मीना,चौकीदार आदि की उपस्थिति में पूजा अर्चना करके कार्य का शुभारंभ किया गया।

जिला स्तरीय सड़क सुरक्षा समिति में ब्लैकस्पॉट हटाने के आवश्यक निर्देश, ताकि सड़क दुर्घटना में कमी आए: कलेक्टर श्री सोमेश मिश्रा

सोहागपुर। जिला स्तरीय सड़क सुरक्षा समिति की बैठक कलेक्टर सोमेश मिश्रा की अध्यक्षता में आयोजित की गई। इस अवसर पुलिस अधीक्षक श्री साई कृष्ण एस. थोटा, सीईओ श्री हिमांशु जैन विभिन्न विभागों के अधिकारी एवं समिति सदस्य उपस्थित थे। इस जिला स्तरीय सड़क सुरक्षा समिति की बैठक में कलेक्टर श्री सोमेश मिश्रा ने सड़क दुर्घटनाओं में कमी लाने एवं यातायात व्यवस्था को सुरक्षित बनाने हेतु संबंधित विभागों को कई महत्वपूर्ण निर्देश दिए। आपने आगे कहा कि हाईवे एवं अन्य प्रमुख मार्गों पर चिन्हित किए गए अतिक्रमण को सख्ती से हटाया जाए। इसके साथ ही जिले में चिन्हित ब्लैक स्पॉट के सुधार के लिए आवश्यक कदम उठाए हुए। तथा जहां आवश्यकता हो वहां अंडर पास निर्माण, रंबल स्ट्रिप, स्पीड ब्रेकर अथवा अन्य सुरक्षा उपाय सुनिश्चित किए जाएं। श्री मिश्रा ने आरटीओ एवं यातायात विभाग को निर्देशित किया कि जिला स्तर पर एक हेलमेट बैंक बनाया जाए। तथा इसी की तर्ज पर अनुविभाग स्तर पर भी हेलमेट बैंक तैयार किए जाएं। आम नागरिकों को हेलमेट उपयोग करने के प्रति प्रोत्साहित किया जाए जिससे सड़क दुर्घटनाओं में होने वाली मृत्यु दर को कम किया जा सके। इसके साथ ही सभी शासकीय कार्यालय में भी कार्यरत अधिकारी एवं कर्मचारी भी हेलमेट लगाने की हिदायत दी। वहीं कलेक्टर ने सीएमएचओ नर्मदापूरम को निर्देशित करते हुए कहा कि जिला स्तर पर एक निशुल्क हेल्थ कैंप आयोजित कर वाहन चालकों (ड्राइवर) की जांच की जाए। बैठक में कलेक्टर ने नियमित चेकिंग के माध्यम से वाहन चालकों को वाहन सही लेन में चलाने हेतु निरंतर जागरूकता प्रसारित करने के निर्देश दिये। उन्होंने पीएम कैशलैस एवं रहवीर योजना के संबंध में नियमित जन-जागरूकता अभियान संचालित करने के निर्देश दिए, जिससे गोल्डन आवर के दौरान सड़क दुर्घटना पीड़ितों को शीघ्र नजदीकी स्वास्थ्य केंद्रों पर उपचार मिल सके । ताकि जनहानि में कमी लाई जा सके। कलेक्टर ने मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी (सीएमएचओ) को निर्देश दिए कि कैशलेस उपचार योजना के तहत निजी अस्पतालों को आवश्यक दिशा-निर्देश जारी किए जाएं। उन्होंने मेडले पर प्रक्रिया के शत-प्रतिशत ऑनलाइन क्रियान्वयन को प्रत्येक स्वास्थ्य केंद्र में सुनिश्चित करने के निर्देश दिए तथा किसी भी प्रकरण को ऑफलाइन दर्ज न करने के लिए भी निर्देशित किया। इसके साथ ही पुलिस विभाग से समन्वय कर बीएमओ सहित अन्य स्वास्थ्य अमले को आवश्यक प्रशिक्षण देने के निर्देश भी दिए गए। कलेक्टर श्री सोमेश मिश्रा ने अंत में स्कूल एवं उच्च शिक्षा के अंतर्गत आने वाले सभी शैक्षणिक संस्थानों में सड़क सुरक्षा नियमों को लेकर नियमित जागरूकता अभियान संचालित करने के निर्देश दिए। बैठक में कलेक्टर ने स्पष्ट रूप से कहा कि सड़क सुरक्षा समिति की बैठक में प्रस्तावित बिंदुओं पर संबंधित विभाग तत्परता से कार्रवाई करते हुए समय सीमा के अंदर कंप्लायंस दर्ज किया जाए।

सोमनाथ आदिवासी संगठन के निःशुल्क सामूहिक विवाह में 23 जोड़े विवाह बंधन में बंधे

सोहागपुर। सोमनाथ किसान मजदूर आदिवासी संगठन के संयोजक के तत्वावधान में सोहागपुर से करीबन 5 किलोमीटर दूर ग्राम चारगांव में निःशुल्क सामूहिक विवाह सम्मेलन का आयोजन अनुविभागीय अधिकारी प्रियंका भल्लावी, ब्लाक मेडीकल आफीसर डॉ रेखा गौर आदि के आतिथ्य में संपन्न हुआ। इस अवसर पर विभिन्न आदिवासी क्षेत्रों के वर वधू अपने अपने परिजनों के साथ कार्यक्रम में शामिल हुए। इस अवसर पर सोमनाथ आदिवासी संगठन के संयोजक एवं पूर्व जनपद पंचायत सदस्य राजकुमार रघुवंशी ने बताया कि विगत 14 सालों से निरंतर विभिन्न क्षेत्रों में निःशुल्क कन्या विवाह कार्यक्रम करते हैं। इस साल 23 जोड़ों ने सामूहिक विवाह सम्मेलन में विवाह बंधन में बंधे। सभी वर वधुओं को समिति की तरफ से चांदी की 5रकम ,11 बर्तन, दुल्हन के लिए साड़ी प्रदान की गई। इसके अलावा सभी के लिए भोजन की व्यवस्था की गई थी। इसी अवसर पर अतिथियों अनुविभागीय अधिकारी प्रियंका भल्लावी, ब्लाक मेडीकल आफीसर डॉ रेखा आदि अतिथियों ने वर वधुओं को विवाह बंधन के प्रमाण पत्र प्रदान किए।

प्रदूषण कम करने बनाया गया प्रोजेक्ट अधूरा, लकड़ी से ही हो रहा अंतिम संस्कार

50 लाख का गैस शवदाह गृह बंद, मशीन के पार्ट्स चोरी

बैतूल। कोठीबाजार मोक्षधाम में करीब 50 लाख से बनाया गया गैस आधारित शवदाह गृह अभी तक शुरू नहीं हो सका है। जिस आधुनिक सुविधा को शहर में प्रदूषण कम करने और अंतिम संस्कार की प्रक्रिया को आसान बनाने के लिए बनाया गया था, वह सुविधा नगरपालिका अधिकारियों की लापरवाही से शोपीस बनकर रह गई है। लापरवाही का आलम यह है कि सुरक्षा व्यवस्था के अभाव में यहां लगी मशीन के कई पार्ट्स तक चोरी हो चुके हैं। दरअसल पारंपरिक लकड़ी आधारित दाह संस्कार से होने वाले प्रदूषण को कम करने और लोगों को कम समय में अंतिम संस्कार की सुविधा मिल सके, इस उद्देश्य को लेकर नगरपालिका ने कोरोना काल में गैस चलित शवदाह गृह बनाने को मंजूरी दी थी, लेकिन साढ़े चार साल गुजर जाने के बाद भी अभी तक शवदाह गृह शुरू नहीं हो पाया है। नगरपालिका अधिकारी भी इसे शुरू करने की ओर ध्यान नहीं दे रहे है। बताया गया कि उचित निगरानी के अभाव में यहां लगी मशीन के कुछ हिस्से भी चोरी हो गए हैं, जिससे इसे शुरू करना और भी मुश्किल हो गया है।

फाइल फोटो

कोरोना काल के बाद नपा ने लिया था बनाने का निर्णय – कोरोना काल के दौरान शवदाह को लेकर आई कठिनाइयों के बाद नगरपालिका ने गैस चलित शवदाह गृह बनाने का निर्णय लिया। परिषद से स्वीकृति के बाद टेंडर जारी कर कोठीबाजार मोक्षधाम में निर्माण शुरू हुआ, ठेकेदार ने बिल्डिंग तैयार करने में ही दो साल निकाल दिए। इसके बाद बिल्डिंग तैयार हुई और मशीने भी आ गई। लेकिन गैस चलित शवदाह गृह शुरू नहीं हो पाया है। लोग आज भी लकड़ियों के सहारे ही शवों का दाह संस्कार कर रहे है। जानकार बताते है कि अभी यह स्पष्ट नहीं है कि मशीन चलाएगा कौन और इसे संचालित करने की प्रक्रिया क्या होगी?

- **हर माह 50 दाह संस्कार में 250 क्विंटल लकड़ी –** कोठीबाजार मोक्षधाम शहर का प्रमुख अंतिम संस्कार स्थल है, जहां प्रतिमाह करीब पचास से अधिक शवों का दाह संस्कार किया जाता है।एक बार में करीब 5 क्विंटल लकड़ी का उपयोग होता है। ऐसे में हर माह करीब 250 क्विंटल लकड़ी उपयोग होती है।इससे न केवल पर्यावरण प्रदूषण बढ़ रहा है, बल्कि आम लोगों पर आर्थिक बोझ भी पड़ता है। लेकिन इस पर ध्यान नहीं दिया रहा है।जागरूक नागरिकों ने बताया बारिश में अंतिम संस्कार के दौरान परेशानी होती है।गीली लकडियों से कई बार चिता ठीक से नहीं जल पाती और शवदाह में घंटों इंतजार करना पड़ता है।उन्होंने कहा नगर पालिका से गैस शवदाह गृह को जल्द शुरू करने की मांग की जा चुकी है।करीब चार–पांच साल से इसका कार्य चल रहा है, लेकिन यह शुरू नहीं हो सका है।
- **लकड़ी से दाह संस्कार महंगा, समय भी ज्यादा –** परंपरागत शवदाह के लिए चार से पांच क्विंटल लकड़ी लगती है, जिस पर चार से साढ़े चार हजार रुपए तक खर्च आता है।गरीब परिवारों के लिए यह बड़ी चुनौती है।बारिश में गीली लकड़ी के कारण दाह संस्कार में कई घंटे लग जाते हैं, जबकि गैस चलित शवदाह गृह में दो एलपीजी सिलेंडर के उपयोग से मात्र 30 मिनट में दाह संस्कार संभव हो जाता है। इसके अलावा खर्च भी कम और चिमनी के जरिए धुएं को फिल्टर कर बाहर छोड़ा जा सकता है।जिससे प्रदूषण में कमी आयेगी।लेकिन लकड़ी पर निर्भरता खत्म करने और पर्यावरण प्रदूषण कम करने का यह प्रयास लेटलतीफी का शिकार हो गया है।

इनका कहना है – इस बारे में मुझे जानकारी नहीं है। गैस शवदाह गृह के संबंध में जानकारी ली जाएगी। जो भी परेशानी आ रही है, इसे दूर कर शुरू कराने के प्रयास करेंगे।

नवनीत पाण्डेय, सीएमओ, नगर पालिका बैतूल

शादी समारोह में डीजे वाहन भीड़ में घुसा

दूल्हे के पेट से गुजरा टायर, कई घायल

बैतूल। घोड़ाडोंगरी में मुख्यमंत्री कन्यादान विवाह समारोह के दौरान गुरुवार दोपहर बारात निकलते समय एक डीजे वाहन अनियंत्रित होकर दूल्हे और बारातियों पर चढ़ गया, जिससे कई लोग घायल हो गए। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, बारात कार्यक्रम स्थल से निकल रही थी। ढलान पर उतरते समय डीजे वाहन अचानक न्यूट्रल हो गया या उसके ब्रेक फेल हो गए। ड्राइवर वाहन पर नियंत्रण नहीं रख सका और गाड़ी सीधे बारातियों की भीड़ में जा घुसी। जनपद अध्यक्ष राहुल उइके ने बताया कि हादसा संभवत- ब्रेक फेल होने के कारण हुआ है और अधिकांश लोगों को मामूली चोटें आई हैं। हादसे में मुलताई क्षेत्र के भुवान खापा निवासी दूल्हा अनुल सरोदे (25) और उसका चचेरा भाई राहुल (27) गंभीर रूप से घायल हो गए। बताया जा रहा है कि वाहन का टायर दूल्हे के पेट के ऊपर से गुजर गया, जबकि राहुल के पैर में गंभीर चोट (फ्रैक्चर) आई है। एक अन्य बाराती भी घायल हुआ है।सभी घायलों को तुरंत 108 एम्बुलेंस की मदद से जिला अस्पताल बैतूल पहुंचाया गया, जहां उनका इलाज जारी है। फिलहाल उनकी हालत स्थिर बताई जा रही है। हादसे के बाद समारोह में अफरा-तफरी मच गई। स्थिति ऐसी हो गई कि दुल्हन पक्ष को कार्यक्रम बीच में ही छोड़कर अपने गांव सलैया लौटना पड़ा। घटना की सूचना मिलते ही प्रशासन और पुलिस मौके पर पहुंची और मामले की जांच शुरू कर दी गई है। इस संबंध में अभी तक कोई एफआईआर दर्ज नहीं की गई है। समारोह के दौरान घोड़ाडोंगरी विधायक गंगा बाई भी मौके पर मौजूद थीं।

एसडीएम डॉ. सिंह ने की पेयजल आपूर्ति की समीक्षा

बैतूल। एसडीएम बैतूल डॉ.अभिजीत सिंह ने गुरुवार को आयोजित बैठक में पेयजल आपूर्ति की समीक्षा की। उन्होंने कहा कि पेयजल आपूर्ति में किसी भी तरह की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। उन्होंने पानी की स्थिति की समीक्षा करते हुए खराब हैंडपंप और नल-जल योजनाओं को तत्काल दुरुस्त करने के निर्देश दिए। उन्होंने अधिकारियों से कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों में पानी की समस्या पर विशेष नजर रखें और शिकायत मिलते ही मौके पर पहुंचकर समाधान करें। साथ ही नियमित मॉनिटरिंग कर यह सुनिश्चित किया जाए कि आम लोगों को पानी के लिए परेशान न होना पड़े। उन्होंने कहा कि गर्मी के मौसम को देखते हुए वैकल्पिक व्यवस्था भी तैयार रखें, ताकि किसी भी स्थिति में पेयजल आपूर्ति बाधित न हो। बैठक में जनपद बैतूल एवं चिचोली के सहायक यंत्री तथा उपयंत्री, पीएचई के अधिकारी उपस्थित थे।

करबला घाट पर निर्माण कार्य शुरू, वैकल्पिक मार्ग से निकलेगा ट्रैफिक

बैतूल। बैतूल-खेड़ी मार्ग पर करबला घाट स्थित माचना नदी के पास निर्माण कार्य के चलते यातायात व्यवस्था में बदलाव किया गया है। यहां मुख्य पुल से करीब 100 मीटर शहर की ओर नाले पर बनी संकरी पुलिया को हटाकर 4-लेन माइनर ब्रिज बनाया जाएगा। प्रस्तावित ब्रिज की चौड़ाई 18.5 मीटर और लंबाई 15 मीटर होगी। एसडीओ ब्रिज गिरीश हिंगवे ने जानकारी देते हुए बताया कि निर्माण कार्य 6 अप्रैल 2026 से शुरू है, जो आगामी दो महीने तक चलेगा। इस दौरान हल्के वाहनों को पुलिया के किनारे बनाए गए डायवर्जन मार्ग से निकाला जाएगा, जबकि भारी वाहनों का इस मार्ग पर प्रवेश पूरी तरह प्रतिबंधित रहेगा। उन्होंने बताया कि भारी वाहनों को इटारसी मार्ग और बैतूल बाजार मार्ग से होते हुए सीधे नेशनल हाईवे पर डायवर्ट किया जाएगा।

चिचोली के दूरस्थ अंचल वन ग्राम बालाडोंगरी में आयोजित शिविर में 145 मरीजों का किया उपचार

बैतूल। सीएमएचओ डॉ मनोज कुमार हुरमाड़े एवं उप वनमंडलाधिकारी के मार्गदर्शन में विकासखंड चिचोली के दूरस्थ अंचल के वन ग्राम बालाडोंगरी में 30 अप्रैल को निशुल्क स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया। जिला चिकित्सालय बैतूल से स्त्री रोग विषेषज्ञ डॉ. वंदना धाकड तथा दंतरोग विषेषज्ञ डॉ दिशा हिरानी खण्ड चिकित्सा अधिकार डॉ अभिनव शुक्ला, आरबीएसके डॉ रंजीत गोडाहे द्वारा शिविर में आए मरीजों की जांच कर उपचार किया गया। शिविर में गर्भवती महिलाओं तथा बच्चों की हिमोग्लोबिन, सिकल सेल, बीपी-शुगर की जांच कर स्वास्थ्य सलाह दी गई। शिविर में वन विभाग से श्री सुधीर कुमार रेंजर तथा श्री शिवचरण बाथम डिप्टी रेंजर वन विभाग तथा स्वास्थ्य विभाग के सहयोग से स्वास्थ्य परीक्षण सह-जागरूकता शिविर वनांचल में निवास करने वाले ग्रामीणों का स्वास्थ्य परीक्षण किया गया। शिविर में 145 महिला, पुरुष तथा बच्चों का उपचार किया गया। शिविर में स्वास्थ्य विभाग से एकनाथ सिंग ठाकुर बीपीएम, अनिल कटारे बीईई, गजराज सिंह रघुवंशी फार्मासिस्ट, विजय माकोडे आरबीएसके फार्मासिस्ट, फुलसिंग उइके सेक्टर सुपरवाइजर, लक्ष्मी पवार सीएचओ, मेघराज यादव लेब टेक्निसियन, धारासिंग टाटीसर एमपीडब्ल्यू, श्रीमती सनोती इवने एएनएम, शालू शिवनकर आशा सहयोगी एवं आशा कार्यकर्ता एवं वन विभाग से वन रक्षक एवं सहयोगी कर्मचारी, ग्रामीण जन उपस्थित रहे।

जिले में संचालित निजी क्लीनिक, लैब, ब्लड कलेक्शन सेंटर का गठित जिला स्तरीय दल ने किया औचक निरीक्षण

बैतूल। जिले में संचालित निजी क्लीनिक, लैब, ब्लड कलेक्शन सेंटर का गठित जिला स्तरीय दल द्वारा औचक निरीक्षण किया गया। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ मनोज कुमार हुरमाडे ने बताया कि 28 अप्रैल को गठित दल जिसमें जिला स्वास्थ्य अधिकारी डॉ राजेश परिहार एवं खंड चिकित्सा अधिकारी सेहरा डॉ केदार सिंह एवं चिकित्सा अधिकारी डॉ संजय बडोदिये सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र घोड़ाडोंगरी द्वारा सारणी में क्लीनिक, लेब, ब्लड कलेक्शन सेंटर का औचक निरीक्षण किया गया। सांई क्लीनिक के निरीक्षण के दौरान संचालक डॉ श्याम बी. घोटकर बीएएमएस अपने क्लीनिक पर एलोपैथिक पद्धति से मरीजों का उपचार करते एवं स्वयं के पर्चे में भी एलोपैथिक दवाइयां लिखते पाए गए। साथ ही क्लीनिक में ही एलोपैथिक दवाओं का स्टोर पाया गया। गठित दल द्वारा दवाइयों की जप्ती कर आवश्यक हिदायत दी गई। लाईफ केयर पैथोलॉजी लेब संचालक श्री शेख सरीख का निरीक्षण के दौरान पाया कि सेम्पल कलेक्शन बिना किसी प्रोटोकॉल किया जा रहा था। लैब संचालन के लिए अनिवार्य दस्तावेज पूर्ण नहीं होने के कारण लेब को बंद किया गया। अदिति सेम्पल कलेक्शन संचालक श्रीमती पूजा बर्डे के कलेक्शन सेंटर निरीक्षण के दौरान पाया कि संचालन के लिए नियमानुसार अनुमति नहीं ली गई है एवं आवश्यक दस्तावेज नहीं पाए गए। साथ ही लेब में बायोमेडिकल वेस्ट का निष्पादन नार्मल डस्टबिन में किया जा रहा था। अवैध ब्लड कलेक्शन सेंटर को तत्काल बंद करने के निर्देश दिये गये। 30 अप्रैल को जिला स्वास्थ्य अधिकारी डॉ राजेश परिहार, जिला टीकाकरण अधिकारी डॉ प्रांजल उपाध्याय, खंड चिकित्सा अधिकारी डॉ केदार सिंह द्वारा वर्धमान क्लीनिक, चैतन्य हॉस्पिटल एवं सिम्स अस्पताल बैतूल का औचक निरीक्षण किया गया। चैतन्य हॉस्पिटल का पंजीयन नहीं किया गया था। उन्हें शीघ्र पंजीयन के लिए आवेदन करने के निर्देश दिये एवं कारण बताओ नोटिस जारी किये जा रहे हैं। वर्धमान क्लिनिक के निरीक्षण के दौरान फायर सेफ्टी बीएमडब्ल्यू के दस्तावेज पूर्ण पाये गये। सेवा दे रहे चिकित्सकों की अनुमति प्राप्त करने के निर्देश दिए गए। सिम्स अस्पताल के निरीक्षण के दौरान चिकित्सक डॉ श्याम सोनी पाए गए। क्लीनिक में चिकित्सा कार्य करने के लिए उल्लेखित चिकित्सकों से उनकी सहमति प्राप्ति के निर्देश दिए गए। निरीक्षण के दौरान अस्पताल का संचालन विधिवत रूप से किया जा रहा था। पाई गई कमियों को नियमानुसार पूर्ण करने के निर्देश जारी किए गए।

सामूहिक उपनयन संस्कार संपन्न

उपनयन संस्कार ज्ञान और आत्मविकास की ओर अग्रसर करता है: ब्रह्मचारी शिवतेज जी

बैतूल। वैदिक परंपराओं के संरक्षण एवं प्रसार के उद्देश्य से वैदिक धर्म संस्थान ट्रस्ट (द आर्ट ऑफ लिविंग) द्वारा बैतूल में चार दिवसीय सामूहिक उपनयन संस्कार का सफल एवं भव्य आयोजन श्री श्री विला, सुयोग कॉलोनी में किया गया। इस अवसर पर 14 बालक बालिकाओं ने वैदिक रीति-रिवाजों के अनुसार यज्ञोपवीत धारण कर ब्रह्मचर्य जीवन में प्रवेश किया। इस कार्यक्रम का संचालन, बैंगलोर आश्रम से पधारे ब्रह्मचारी शिवतेज जी एवं पंडित शुभम तिवारी के सान्निध्य में विधिवत मंत्रोच्चारण और वैदिक अनुष्ठानों के साथ सम्पन्न हुआ। पूरे वातावरण में वैदिक मंत्रों की गूंज और आध्यात्मिक ऊर्जा का विशेष अनुभव हुआ। उपनयन संस्कार के माध्यम से बालकों को गायत्री मंत्र की दीक्षा दी गई तथा उन्हें जीवन में अनुशासन, संस्कार और आध्यात्मिकता के महत्व से अवगत कराया गया। इस मौके पर ब्रह्मचारी शिवतेज जी ने कहा कि उपनयन संस्कार केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि यह जीवन को सही दिशा देने का एक महत्वपूर्ण कदम है, जो व्यक्ति को ज्ञान और आत्म विकास की ओर अग्रसर करता है। यज्ञोपवीत धारण के पश्चात प्रतिदिन संध्या वंदन व अग्नि कार्य का अभ्यास कराया गया। जिससे वे शुद्ध उच्चारण के साथ प्रतिदिन घर में भी वंदन कर सके। इस कार्यक्रम का आयोजन बैतूल के आर्ट ऑफ लिविंग के शिक्षकों डॉ.अलका पांडे, कल्पना शाह, अनिल शर्मा, निरजा शर्मा, डॉ.निहारिका भावसार एवं जयश्री शाह एवं तीर्थंकर जैन द्वारा उत्कृष्ट व्यवस्था के साथ किया गया। जिसकी अभिभावकों एवं उपस्थित जनसमूह ने आयोजन की सराहना की। कार्यक्रम के अंत में प्रसाद वितरण किया गया। इस प्रकार के आयोजन समाज में भारतीय संस्कृति एवं संस्कारों के प्रति जागरूकता बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

मजदूर दिवस विशेष
चित्रा माली
सहायक प्रोफेसर,गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग,महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विवि क्षेत्रीय केंद्र, कोलकाता

मजदूर संघर्षों के अंत का मिथक और यथार्थ

1917 का वर्ष भारत और महात्मा गांधी के सत्याग्रह के प्रयोग के लिए महत्वपूर्ण साबित हुआ। दक्षिण अफ्रीका में गांधी सत्याग्रह के प्रयोग कर चुके थे, और सफल भी हो चुके थे, लेकिन भारत की आवाम ने सिर्फ इन प्रयोगों के बारे में सुना था। गांधी जी को भी सत्याग्रह के प्रयोग करने का इतनी जल्दी अवसर मिलेगा यकीन नहीं था। 1917 में सत्याग्रह के तीन प्रयोग उनके द्वारा किए गए। पहला चंपारण सत्याग्रह दूसरा खेड़ा सत्याग्रह और तीसरा अहमदाबाद मिल मजदूर आंदोलन। पहला और दूसरा सत्याग्रह किसानों की जायज मांगों के लिए किया जा रहा था वहीं तीसरे आंदोलन के केंद्र में मजदूर थे और उनकी भी जायज और वाज़िब मांगे थी। गुजरात में इस अतिवृष्टि के कारण किसान और मजदूर दोनों ही अत्यधिक प्रभावित हुए थे। अतिवृष्टि ने फसलों को तबाह कर दिया था जिसके कारण किसान लगान कर अदा नहीं कर पा रहे थे और शहरों में अधिक पानी की वजह से प्लेग की बीमारी फैल गई थी। प्लेग की वजह से शहरों में अफरा-तफरी मच गई और तेजी से लोगों का पलायन होने लगा। कपड़ा मिल मालिक इस पलायन खासकर मजदूरों के पलायन से चिंतित हो उठे। अगर मजदूर वापस अपने गांव लौट जाएंगे तो कपड़े का उत्पादन कैसे होगा? मजदूरों के पलायन को रोकने के लिए मिल मालिकों ने 75 प्रतिशत 'प्लेग बोनस' देने का प्रस्ताव रखा। यह बोनस सभी श्रेणी के मिल मजदूरों को मिलना था। इस बोनस की बदौलत अहमदाबाद मिल में उत्पादन जारी रहा जबकि अन्य शहरों में उत्पादन बंद हो गया। अहमदाबाद शहर में 106000 तकुए (स्पिंडल) काम कर रहे थे जो 22000 करघों को आपूर्ति दे रहे थे। कपड़े की बढ़ती हुई मांग की आपूर्ति के लिए मिल में एक की जगह दो पालियों में कार्य होने लगा। जनवरी 1918 तक प्लेग का प्रकोप खत्म हो गया था। मिल मालिकों ने मजदूरों को प्लेग बोनस बांटना बंद कर देने का निर्णय लिया। जब मजदूरों ने मंहगाई का हवाला देते हुए मिल मालिकों से शिकायत की तो उन्होंने सिर्फ 20 प्रतिशत की वृद्धि करने की बात की। ऐसा सभी श्रेणी के मजदूरों के लिए किया गया। इसे मजदूरों ने स्वीकार नहीं किया, खासकर बुनकरों ने कहा कि यह उनकी उम्मीदों के विपरीत बहुत ही कम है। मिल मालिकों ने अपने 20 प्रतिशत वृद्धि के मूल प्रस्ताव से आगे बढ़ने पर इनकार कर दिया। जिससे दोनों पक्ष अपनी-अपनी बात पर अड़ गए। मिल मालिकों का प्रतिनिधित्व अंबालाल साराभाई कर रहे थे और मजदूरों का प्रतिनिधित्व उनकी बहन अनसुया साराभाई कर रही थी। यह वर्ग संघर्ष एक पारिवारिक संघर्ष भी था। यह भारत या संभवत: समूचे विश्व के मजदूर-पूंजीपति संबंधों के इतिहास में अभूतपूर्व था। मिल मजदूर अपनी मजदूरी में 50 प्रतिशत की वृद्धि चाहते थे लेकिन गांधी जी ने मजदूरों को 35 प्रतिशत वृद्धि पर मना लिया था। लेकिन जब मिल मालिकों ने 35 प्रतिशत मजदूरी बढ़ाने से इनकार कर दिया तो गांधी जी और अनसुया साराभाई ने मजदूरों से काम रोक देने के लिए कहा। 22 फरवरी 1918 को मिल मजदूरों की हड़ताल शुरू हो गई। हर दोपहर साबरमती के किनारे बबूल के एक विशाल वृक्ष के सामने मजदूरों की बैठक होती थी। मजदूरों की हड़ताल से अहमदाबाद का मध्यम वर्ग चिंतित और आशंकित था। उन्हें डर था कि नाराज मजदूर कहीं सड़कों पर उपद्रव न करने लगें, चोरी न करने लगें और दंगा -फसाद पर उतारू न हो जाएं लेकिन मजदूरों के द्वारा ऐसा कुछ भी नहीं किया गया वे अहिंसक बने रहे और उसी बबूल के वृक्ष के नीचे प्रतिदिन गांधी जी से मिलते रहे। गांधी जी के बोलने के बाद मजदूर गाना गाने लगते, वे गीत उस मौके के लिए ताजा-ताजा तैयार किए गए होते थे। इन सभाओं में पर्चों का वितरण भी किया जाता था जिन्हें गांधी जी, अनसुया साराभाई और मजदूर नेता शंकरलाल बैंकर के द्वारा तैयार किया जाता था। एक पर्चे में मजदूरों से जुए से दूर रहने के लिए कहा गया था और सलाह दी गई थी कि वे अपने समय का सदुपयोग पढ़ाई करने में और अपने घरों की मरम्मत करने में करें। दूसरे पर्चे में दक्षिण अफ्रीका में सत्याग्रहियों और खदान व बागान मजदूरों के द्वारा किए गए बलिदानों को याद किया गया। तीसरे पर्चे में उनसे 'हिंदू, मुस्लिम, गुजराती, मद्रासी, पंजाबी आदि के भेदभाव से ऊपर उठने की अपील की गई...'। क्योंकि सार्वजनिक कार्यों में हम एक होते हैं या हमें एक जैसा बनने की इच्छा रखनी चाहिए। चौथे पर्चे में मिल मालिकों की निर्दयी रवैये की आलोचना की गई और कहा गया कि 'हम लोगों ने विश्वासपूर्वक उम्मीद की थी कि गुजरात की इस पवित्र भूमि के इस औद्योगिक शहर के जैन और वैष्णव मिल-मालिक कभी भी अपने श्रमिकों की पराजय में अपनी जीत का अनुभव नहीं करेंगे और जानबूझकर उनके वाजिब हक से कम उनका बकाया नहीं देंगे'। मजदूरों की हड़ताल तीसरे सप्ताह में पहुंच गई थी जिससे उनका दिल बैठने लगा था और गांधी जी की सभा में आने वाले मजदूरों की संख्या भी लगातार घटती जा रही थी। पहले जहां कई हजार मजदूर रोज आते थे वहीं अब उनकी संख्या कुछ सैकड़ा रह गई थी। कुछ मजदूरों ने मिल मालिकों के प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया था और वे वापस काम पर चले गए थे। गांधी जी ने 15 मार्च 1918 को मजदूरों के हित में उपवास करने का निर्णय लिया। यह पहला अवसर था जब वे किसी व्यापक सामाजिक या राजनीतिक मकसद के लिए उपवास पर जा रहे थे। गांधी जी के उपवास ने मिल मालिकों पर दबाव बढ़ा दिया था।

अंबालाल और उनके सहयोगी अब स्थिति को बिगड़ने नहीं देना चाहते थे। उपवास के चौथे दिन यानी 18 मार्च को मिल मालिक एक तीसरे पक्ष के समक्ष समझौते के लिए राजी हो गए। मजदूरों और मिल मालिकों के इस संघर्ष की मध्यस्थता प्रोफेसर आनंदशंकर ध्रुवा के द्वारा की गई। समझौते के तहत मजदूरों को पहले दिन 35 प्रतिशत ज्यादा मजदूरी मिलना तय हुआ और उसके दूसरे दिन से लेकर निर्णय आने तक 20 प्रतिशत ज्यादा मजदूरी मिलना तय किया गया। प्रोफेसर ध्रुवा ने अगस्त 1918 को अपना निर्णय सुनाया जो मजदूरों के पक्ष में था जिसमें उनकी मजदूरी में 35 फीसदी इजाफा किया गया था जिसे पिछले दिनों से लागू किया गया था। भारत के मजदूर वर्ग की पहली राजनीतिक हड़ताल 23 से 28 जुलाई 1908 बंबई में बाल गंगाधर तिलक को मिली 6 वर्ष कारावास की सजा के विरुद्ध की गई थी इसमें मजदूरों के साथ आम जनता भी शामिल हुई थी। मजदूरों की हड़तालों का एक लंबा इतिहास है जिसमें कभी उन्हें सफलता मिली और कभी हड़तालें मिलों के बंद होने का कारण भी बनी। मजदूरों की सबसे अधिक हड़तालें कलकत्ता और बंबई में हुई। 1974 में भारत भर के रेलवे कर्मचारियों की विशाल हड़ताल ने उनके वेतनमान तय करने के लिए रेलवे वेतन बोर्ड की स्थापना के लिए रेलवे को बाध्य किया और इसी के फलस्वरूप रेलवे कर्मचारियों के वेतन के वृद्धि हुई। 1982 बंबई में दत्ता सामंत के नेतृत्व में 60 से अधिक कपड़ा मिलों के लगभग 2.5 लाख मजदूरों ने बोनस, काम के घंटे कम करने, वेतन वृद्धि और बेहतर स्थितियों की मांग के लिए अनिश्चित कालीन हड़ताल की जो बाद में मिलों के बंद होने का कारण भी बनी। इन कपड़ा मिलों के बंद होने और उसके परिणामस्वरूप मजदूरों के जीवन और परिवार में मची उथल-पुथल को कई फिल्मों में भी दर्शाया गया है। कलकत्ता में भी कई जूट मिलों और कारखानों को बंद कर दिया गया था। कोरोना काल में भी मजदूरों ने पलायन किया और फिर वे वापस शहरों में नहीं लौटे जिससे कारण कई मिलों और कारखानों को बंद करना पड़ा। आज के समय में मानवीय श्रम को तकनीकी ने प्रतिस्थापित कर दिया है जिसके चलते कम से कम मानवीय श्रम या कहें मजदूरों की आवश्यकता होती और वो भी स्किल्ड और प्रशिक्षित। ये मजदूर अपने अधिकारों के लिए किसी भी प्रकार का संघर्ष भी करने की स्थिति में नहीं है अगर यह किसी प्रकार का विरोध करते हैं तो इन्हें बड़ी आसानी से काम से निकाला जा सकता है और इनकी जगह लेने के लिए मजदूरों की एक नई फौज तैयार है। अभी हाल ही में नोएडा और गुड़गांव की विभिन्न विनिर्माण इकाइयों में चल रहे औद्योगिक आंदोलन में 40 हजार से अधिक मजदूरों ने हिस्सा लिया है, वे कम वेतन, बढ़ती महंगाई और मजदूरों की सुरक्षा से जुड़े कानूनों को ठीक से लागू न किए जाने का विरोध कर रहे है। प्रशासन ने इसके जवाब में दमनात्मक कार्यवाही भी की है। 300 से अधिक प्रमुख कलाकारों और बुद्धिजीवियों ने दिल्ली एनसीआर में औद्योगिक श्रमिकों के साथ निष्पक्ष व्यवहार की मांग करते हुए एक अर्जी पर हस्ताक्षर किए हैं। जिसमें काम करने और रहने की असहनीय स्थितियों के खिलाफ विरोध करने के मजदूरों के अधिकार का समर्थन किया गया है। यह अभियान एक वर्ग तक सीमित न रहे इसलिए आवश्यक है कि इस मजदूर दिवस पर हम सभी मजदूरों के अधिकारों और सुरक्षा के लिए प्रतिबद्ध हो कार्य करें और साथ ही औद्योगिक घरानों और प्रशासन के ह्रदय परिवर्तन के लिए सत्याग्रह भी करें।

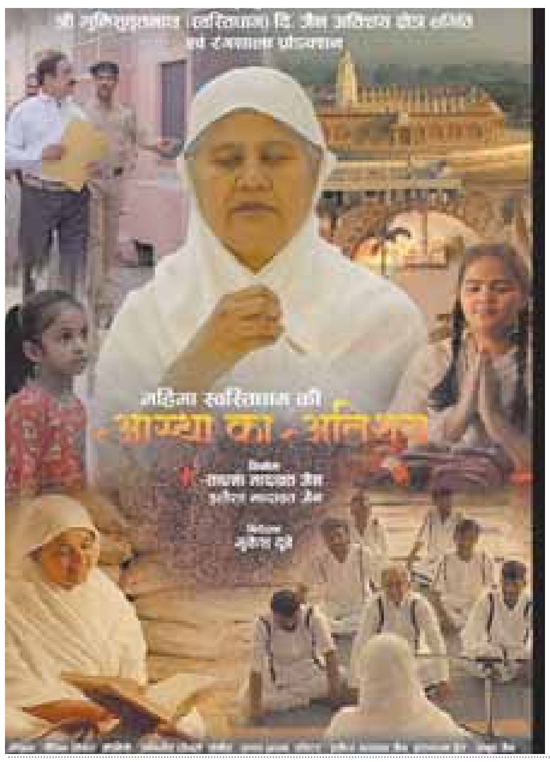

सिनेमा के जरिए दिखेगी आस्था की शक्ति, महिमा स्वस्तिधाम की फिल्म का पोस्टर रिलीज

इंदौर। भारतीय संस्कृति और जैन धर्म के गौरवशाली इतिहास को फिल्मी पर्दे पर उतारने की एक नई पहल की गई है। रंगशाला प्रोडक्शन के बैनर तले बनी नई धार्मिक फिल्म महिमा स्वस्तिधाम की - आस्था का अतिशय का भव्य पोस्टर हाल ही में जारी किया गया। यह पोस्टर राजस्थान के चंद्रवाचल तीर्थ, प्यावड़ी में गुरु मां स्वस्तिभूषण जी माताजी के 30वें दीक्षा दिवस के शुभ अवसर पर लॉन्च किया गया।यह फिल्म मुख्य रूप से 20वें तीर्थंकर श्री 1008 मुनिसुव्रतनाथ भगवान के स्वस्तिधाम (जहाजपुर) में प्रकट होने से जुड़ी अटूट श्रद्धा और चमत्कारी प्रसंगों को दर्शाती है। इसके साथ ही, दर्शकों को पूज्य स्वस्तिभूषण माताजी के प्रेरणादायी जीवन के अनछुए पहलुओं को भी करीब से देखने का मौका मिलेगा।

फिल्म से जुड़ी खास बातें-जैन धर्म की आध्यात्मिक विरासत और तपस्या की शक्ति को आम जन तक पहुंचाना है। फिल्म की शूटिंग मुख्य रूप से जहाजपुर सहित राजस्थान के कई ऐतिहासिक और धार्मिक शहरों में की गई है। फिल्म का निर्देशन मुकेश दुबे ने किया है, जबकि सिनेमेटोग्राफी अनिकेत द्वारा और संपादन इलैशा जैन द्वारा किया गया है। निकिता लविना, महावीर काला, हिमांशु, यथार्थ पाटनी, पारस जैन पार्श्वमणि, सुहानी मधु वेद, प्रकाश देशमुख और मनीष काला जैसे कलाकारों ने इसमें अपनी भूमिकाएं निभाई है। निर्देशक मुकेश दुबे ने बताया कि यह केवल एक फिल्म नहीं बल्कि भावनाओं को पर्दे पर उतारने की एक कोशिश है। वहीं फिल्म की संपादक इलैशा जैन ने इस प्रोजेक्ट को एक आध्यात्मिक यात्रा बताया, जहां हर दृश्य में पवित्रता और संवेदनाओं का ध्यान रखा गया है। यह फिल्म न केवल धार्मिक दर्शकों को पसंद आएगी, बल्कि अपनी बेहतरीन प्रस्तुति और संगीत से हर किसी के दिल को छू लेगी।

एयरपोर्ट शहर का आइना, ट्रैफिक और अतिक्रमण हटना जरूरी : आलोक शर्मा

राजाभोज एयरपोर्ट पर राजाभोज की प्रतिमा होगी स्थापित

भोपाल। भोपाल सांसद श्री आलोक शर्मा की अध्यक्षता में एयरपोर्ट एडवाइजरी कमेटी की दूसरी बैठक संपन्न हुई। सांसद श्री आलोक शर्मा ने एयरपोर्ट के बाहर के सौंदर्यीकरण पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि एयरपोर्ट किसी भी शहर का आईना होता है। राजाभोजअंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट के बाहर मेनरोड पर से बेतरतीब ट्रैफिक और अतिक्रमण हटना चाहिए। जगह-जगह ठेले और गुमठी वाले खड़े हो जाते हैं जिससे जाम की स्थिति बनती है। प्राइवेट टेक्सी वाले भी सवारी लेने के अराइवल तक आकर सवारी लेने आवाज लगाते हैं, इससे आगंतुकों में शहर की छवि अच्छी नहीं जाती।

इस अवसर पर सांसद शर्मा ने एयरपोर्ट के बाहर के सौंदर्यीकरण के लिए पीडब्ल्यूडी और टूरिज्म विभाग के साथ समन्वय करके योजना बनाने के लिए निर्देशित किया। साथ ही नगर निगम और पुलिस अधिकारियों को अतिक्रमण हटाने के लिए कहा। बैठक में कलेक्टर प्रियंक मिश्रा ने सुझाव दिया कि एयरपोर्ट का नाम राजाभोज के नाम पर है, तो राजाभोज की प्रतिमा यहां लगाई जा सकती है। इस पर बैठक की अध्यक्षता कर रहे सांसद आलोक शर्मा ने एयरपोर्ट डायरेक्टर रामजी अवस्थी को निर्देशित किया कि केंद्र से इसकी आवश्यक परमीशन लेने और उचित स्थान पर प्रतिमा स्थापित करने की कार्यवाही प्रारंभ करें। एडवाइजरी कमेटी के सदस्य सुनील जैन 501 ने खानपान व्यवस्था सुदृढ़ करने का सुझाव दिया। वहीं सदस्य मनोज मीक ने भोपाल से अन्य शहरों की कनेक्टिविटी को लेकर अपने सुझाव दिये। पूर्व एयरपोर्ट डायरेक्टर रामजी अवस्थी ने सांसद आलोक शर्मा को प्रेजेंटेशन के माध्यम से उपलब्धियां गिनाते हुए बताया कि वर्तमान में राजाभोज अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट कस्टम ड्यूटी और इमिग्रेशन की सुविधाओं के साथ 24X 7 संचालित है। यहां 10 से 12 एयरक्राफ्ट यहां पार्क होते हैं। कैटेगरी 7 की सुविधा के साथ सफिशिएंट मैनपावर और 30 किलोमीटर की बाउंड्री वॉल, सुरक्षा और संरक्षा की दृष्टि से एयरपोर्ट पर सारी सुविधाएं उपलब्ध है।

राजाभोज एयरपोर्ट आठ शहरों से कनेक्ट है। जिसमें दिल्ली के लिए डेली आठ फ्लाइट ऑपरेट हो रही हैं। राजाभोज एयरपोर्ट को कस्टमर सेटिस्फेक्शन में नंबर 1 के साथ ही बेस्ट डॉमेस्टिक एयरपोर्ट अवार्ड मिल चुका है। एयरपोर्ट को कैट 2 श्रेणी में अपग्रेड किया गया है, अब लोएस्ट विजिबिलिटी में भी फ्लाइट ऑपरेट करते हैं। नया फायर स्टेशन बनाया है। डायवर्सन लेने में राजाभोज एयरपोर्ट इंडिया में तीसरे नंबर पर है। इलेक्ट्रिक व्हीकल को प्रमोट किया जा रहा है। 'डीजी यात्रा' की सुविधा, यूनिक लाइब्रेरी, किड्स जोन, प्रत्येक चेयर पर चार्जर की सुविधा, नए टॉयलेट्स, पीने के पानी के लिए टच स्क्रीन वाले वाटर कूलर इंस्टॉल किए गए हैं। एयरपोर्ट पर यात्रियों की सुविधा के लिए चार्जर के साथ रिक्लाइन चेयर्स की व्यवस्था की गई है।

फूड जोन की शुरुआत

संसद आलोक शर्मा ने एयरपोर्ट पर फूड जोन के तहत खोले गए फुल्की के स्टाल का फीता काटकर शुभारंभ किया। यात्रियों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए डोसा, उपमा, समोसा, चाय-काफी का भी स्टाल शुरू किया गया है। इस अवसर पर एयरपोर्ट डायरेक्टर रामजी अवस्थी, सीआईएसएफ कमांडेंट अंकित दुबे, एडवाइजरी कमेटी के सदस्य सुनील जैन 501, मनोज मीक सहित डीसीपी मलकीत सिंह, अभय सिंह, नगर निगम अपर आयुक्त मुकेश शर्मा, एयर इंडिया स्टेशन मैनेजर निरंजन सेन, इंडिगो स्टेशन मैनेजर तेजस लालानी, सहित अधिकारीगण उपस्थित रहे।

बालाघाट नर्सिंग छात्राओं के पंजीयन संकट पर कांग्रेस का सख्त रुख

8 दिवस में समाधान नहीं हुआ तो काउंसिल कार्यालय का होगा घेराव : जीतू पटवारी

भोपाल। आज प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष श्री जीतू पटवारी ने बालाघाट की नर्सिंग छात्राओं के पंजीयन (रजिस्ट्रेशन) से जुड़ी गंभीर समस्या को लेकर मध्य प्रदेश नर्सिंग रजिस्ट्रेशन काउंसिल के चेयरमैन को अवगत कराया।

उन्होंने छात्राओं के भविष्य से जुड़े इस संवेदनशील विषय पर तत्काल संज्ञान लेने की मांग की।

श्री पटवारी ने स्पष्ट चेतावनी देते हुए कहा कि यदि आगामी 8 दिवस के भीतर छात्राओं की समस्या का समाधान नहीं किया गया, तो कांग्रेस पार्टी छात्राओं के साथ काउंसिल कार्यालय का घेराव करेगी और बड़े स्तर पर आंदोलन किया जाएगा।

उन्होंने कहा कि प्रदेश की छात्राओं के भविष्य के साथ किसी भी प्रकार का खिलवाड़ बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। जिन छात्राओं ने अपनी पढ़ाई पूर्ण कर ली है, उनका समय पर पंजीयन होना उनका अधिकार है। सरकार और प्रशासन की यह जिम्मेदारी है कि उनकी समस्याओं का प्राथमिकता के आधार पर तत्काल निराकरण सुनिश्चित किया जाए।

श्री पटवारी ने मांग की कि जिन अधिकारियों एवं संबंधित कॉलेज प्रबंधन की लापरवाही के कारण यह स्थिति उत्पन्न हुई है, उनके विरुद्ध सख्त कार्रवाई की जाए, ताकि भविष्य में किसी भी छात्रा को ऐसी परेशानी का सामना न करना पड़े। उन्होंने कहा कि कांग्रेस सदैव युवाओं, छात्रों और महिलाओं के अधिकारों की लड़ाई लड़ती रही है और आगे भी छात्राओं के न्याय के लिए हर स्तर पर संघर्ष जारी रहेगा।

इस अवसर पर, मध्य प्रदेश कांग्रेस कमेटी के प्रवक्ता श्री विवेक त्रिपाठी, एनएसयूआई प्रदेश उपाध्यक्ष श्री रवि परमार, एनएसयूआई के जिला अध्यक्ष श्री अक्षय तोमर, सहित पीड़ित छात्र छात्राएं उपस्थित रहे।

मुख्यमंत्री ने जबलपुर हादसे को बताया पीड़ादायक

मंत्रीगण और वरिष्ठ अधिकारियों को मौके पर पहुंचने के दिए निर्देश
दिवंगत नागरिकों के परिजन को 4-4 लाख की सहायता राशि
संकट की घड़ी में राज्य सरकार प्रभावितों के साथ खड़ी है, रेस्क्यू ऑपरेशन जारी था

भोपाल । मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने जबलपुर में तेज आंधी-तूफान के कारण बरगी डैम में हुए क्रूज हादसे पर गहरा दुख व्यक्त करते हुए कहा कि यह हादसा पीड़ादायक है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने लोक निर्माण मंत्री श्री राकेश सिंह और पर्यटन मंत्री श्री धर्मेंद्र सिंह लोधी को तत्काल प्रभावित क्षेत्र में पहुंचने के निर्देश दिए हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने जबलपुर संभाग प्रभारी एसीएस, एडीजी और स्थानीय जनप्रतिनिधियों को भी मौके पर पहुंचने के निर्देश दिए हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने इस हादसे में दिवंगत नागरिकों के परिजन को 4-4 लाख रुपए की आर्थिक सहायता स्वीकृत की है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि संकट की इस घड़ी में राज्य सरकार पूरी संवेदनशीलता के साथ प्रभावित परिवारों के साथ खड़ी है। प्रभावित व्यक्तियों और परिवारों को हर संभव सहायता सुनिश्चित की जा रही है।

लाइफ सेविंग जैकेट की व्यवस्था से बची जानें

स्थानीय प्रशासन की सहायता से रेस्क्यू फोर्स सक्रिय है। त्वरित बचाव कार्य से 15 नागरिकों को सकुशल बचा लिया गया है। जो नागरिक लापता हैं, उन्हें जल्द से जल्द ढूंढने का प्रयास किया जा रहा है।

प्राप्त जानकारी के अनुसार पर्यटन विभाग और क्रूज संचालन का प्रबंधन और पर्यटकों के भ्रमण का दायित्व संभालने वाले व्यक्तियों द्वारा लाइफ सेविंग जैकेट की व्यवस्था से जानें बचाने में सफलता मिली।

निरंतर चल रहा बचाव और राहत कार्य

उल्लेखनीय है कि जबलपुर में तेज आंधी तूफान के कारण हुए क्रूज हादसे के पश्चात 15 व्यक्तियों को सुरक्षित बचा लिया गया है। हादसे में चार व्यक्तियों की मृत्यु की पुष्टि हुई है। शेष व्यक्ति की तलाश और बचाव कार्य युद्ध स्तर पर चल रहा है। जबलपुर कलेक्टर और पुलिस अधीक्षक सहित एसडीआरएफ एवंअन्य बचाव दल घटना स्थल पर मौजूद रहकर राहत और बचाव कार्य में सक्रिय हैं।

उपलब्धि
सत्येंद्र कुमार जैन

अखंड प्रचण्ड पुरुषार्थी आशीष ऊषा अग्रवाल

भारतीय जनता पार्टी के मध्यप्रदेश के मीडिया प्रभारी के रूप में आशीष ऊषा अग्रवाल के तीन वर्ष का कार्यकाल भाजपा की स्वर्णिम उपलब्धियों से भरा हुआ है। भाजपा के संघनिष्ठ, संगठन निष्ठ, अखंड प्रचंड पुरुषार्थी, नवाचार करने वाले प्रदेश अध्यक्ष हेमंत खंडेलवाल ने अक्टूबर 2025 में अपनी प्रदेश कार्यसमिति के पदाधिकारियों की घोषणा मात्र तीन माह और कुछ दिनों के अल्प काल में कर, भाजपा संगठन को गढ़ने में कीर्तिमान स्थापित किया है। प्रदेश अध्यक्ष हेमंत खण्डेलवाल ने मीडिया प्रभारी आशीष ऊषा अग्रवाल की संगठन निष्ठा, ज्ञान शीलता, अखंड प्रचंड पुरुषार्थ, उत्कृष्ट मीडिया प्रबंधन, नवाचार, तकनीकी दक्षता, शालीनता, मिलनसारिता आदि अनेक गुणों को जौहरी की भांति हीरे की परख करते हुए पुन: प्रदेश मीडिया विभाग के प्रभारी की जिम्मेदारी सौंपी है। इस महती उत्तर दायित्व को कुशलतापूर्वक सम्पन्न करते हुए उन्होंने भी मीडिया विभाग की टीम का गठन कर लिया है।पारंगत प्रवक्ताओं की रत्न रूपी माला गूंथ ली है। आशीष अग्रवाल मीडिया विभाग में शुभंकर सिद्ध हुए हैं। विधानसभा 2023 के चुनाव में 163 सीट अर्जित होना, वोट शेयर भी लगभग 49 प्रतिशत अर्जित हुआ है। उपचुनाव में अमरवाड़ा और बुधनी में विजय श्री प्राप्त हुई है। लोकसभा चुनाव 2024 में प्रदेश की सभी 29 सीट पर महा विजय अर्जित हुई। वोट शेयर भी लगभग 60 प्रतिशत प्राप्त हुआ है। महती उपलब्धि है। भाजपा की इस प्रचंड, अद्वितीय सफलता में मीडिया विभाग ने भी समिधा अर्पित की है।मीडिया विभाग के योगदान का श्रेय मीडिया प्रभारी आशीष अग्रवाल को जाता है। राजनीतिक दल के लिए मीडिया विभाग माउथ पीस होता हैं। मुकुट होता है ।भाजपा के प्रवक्तागण, पार्टी की रीति-नीति, कार्यक्रमों योजनाओं, भाजपा शासन की उपलब्धियां को मीडिया के माध्यम से जनता के समक्ष विभिन्न चैनल्स पर होने वाली परिचर्चा में रखते हैं। आशीष अग्रवाल ने अपना सर्वस्व अर्पण करते हुए पार्टी के मीडिया विभाग का कुशल नेतृत्व किया है। संचालन किया है।मीडिया विभाग को समुन्नत किया है। भाजपा की प्रवक्ता टीम की धार को तेज किया है। उनके प्रबंधन में प्रतिदिन अनेक प्रेस नोट, फोटो, वीडियो तैयार कर, समय पूर्व मीडिया संस्थानों को प्रकाशन हेतु कुशलता से भेजे जा रहे हैं। प्रदेश भर में तीन वर्षों में लगभग ढाई हजार प्रेस कांफ्रेंस आयोजित की गई हैं। आशीष अग्रवाल के कुशल मीडिया प्रबंधन में केंद्रीय मंत्रियों, राष्ट्रीय पदाधिकारियों, प्रदेश सरकार के मंत्रियों, प्रदेश पदाधिकारियों ने सफ़लतापूर्वक मीडिया के सम्मुख विषय प्रस्तुत किया है।

मीडिया से पारिवारिक संबंध

आशीष अग्रवाल मीडिया संस्थानों से सतत सम्पर्क रखते हैं। पत्रकारिता जगत को परिवार मानते हुए वह मीडिया संस्थानों के स्वामियों, संपादकों, संवाददाताओं, कैमरामैन, युटयुबर्स के सुख-दुख में सदैव सम्मिलित होते हैं।यथोचित सहयोग करते हैं। भोपाल में एक पत्रकार साथी पर विपदा आई तो वह उनके समर्थन में चट्टान की तरह अटल हो गए और सहयोग किया। वह बिना किसी भेद भाव के समस्त पत्रकारों, बड़े चैनल, छोटे चैनल, वेब पोर्टल, यूट्युबर्स सबके लिए सहज उपलब्ध रहते हैं। प्रतिक्रिया, स्टेटमेंट देते हैं।

उनकी संगठन कुशलता को देखकर प्रदेश नेतृत्व ने एक देश एक चुनाव की प्रदेश स्तरीय टोली में भी सम्मिलित किया है।उन्होंने संगठन पर्व, सदस्यता अभियान में देवास जिले के बूथ कमेटियों, मंडलों के अध्यक्ष का चुनाव, जिला अध्यक्ष पद के चुनाव का उत्तरदायित्व, कुशलतापूर्वक संपन्न किया है।

भाजपा के दूरदर्शी, कुशल रणनीतिकार, नवाचारी प्रदेश अध्यक्ष हेमंत खंडेलवाल के मीडिया के सारथी आशीष ऊषा अग्रवाल नवाचार करते रहते हैं। वह कर्मयोगी है। अखंड प्रचण्ड पुरूषार्थी हैं।संगठन गढ़ने में निरंतरता, सातत्य रखना उनका विशेष गुण है। वह भाजपा संगठन के महारत्न हैं।उनका मीडिया प्रभारी के रूप में तीन वर्ष का सफलतम कार्यकाल संपन्न हुआ है। उनको आत्मीय बधाइयाँ। नित नए कीर्तिमान रचते जाएँ।

सोनम को पुलिस की गंभीर चूक के कारण कोर्ट से जमानत मिली

– पुलिस ने कई ऐसी धाराएं दर्ज की, जो अस्तित्व में ही नहीं

इंदौर। सोनम रघुवंशी को राजा रघुवंशी हत्याकांड में जमानत पुलिस की गंभीर चूक के चलते मिली। गिरफ्तारी के दस्तावेजों में गलत और गैर-मौजूद धाराएं दर्ज थीं। जबकि असली मर्डर चार्ज का उल्लेख ही नहीं था।

अदालत ने अपने आदेश में जो टिप्पणियां की, उन्होंने पूरे मामले को नया मोड़ दे दिया। जांच एजेंसियों की कार्यशैली पर भी बड़े सवाल खड़े कर दिए। अदालत ने अपने आदेश में सबसे बड़ी बात यह कही कि सोनम रघुवंशी की गिरफ्तारी से जुड़े सभी दस्तावेज गिरफ्तारी मेमो, निरीक्षण मेमो, अधिकारों की सूचना मेमो और केस डायरी इन सभी में जिस कानूनी धारा का उल्लेख किया गया, वह अस्तित्व में ही नहीं है। पुलिस के दस्तावेजों में भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) की धारा 403(1) लिखी गई थी। लेकिन, अदालत ने स्पष्ट किया कि ऐसी कोई धारा मौजूद ही नहीं है। अदालत ने इसे गंभीर लिपिकीय त्रुटि से भी आगे की बात माना है। जिस हत्या के आरोप में सोनम को गिरफ्तार किया गया, वह बीएनएसएस की धारा 103(1) के तहत बताया गया, लेकिन यह धारा भी उन दस्तावेजों में कहीं दर्ज नहीं थी, जो गिरफ्तारी के समय सोनम को दिखाए गए थे। कानून के मुताबिक, किसी भी आरोपी को यह बताया जाना जरूरी होता है, कि उसे किस अपराध और किस धारा के तहत गिरफ्तार किया जा रहा है। लेकिन, इस मामले में यही मूल प्रक्रिया पूरी तरह से नजरअंदाज होती दिखी।

पुलिस की गलती गंभीर

पुलिस ने अदालत में दलील दी कि यह सिर्फ एक लिपिकीय गलती थी। लेकिन, शिलांग की अदालत ने इस तर्क को सिरे से खारिज कर दिया। अदालत का मानना था कि यह कोई साधारण गलती नहीं है, बल्कि इससे आरोपी के मौलिक अधिकारों का हनन हुआ है। यदि किसी व्यक्ति को यह ही नहीं बताया गया कि उसे किस आधार पर गिरफ्तार किया जा रहा है, तो वह अपने बचाव का अधिकार कैसे इस्तेमाल करेगा! अदालत ने यहां तक कह दिया कि आरोपी को गिरफ्तारी के प्रभावी और वैध कारण नहीं नहीं बताए गए, इसलिए पूरी गिरफ्तारी प्रक्रिया ही अवैध मानी जाएगी।

गाजीपुर कोर्ट में वकील नहीं

अदालत ने एक और महत्वपूर्ण बिंदु पर ध्यान दिया. आदेश में कहा गया कि ऐसा कोई रिकॉर्ड नहीं है जिससे यह साबित हो सके कि सोनम को गिरफ्तारी के बाद वकील की की सुविधा दी गई थी। जब उसे पहली बार गाजीपुर अदालत में पेश किया गया, तब भी यह स्पष्ट नहीं था कि उसे कानूनी सलाह का अवसर मिला या नहीं।

हिंदी पत्रकारिता के द्विशताब्दी वर्ष पर तीन दिनी मीडिया महाकुंभ 8 मई से

'प्रणाम उदंत मार्तण्ड' का मुख्यमंत्री करेंगे शुभारंभ

भोपाल। हिंदी पत्रकारिता के 200 वर्ष पूर्ण होने के ऐतिहासिक अवसर पर माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय और वीर भारत न्यास की संयुक्त पहल पर 'प्रणाम! उदंत मार्तण्ड' शीर्षक से तीन दिवसीय राष्ट्रीय विमर्श 8, 9 और 10 मई 2026 को भारत भवन, भोपाल में होगा। इसका शुभारंभ 8 मई को प्रात: 10 :30 मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ.मोहन यादव करेंगे। विषय प्रवर्तन वरिष्ठ पत्रकार एवं पूर्व सूचना आयुक्त उदय माहूरकर करेंगे तथा अध्यक्षता आचार्य मिथिलेशनंदिनीशरण (अयोध्या) करेंगे। इस मीडिया कुंभ में देश के 9 राज्यों से विभिन्न भारतीय भाषाओं के 60 से अधिक पत्रकार, संपादक, लेखक, एंकर, विचारक, शिक्षाविद् और मीडिया विशेषज्ञ सहभागिता करेंगे। सत्रों में राज्यसभा के उपसभापति हरिवंश, अधिवक्ता एवं लेखक जे.साई दीपक, वरिष्ठ पत्रकार जे. नंदकुमार, विष्णुप्रकाश त्रिपाठी, नगमा सहर, सईद अंसारी, उदय सिन्हा, अमिताभ अग्निहोत्री, जयंती रंगनाथन, डॉ. ब्रजेश कुमार सिंह, प्रो. कृपाशंकर चौबे, प्रो.सोमा बंदोपाध्याय, विकास मिश्र, प्रफुल्ल केतकर, प्रत्यूष रंजन, डॉ. सी. जयशंकर बाबू, शैलेश पाण्डेय, हितेश शंकर, प्रतीक त्रिवेदी, राशिद किदवई, अनिल पाण्डेय, दिलीप शर्मा, शरद गुप्ता, सलमान रावी के अलावा 'गुल्लक' के लेखक दुर्गेश सिंह भी शामिल होगें।

चर्चा सत्रों में डिजिटल समय में टीवी पत्रकारिता, भारतीय पत्रकारिता का वैचारिक अधिष्ठान, भूमंडलीकरण के बाद का भारत और मीडिया, नए भारत का निर्माण, भारतीय भाषाओं का राष्ट्रीय स्वर जैसे विषयों पर चर्चा होगी। इस अवसर दो सौ वर्षों की पत्रकारिता की गौरवशाली यात्रा पर केंद्रित समाचार पत्रों की प्रदर्शनी भी लगेगी। साथ ही देश के आठ वरिष्ठ कार्टूनिस्ट अपना लाइव कार्टून शो करेंगे। विवि के कुलगुरु विजय मनोहर तिवारी ने बताया कि यह तीन दिवसीय राष्ट्रीय संविमर्श हिंदी पत्रकारिता की ऐतिहासिक यात्रा को स्मरण करते हुए उसके मूल्यों, चुनौतियों और संभावनाओं पर गंभीर विमर्श का मंच प्रदान करेगा। कार्यक्रम में भारत भवन,दत्तोपंत ठेंगड़ी शोध संस्थान, मप्र विज्ञान और प्रौद्योगिकी परिषद भी सहयोगी हैं।

दो किताबों का लोकार्पण

इस मौके पर मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव, विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों के अनुभवों पर केंद्रित पुस्तक 'माखन के लाल' और 'कार्टून कथा' का लोकार्पण करेंगे। विश्वविद्यालय के प्रायोगिक अखबारों 'विकल्प', 'पहल' और 'अभ्युदय' के विशेषांकों का भी विमोचन होगा। इसी तरह इलेक्ट्रानिक मीडिया के विद्यार्थियों द्वारा बनाई गई तीन डाक्यूमेंट्री भी इस मौके पर रिलीज होगी। समारोह में प्रतिदिन 7 बजे से सांस्कृतिक कार्यक्रम होंगे।

भारत केंद्रित तीन खास सत्र–
उत्तिष्ठ भारत : आचार्य मिथिलेशनंदिनी शरण,अयोध्या
नए भारत का निर्माण : हरिवंश
स्वाभिमानी भारत : जे.साईं दीपक

सिवनी हवाला कांड में हाईकोर्ट का बड़ा फैसला

● डीएसपी सहित 3 को राहत, एफआईआर होगी रद्द ● कोर्ट ने कहा- काल डिटेल से अपराध सिद्ध नहीं होता

जबलपुर (नप्र)। मध्यप्रदेश हाईकोर्ट से सिवनी हवाला कांड में फंसे डीएसपी समेत तीन आरोपियों को बड़ी राहत मिली है। अदालत ने ठोस साक्ष्य के अभाव में उनके खिलाफ दर्ज एफआईआर और आपराधिक कार्यवाही रद्द करने के आदेश दिए हैं। इस मामले में आरक्षक नीरज राजपूत की याचिका

खारिज कर दी गई है, जिससे उसे जेल में ही रहना होगा। राहत पाने वालों में डीएसपी पंकज मिश्रा, आरक्षक प्रमोद सोनी और जबलपुर के व्यापारी पंजू गिरी गोस्वामी शामिल हैं। इनकी ओर से दायर याचिका पर बुधवार को सुनवाई हुई। सुनवाई के दौरान आरोपियों की ओर से वरिष्ठ अधिवक्ता मनीष दत्त, प्रकाश उपाध्याय और अधिवक्ता अंकित सक्सेना ने पक्ष रखा।

2.96 करोड़ जब्त किए रिकॉर्ड में 1.45 करोड़ दिखाए– यह मामला 8 अक्टूबर 2025 को सिवनी में सामने आए हवाला कांड से जुड़ा है। उस समय डीएसपी पूजा पाण्डेय के नेतृत्व में पुलिस टीम ने सीलादेही चौक पर महाराष्ट्र के हवाला कारोबारी सोहनलाल परमार की कार से करीब 2.96 करोड़ रुपए नकद जब्त किए थे।

मौसम ने अचानक करवट ली

● भोपाल में बारिश, श्योपुर में डीजे शेड उड़ा, 15 घायल ● सतना-मैहर और उमरिया में आंधी के साथ पानी गिरा; आधे प्रदेश में अलर्ट

भोपाल (नप्र)। मध्य प्रदेश के कई इलाकों में भीषण गर्मी के बीच गुरुवार को मौसम ने अचानक करवट ली। भोपाल के कुछ इलाकों में दोपहर बाद हल्की बारिश हुई। सतना, मैहर और उमरिया में तेज हवा और गरज-चमक के साथ पानी गिरा। श्योपुर में आंधी से होटल में डीजे का शेड उड़ गया। इसमें करीब 15 लोग घायल हुए।

ग्वालियर में गर्मी से बचने के लिए इंजीनियर पंकज नरवरिया ने ई-स्कूटर पर कैनोपी से अस्थायी छत बना दी। मूल रूप से मुरैना निवासी पंकज ने बताया कि जब तापमान 43 डिग्री के पार पहुंच जाता है, तो सड़क पर चलना बेहद कठिन हो जाता है। स्कूटर चलाते समय सीधे सिर पर पड़ती धूप से हालत बिगड़ जाती है।

इस समस्या का समाधान निकालने के लिए उन्होंने ई-स्कूटर पर अस्थायी छत तैयार कर दी। इस कैनोपी को बनाने में पीवीसी पाइप, एल्बो और नट-बोल्ट का इस्तेमाल किया गया। ऊपर वाटरप्रूफ शीट लगाई, जो आमतौर पर ई-रिक्शा में उपयोग होती है। इसके नीचे साधारण कपड़ा लगाया, जिससे गर्मी का असर कम हो सके। पूरी संरचना को क्रॉस-रूफ डिजाइन में बनाया, जिससे यह हवा के दबाव को भी सहन कर सकती है।

इस ढांचे को स्कूटर की हेडलाइट के पास बॉडी से जोड़ा, ताकि चलते समय यह हिले नहीं। इस पूरे

जुगाड़ को तैयार करने में 1500 रुपए का खर्च आया।

27 जिलों में गरज-चमक और बारिश का अनुमान– आज जिन जिलों में गरज-चमक और बारिश होने का अनुमान है, उनमें ग्वालियर, मुरैना, भिंड, दतिया, शिवपुरी, गुना, अशोकनगर, विदिशा, राजगढ़, आगर-मालवा, नीमच, मंदसौर, सागर, निवाड़ी, टीकमगढ़, छतरपुर, पन्ना, रीवा, मऊगंज, सीधी, सिंगरौली, डिंडौरी, मंडला, बालाघाट, सिवनी, छिंदवाड़ा और पांढुर्णा शामिल हैं। भोपाल, इंदौर, उज्जैन, जबलपुर, कटनी, शहडोल, अनूपपुर, नरसिंहपुर, रायसेन, नर्मदापुरम, बैतूल, सीहोर, हरदा, बुरहानपुर, खंडवा, देवास, शाजापुर, खरगोन, बड़वानी, धार, रतलाम, झाबुआ और आलीराजपुर में गर्मी का दौर बना रहेगा। मौसम विभाग के अनुसार, प्रदेश के ऊपर एक साइक्लोनिक सर्कुलेशन (चक्रवात) एक्टिव है। वहीं, बीच में से ट्रफ गुजर रही है। इसकी वजह से मौसम बदला रहेगा।

सतना-मैहर में तेज हवा, गरज-चमक के साथ बूंदाबांदी– सतना में भीषण गर्मी के बीच गुरुवार सुबह मौसम में अचानक बदलाव हुआ। सुबह तेज हवा, गरज-चमक के साथ बूंदाबांदी हुई। लोगों को गर्मी से राहत मिली और मौसम खुशनुमा हो गया। मौसम विभाग के मुताबिक सतना समेत रीवा संभाग में बादल छाए रहेंगे और कहीं-कहीं हल्की से मध्यम बारिश हो सकती है। मैहर में भी तेज हवाओं के साथ जोरदार बारिश शुरू हुई। सुबह 8 बजे काले बादल छाए और दिन में अंधेरा सा माहौल बन गया। 43 डिग्री की तपिश से परेशान लोगों को राहत मिली। बारिश के साथ तेज गर्जना और हवाओं का असर भी दिखा। श्योपुर में देर रात आंधी में होटल राधिका विलास में छ्छ्र का शेड उड़ गया। इसमें करीब 15 लोग घायल हुए। उन्हें रात में अस्पताल में भर्ती कराया गया।

सीधी प्रदेश का सबसे गर्म शहर रहा– बुधवार को सीधी प्रदेश में सबसे गर्म रहा। अधिकतम तापमान 43.8 डिग्री तक पहुंच गया। रायसेन में 43.6 डिग्री, नरसिंहपुर-खंडवा में 43 डिग्री, सतना में 42.9 डिग्री, टीकमगढ़ में 42.6 डिग्री, नौगांव-रीवा में 42.5 डिग्री, श्योपुर, दमोह-मंडला में तापमान 42 डिग्री दर्ज किया गया।